मुहावरे

Idioms & Phrases

प्रसिद्ध हिंदी कहावतें, लोकोक्तियां एवं मुहावरे ~

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

प्रामाणिक मुहावरों एवं लोकोक्तियों
की एक अनुपम पुस्तक

A COLLECTION OF HINDI PROVERBS, PHRASES & IDIOMS

Compiled
By
Dr Ram Lakhan Prasad

2020

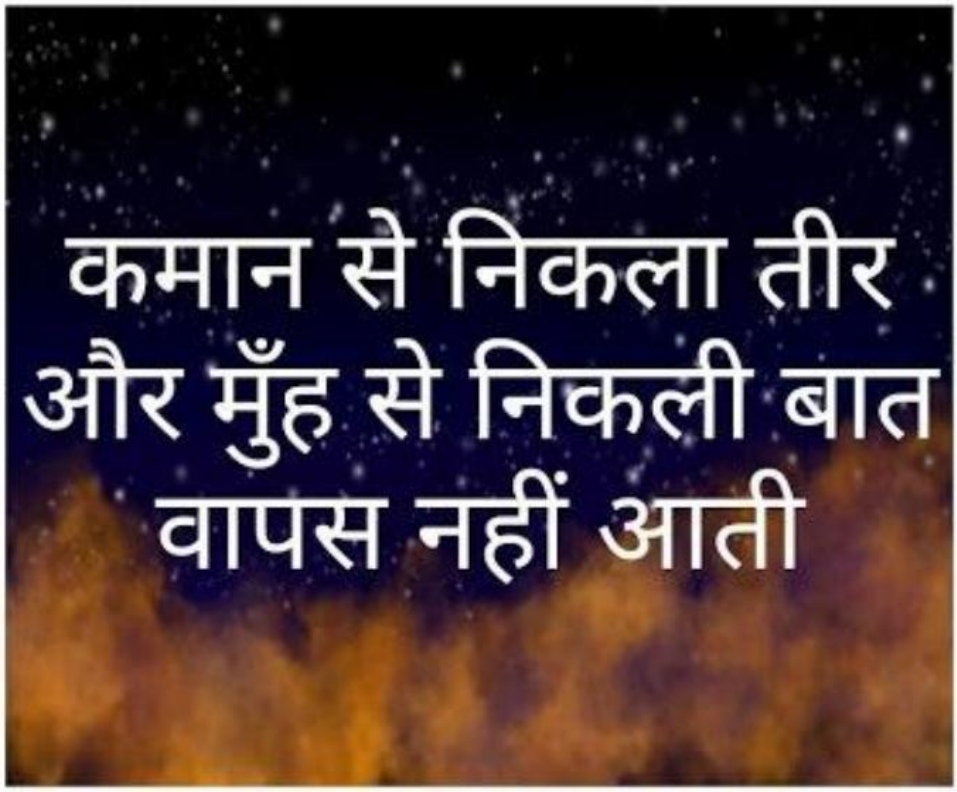

Prasad Publications
Bellbowrie
Qld Australia

srlprasad40@hotmail.com

Contents

Dedication
Bhumika – Prologue
Introduction
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 1
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 2
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 3
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 4
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 5
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 6
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 7
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 8
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 9
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 10
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 11
Famous Hindi Idioms, Proverbs and Phrases Part 12
Conclusion - Samapti
Epilogue - Upsanhaar

DEDICATION
समर्पण

To all my Teachers.who taught me the art and science of understanding my mother tongue Hindustani. The word teachers conjure a lot of things in my mind because I have been a teacher at various levels all my life. When I dedicate my book to all my teachers I immediately think of that time and all those experiences as I led and instructed young minds in their preparation for meeting life's challenges.

I would like to share some of my memories and thoughts about my teachers that helped shape my early life. A teacher is really a "substitute mother" in our early years. During the school months, more my hours were spent with my teachers than with my mother.

How excited I was when I went to my school and was warmly welcomed by my teachers and the school seemed so large. I had a serious problem with English and my teachers lovingly encouraged me to communicate with them in my mother tongue and I felt at home.

Most of my teachers in all my schools, colleges and universities were excellent and there is no exception to this confession.

I did have some very favorite teachers during my school days and they not only gave me the knowledge from the books but they also taught me a lot about life in general. They took me under their wings and taught me those important "facts of life."

Then came high school, and I had to make many adjustments, since I came from a rural school into large high school classes. I had many good teachers and did my best because of the inspiration and motivation that my teachers provided me.

Then I had two years of college before me, the requirement to be a rural school teacher in those days. It was then that I fully realized the effort and patience a teacher had to give to students. I really loved every day of learning to be a teacher, and I finally learned how to study. The teachers at the Teachers College were encouraging and also critical, as they critiqued our practice teaching. The suggestions they gave us were helpful as we approached the time we would be on our own, in our own school, motivating and teaching youthful minds, so they too would be ready to go out into the world with the education to serve and succeed.

I salute all former teachers and all present teachers as they help to mold young minds and encourage learning in all phases of our life. As a budding and amateur writer I salute all my teachers for giving me the greatest tool of writing in my first and second language Hindi and English.

Guru Govind Dono Khade Kaake Laagoon Paaye
Dhannye Hai Guru Aapki Jo Govind Diyo Bataaye

हिंदी कहावतें

भूमिका - PROLOGUE

इस प्रथम लेख को पाठक चाहे परिचय, प्रस्तावना या भूमिका के रूप में पढ़ें या इस को उपक्रम, उपक्षेप या प्रशस्ति माने पर यहाँ इस पुरे रचना की श्रीगणेश की जा रही है।

इस वर्ष की शुरुआत एक भयानक बीमारी को ले कर हुवा जिसे हम कोरोना वायरस के नाम से पुकारने लगे थे और हमारे देश के नेताओं ने इस से बचने के लिए कई कदम उठाने लगे थे। हम हो अपने घर ही में रहने की आदेश दिए और लोगों से संपर्क करना छोड़ दें। बस हम भी अपने घर में रहना और किसी गैर से संपर्क करना छोड़ दिए। तब जब कुछ और करने को नहीं रहा तो कुछ अनुसन्धान करने को मन में आया क्यूंकि मैं एक लेखक था। हमने अपने हिंदी भाषा के उपयोग करते समय बहुत से मुहावरें और कहावतों को काम में लाया था तो इन सब की एक संग्रह करने की इक्षा हुई और मैं अपने इस अनुसन्धान में जुट गया।

कह|वतें किसी भी देश के महान और अनुभवकारी व्यक्तियों के द्वारा किसी विषय पर कही हुई साधारण और वास्तविक बातें होती हैं। कहावतें आमतौर पर, जीवन के वास्तविक तथ्यों को साबित करती है। सभी कही हुई कहावतें आम धारणा पर आधारित सत्य और सलाह को प्रदर्शित करती है। महान व्यक्तित्वों के द्वारा कही हुई बातें मानवता के प्रयोग किए गए अनुभव बन जाते हैं।

कहावतें या मुहावरे अनुशासन, स्वास्थ्य, नैतिकता, समय, शिक्षा, स्वच्छता, बीमारी, ईमानदारी, ज्ञान आदि पर हो सकती है। हम यहाँ संसारभर के महान व्यक्तित्वों द्वारा कही हुई कहावतों या मुहावरों पर निबंधों की विभिन्न किस्में उपलब्ध करा रहे हैं। विद्यार्थियों को स्कूल या कॉलेज में इन कहावतों के अर्थ पर चर्चा करने, पैराग्राफ लिखने, निबंध लिखने के लिए शिक्षकों या परीक्षकों के द्वारा दिए जाते हैं। आप इनमें से कोई भी कहावत पर निबंध को अपनी आवश्यकता और जरुरत के अनुसार चुन सकते हैं।

भाषा को सशक्त एवं प्रवाहमयी बनाने के लिए लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। वार्तालाप के बीच में इनका प्रयोग

बहुत सहायक होता है। कभी-कभी तो मात्र मुहावरे अथवा लोकोक्तियों के कथन से ही बात बहुत अधिक स्पष्ट हो जाती है और वक्ता का उद्देश्य भी सिद्ध हो जाता है। इनके प्रयोग से हास्य, क्रोध, घृणा, प्रेम, ईर्ष्या आदि भावों को सफलतापूर्वक प्रकट किया जा सकता है।

लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग करने से भाषा में निम्नलिखित गुणों की वृद्धि होती है |

(1) वक्ता का आशय कम-से-कम शब्दों में स्पष्ट हो जाता है।
(2) वक्ता अपने हृदयस्थ भावों को कम-से-कम शब्दों में प्रभावपूर्ण ढंग से सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कर देता है।
(3) भाषा सबल, सशक्त एवं प्रभावोत्पादक बन जाती है।
(4) भाषा की व्यंजना-शक्ति का विकास होता है।

1) मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—'अभ्यास'। हिन्दी में यह शब्द रूढ़ हो गया है, जिसका अर्थ है—"लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य, जो किसी एक ही बोली या लिखी जानेवाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो। संक्षेप में ऐसा वाक्यांश, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, मुहावरा कहलाता है। इसे 'वाग्धारा' भी कहते हैं।

(2) लोकोक्ति-यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—'लोक' + 'उक्ति', अर्थात् किसी क्षेत्र-विशेष में कही हुई बात। इसके अन्तर्गत किसी कवि की प्रसिद्ध उक्ति भी आ जाती है। लोकोक्ति किसी प्रासंगिक घटना पर आधारित होती है। समाज के प्रबुद्ध साहित्यकारों, कवियों आदि द्वारा जब किसी प्रकार के लोक-अनुभवों को एक ही वाक्य में व्यक्त कर दिया जाता है तो उनको प्रयुक्त करना सुगम हो जाता है। ये वाक्य अथवा लोकोक्तियाँ (कहावतें, सूक्ति) गद्य एवं पद्य दोनों में ही देखने को मिलते हैं। इस प्रकार ऐसा वाक्य, कथन अथवा उक्ति, जो अपने विशिष्ट अर्थ के आधार पर संक्षेप में ही किसी सच्चाई को प्रकट कर सके, 'लोकोक्ति' अथवा 'कहावत' कही जाती है।

मुहावरे और लोकोक्ति में अन्तर-मुहावरा देखने में छोटा होता है, अर्थात् यह पूरे वाक्य का एक अंग-मात्र होता है, साथ ही इसमें लाक्षणिक अर्थ की प्रधानता होती है; जैसे—लाठी खाना। इस वाक्यांश में 'खाना' का लक्ष्यार्थ 'प्रहार सहना' है; क्योंकि लाठी खाने की चीज नहीं है, परन्तु लोकोक्ति में जिस अर्थ को प्रकट किया जाता है, वह लगभग पूर्ण होता है। उसमें अधूरापन नहीं होता; जैसे-उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। . इस उदाहरण में अर्थ का अधूरापन नहीं है, न वाक्य ही अधूरा है।

मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग साधारणत: देखा जाता है कि मुहावरों और लोकोक्तियों का 'अर्थ और वाक्य में प्रयोग' पूछे जाने पर छात्र उनका अर्थ तो बता देते हैं, परन्तु वाक्य में प्रयोग उचित प्रकार से नहीं कर पाते। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग में हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि हमारे वाक्य-प्रयोग से उनका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट हो जाए। सामान्य रूप से छात्र किसी भी मुहावरे आदि से पूर्व मैं, तुम या किसी व्यक्ति का नाम रखकर वाक्य को पूरा कर देते हैं। इस प्रकार का प्रयोग उचित व अर्थ को स्पष्ट करनेवाला नहीं होता |

इतना ही नहीं पर हमारे हिंदी भाषा में उपमा याने अलंकार की भी बहुतायत है जहाँ हम अपने लेख लिखते समय उन को और भी खूबसूरत बनाने के लिए उनकी तुलना किसी वैसे ही वास्तु से करते हैं जिनसे उनकी मिलाप होती है। जैसे उनकी सूरत चाँद सी लगती है और वो कोयल सी जाती अउ बोलती हैं या वो उल्लू जैसा व्यवहार करता है। या फिर हम सीधे उनको बही कह देतें है जो उन का स्वाभाव होता है। जैसे तुम उल्लू हो या तुम भीगी बिल्ली हो या वो छप्पन छुरी है। पर इन के लिए हम किसी और लेख में चर्चा करेंगे।

INTRODUCTION

The year 2020 began badly with the spread of COVID19 Corona Virus Pandemic and the leaders of our country took immediate action to fight the further spread of this pandemic and asked us to observe social distancing and stay locked down at home. So from early February I was locked down at home and had to find some useful activities to keep me busy and occupied. As a writer I thought the best thing would be to do some specific research and I began looking at the use of proverbs and idioms in Hindi. This was a difficult task but since I had used many such figures of speech in my writings I managed to get the collection sorted out gradually.

I have been using proverbs in my creative writing from my early days and this habit of mine brought an additional taste to my stories and other forms of writing. A proverb is a short pithy saying that is generally used by writers to hold and to embody a general truth. It becomes a popular saying in any language but in Hindi it is called kahavat or muhavarein. I went back to some of my creative writings of the past and collected them to compile my list for easy reference later.

Hindi, Fiji Hindi or Hindustani has been my first language and I have been using these in various forms and ways in my creative work ever since I

began writing. These amazing languages also have some interesting quotes and proverbs that are quite popular among the writers that use these proverbs to enrich their writing.

I have collected some of these popular quotes and proverbs in Hindi and compiled a list of them for my reference later. The list contains the proverb in Hindi and I have tried to give the meaning of some of these as well but there are a lot of these that may be easy to understand.

I have also included some proverbs and idioms that are used by the people of other countries and I hope these become useful when people are writing and creating their thoughts in short stories, novels and poems.

I must say that in doing my collection I found that a lot of proverbs and idioms have been repeated and this is good because the readers can see that all the possible aspects have been included. So let us begin the useful task of making the collection come alive.

The other figures of speeches that make our creativities in Hindi more interesting are similies and metaphors which have to be treated separately in another collection later.

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 1
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 1

बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद
Bandar kya jaane adark ka swaad
English: What does a monkey know of the taste of ginger?
Meaning:Someone who can't understand can't appreciate.
दूर के ढोल सुहावने
Door ke dhol suhavane
English: The drums sound better at a distance
Meaning: We tend to like the ones we don't have
घर की मुर्गी दाल बराबर
Ghar ki murgi, dal barabar
Meaning: Self possessions are always undermined and other's possessions seem better.
घर का भेदी लंका ढाए
Ghar ka bhedi, lanka dhayey.
Meaning: It is the insider who is dangerous and leaks secretive information to help out your enemies
पानी में रहकर मगर से बैर
Paani me rahkar magar se bair
EnglishLiving in water and being an enemy of the crocodile is not good.
English Equivalent: You can't live in Rome and fight with Pope.
जो गरजते हैं वो बरसते नहीं
Jo Garazte hain, wo baraste nahi
English: Those who make the most threats seldom do anything
जितनी चादर उतने ही पैर पसारो
Jitni chaadar utne hi pair pasaaro
English: Stretch your legs only till the size of your Counter pan.
Meaning: Limit your Spending To your Earnings

सौ सुनार की, एक लोहार की
Sau Sunaar ki, ek lohar ki
English: A single blow of a blacksmith is equal to a hundred blows of a goldsmith.
Meaning: Generally used to demonstrate the power of a strong person to a weak one.

जान है तो जहान है
Jaan hai to jahan hai
English: (If) there's life, then there's the world.
Meaning: Only if you are alive, things matter.

जंगल में मोर नाचा किस ने देखा?
Jungle me mor naacha kisne dekha
English: Who saw a peacock dance in the woods?
Meaning: Even a very good thing will have to be made public, to be acclaimed by people.

जिस की लाठी उस की भैंस
Jiski laathi uski bhains
English: Whoever owns the lathi (a huge cane / stick) eventually owns the buffalo.
Meaning: Might is right.

घर का भेदी लंका ढाये
Ghar ka bhedi lanka dhaye
English: The insider who knows all the secrets can bring down Lanka (a very prosperous city in Hindu mythology)
Meaning: Beware of the insider, for he can bring down the biggest setup (because of his insider knowledge).

अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत
Ab pachhtaye kya hot jab chidiya chug gayi khet
English: What is the use of crying when the birds ate the whole farm?
Meaning: There is no use crying over something that has already finished/happened.

नौ सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली
Nau sau choohe khake billi haz ko chali
English: After eating 900 hundred rats, the cat goes to Hajj.
Meaning: After committing many serious crimes showing a Saintly behavior or displaying fake goodness.

हाध कंगन को आरसी क्या
Haath Kangan Ko Aarsi Kya
Meaning: What is visible doesn't need evidence.

राई का पहाड़ मत बनाओ
Raai ka pahad mat banao
Meaning: Don't make the mountain out of the molehill.
अधजल गगरी छलकत जाय
adhajal gagri chhalakat jaaye
English: Half-filled pots splash more.
Meaning: those with little knowledge keep showing it. those who know all are calm/silent.
English equivalent: Empty vessels makes most noise.
अन्धों में काना राजा
andhon mein kana raja
English: a one-eyed man is king amongst blind men.
English equivalent: in the land of the blind, the one eyed man is king.
अंत भला तो सब भला
Ant Bhala to sab Bhala
English: if the end is good, everything is good.
English equivalent: all's well that ends well.
हाथों की लकीरों पर बराबर विश्वास नही करना चाहिए क्योंकि तक़दीर तो उनकी भी होती है जिनके हाथ नही होते
hathon ki lakiron par barabar vishvas nahi karna cahiye kyonki takkdir to unki bhi hoti hai jinake hath nahi hote
English: Your future does not depend on the lines of your hands, because people who do not have hands also have a future.
Meaning: it is better to do your work than to be superstitious and wait for the right time.
जब लक्ष्मी तिलक करती हो, तब मुंह धोने नहीं जाना चाहिए
Jab Lakshmi tilak karti ho, tab muh dhone nahi jana chahiye
English: When Lakshmi is doing tilaka, do not go to wash your face.
Meaning: When opportunity is at your door step, just grab it, or else you are going to lose the opportunity.
शक का इलाज तो हकीम लुक़्मान के पास भी नहीं था
Shak ka ilaaj to hakeem Luqmaan ke paas bhi nahi tha
English: Famous ancient doctor Luqmaan was not able to cure stupid thought.
Meaning: Doubt has no cure.
एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं
Ek myan mein do talavarein nahin samaati

English: Two swords do not fit into one scabbard.
English Equivalent: Two of a trade seldom agree.

नाच न जाने आंगन टेढ़ा

Naach na jane angan tedha
English: One who knows no dance claims that the stage is tilted.
Meaning: Said of a person without skill who blames his failure on other things.
English equivalent: A bad workman blames his tools.

घर की मुर्गी दाल बराबर

Ghar ki murgi dal barabar
Meaning: Self possessions are always undermined and other's possessions seem better.

तुम जियो हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार

Tum jiyo hajaron saal, saal ke din ho pachaas hajar
English: May you live a thousand years and may each year have a fifty thousand days.
Meaning: May you live a long life.

थोथा चना बाजे घना

Thotha chana baje ghana
Meaning: An empty vessel makes much noise, a person with lesser knowledge talks a lot.

लातों के भूत बातों से नहीं मानते!

Laton ke bhoot baaton se nahin maante!
Meaning: A person who can only understand the language of beatings cannot be counselled by words.

जैसे को तैसा!

Jaise ko taisa!
English equivalent: Tit for tat.

अपना वहि जो आवे काम्

Apna vahi jo aave kaam
Meaning: He is yours who helps you.
English equivalent: A friend in need is a friend indeed.

दान की बछिया के दांत नहीं गिने जाते

Daan ki bachhiya ke daant nahi gine jaate
Meaning: You cannot assess something got as donation
English equivalent: don't look a gift horse in the mouth.

आप हारे और बहू को मारे

ap hare aur bahU ko mare
Meaning: to take out ones frustration on someone else.

आ बैल मुझे मार
aa bael mujhe mar
English: inviting the bull to hit you
Meaning: to get yourself into trouble, usually used to describe an act of stupidity.

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर
aaya hai so jayega raja runk phakira
Meaning:Whoever is born will die, be it a king or a beggar.

इस हाथ दे उस हाथ ले
is hath de us hath le
Meaning: to make an even deal.

ऊंट कि मूह् मे जीरा
unt ke muh me jira
English: Cumin in a camel's mouth
Meaning: Used to refer to something insufficient in quantity.

ना उधो को देना ना माधो से लेना
na udho ko dena na maadho se lena
Meaning: to be disinterested in any matters

एक और एक ग्यारह होते है
ek aur ek gyarah hote hei
English: One and one make eleven
Meaning: Unity is strength.

किये धरे पे गू का लीपा
kiye dhare pe goo kaa leepaa
English: flush gold down the toilet
Meaning: to spoil something created with great efforts (usually by an over-enthusiastic creator)

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे
ulta chor kotval ko daten
English One who makes the error has no right to blame someone else
English Equivalent:The pot is calling the kettle black.

सीधी उंगली से घी नहीं निकलता
sidi ungali se ghee nahi nikale to ungali tedhi karni padti hai
English equivalent: By hook or by crook.
Meaning: to solve a problem by any means.

जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, भगवान उनके लिए खाई खोदता है
jo doosroon Ke Liye Gaddha khodta Hai, Bhagwan Uske Liye

Khai Khodta Hai
English equivalent: as you sow, so shall you reap

अंधों की दुनिया में आईना बेचना

andhon ki duniya mein aayina bechna
English: sell mirrors(spectacles) in the world of blind people
Meaning: doing the wrong thing according to time

जिनके घर शीशे के होते हैं, वे दूसरों पर पत्थर नहीं फ़ेंका करते

jin ke ghar sheshe ke hote hain wo dusro par pather phenka nahi karte.
English: those whose houses are made of glass / have windows do not throw stones at others

आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया

amdani attani aur karcha rupaiya.
English:Champagne tastes, beer wages "
income is half rupee and expenses are a full rupee

काला अक्षर भैंस बराबर

kala akshar bhains baraabar
English: black letters are equal to a water buffalo

पुरानी आदत मुशकिल से मरती है

purane aadhath mushkil se marthi hai
Meaning: old habits are hard to change

अंधेरे में तीर चलाना

Andhere mein teer chodna
Meaning: Doing something without thinking.

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 2

Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 2

1. A Figure among cyphers. – अंधों में काना राजा |
2. All is well that ends well. – अंत भला सो भला |
3. He that is warm thinks all are so. – आप सुखी तो जग सुखी |
4. Out of the frying pan into the fire. – आम से टपका बगल में अटका |
5. Self praise is no recommendation. – अपने मुहं मियां मिट्ठू मत बनो |
6. Haste makes waste/Hurry spoils curry. – आगे दौड़ पीछे चौड
7. Out of sight, out of mind. – आँख ओझल पहाड़ ओझल |
8. Necessity is the mother of invention. – आवश्यकता अविष्कार की जननी है |
9. A blindman is no judge of colours. – अन्धा क्या जाने बसंत की बहार |
10. Blood is thicker than water. – अपना अपना, पराया पराया |
11. Handsome is that handsome does. – अच्छा वही जो अच्छा कार्य करे |
12. Prevention is batter than cure. – इलाज से परहेज अच्छा |
13. A drop of the ocean. – ऊंट के मुहं में जीरा |
14. Example is better than precept. – उपदेश देने से स्वयं उपदेशों पर चलना बेहतर है |
15. It takes two make a row/quarrel. – एक हाथ से ताली नहीं बजती |
16. Two kill two birds with one stone. – एक पंथ दो काज |
17- Union is Strength. – एकता में बल है |

18. Silence is the best. – एक चुप सौ सुख |
19. A single sheep infects the whole flock. – एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है |
20. Much cry, little wool. – ऊँची दुकान फीका पकवान |
21. Godness never goes unrewarded. – कर भला हो भला |
22. Uneasy lies the head that wears the crown. – कोठी वाला रोये, छप्पर वाला सोये |
23. Two of a trade seldom agree. – कुत्ते का कुत्ता बैरी |
24. Familiarity breeds contempt. – कद्र खोद देता है रोज का आना जाना |
25. Practice makes a man perfect. – करत करत अभ्यास से जड्मुती होत सुजान |
26. An idle man's brain is a devil's workshop. – खाली बैठे सैतानी सूझे |
27. Much ado about nothing. – खोदा पहाड़ निकली चुहिया |
28. There is many a slip between the cup and the lip. – कानी के ब्याह में नौ सौ जोखिम |
29. What cannot be cured. must be endured. – गले पड़ा ढ़ोल बजाना ही पड़ता है |
30. To build castles in the air. – घर घोडा नकास मोल |
31. When the cat is away, the mice will play. – घर वाला घर नहीं हमें किसी का दर नहीं |
32. A nine day's wonder. – चार दिन की चांदनी फिर अँधेरी रात |
33. Birds of a feather flock together. – चोर-चोर मौसेरे भाई |
34. Nothing succeeds like success. – चलती का नाम गाढ़ी |
35. Forbidden fruit is sweet. – चोरी का गुड मीठा होता है |
36. As you sow, so shall you reap. – जैसा करोगे वैसा भरोगे |
37. Barking dog seldom bite. – जो गरजते हैं वो बरसते नहीं |
38. Evil gotten, evil spent. – जैसा आया वैसा गया |
39. Might is right. – जिसकी लाठी उसकी भैंस |

40. No one knows the weight of another's burben. – जाके पांव न फटी बुवाई सो क्या जाने पीर पराई |

41. Tit for tat. – जैसे तो तैसा |

42. Hope sustains life. – जब तक सांस तब तक आस |

43. The deeper the well, the sweeter the water. – जितना गुड डालोगे उतना ही मीठा होगा |

44. Where there is a flower, there is a thorn. – जहाँ फूल वहां काँटा |

45. So many man, so many minds. – जितने मुहं उतनी ही बात |

46. A liar has no legs to stand upon. – झूठ के पांव नही होते |

47. A drowning man catches at a straw. – डूबते को तिनके का सहारा |

48. Cowards die so many times before their death. – डरे सो मरे

49. Cut you coat according to your cloth. – तेते पावं पसारिये जेती लम्बी सौर |

50. Your visits are few and far between. – तुम तो ईद के चाँद हो गये |

51. You are chips of the same block. – तुम एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो |

52. Good health is above wealth. – तंदरुस्ती हजार नियामत|

53. An empty vessel sounds high. – थोथा चना बाजे घना |

54. A burnt child dreads the fire. – दूध का जला छाछ को भी फूंक कर पीता है |

55. Poverty breeds stife. – दरिद्रता कहल की जड़ है |

56. Let us see which way the wind blows. – तेल देखो तेल की धार देखो |

57. Mone makes the mare go. – दाम बनाये काम |

58. Distance lands charm the viewer. – दूर के ढ़ोल सुहावने |

59. There is something wrong at the bottom. – डाल में कुछ काला है |
60. Money begets money. – धन से धन कमाया जाता है |
61. A rolling stone gathers no mass. – धोबी का कुत्ता घर का न घाट का |
62. A bad workman quarrels with his tools. – नाच न जाने अगन टेढ़ा |
63. A bird in hand is batter than two in the bush. – नौ नकद न तेरह उधार |
64. A little knowledge is a dangerous thing. – नीम हकीम खतरे जान |
65. Do good and cast it into the river – नेकी कर दलिया में डाल
66. Adversity tries friends. – निर्धनता में मित्रों की पहचान होती है
67. It is hard to live in Rome and fight with the pope. – नदी में रहना और मगरमच्छ से बैर |
68. A light purse is a heavy curse. – निर्धन की पत्नी सबकी भाबी |
69. Every dark clouds has a silver lining. – निराशा में भी आसा की झलक होती है |
70. Ill got, ill spent. – पाप का धन प्रायश्चित में जाता है |
71. Think before you speak. – पहले तोलो फिर बोलो |
72. When God wills all winds bring rain. – परमात्मा देता है तो छप्पर फाड़ के देता है |
73. Curst cows have short horns. परमात्मा गंजे को नाख़ून न दे |
74. Charity begins at home. – पहले अपना फिर पराया |
75. A bas man is batter than a bad name. – बद अच्छा बदनाम बुरा |
76. Let bygones by bygones. – बीती सो बीती |
77. Make the best of every chance. – बहती गंगा में हाथ धोना |

78. Many a little makes a mickle. – बूंद-बूंद करके घड़ा भरता है
79. No pains, no gains. – बिना सेवा मेवा नहीं |
80. To cast pearls before swine. – बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद |
81. Too many cooks spoil the broth. – बहुत से जोगी मठ उजाड़
82. Better alone than in a bad company. – बुरी संगत से अकेला भला |
83. It is batter to wear out than to rust out. – बेकार से बेगार भली |
84. A nod to the wise and a rod to the foolish. – बुद्धिमान को संकेत और मुर्ख के लिए फटकार |
85. When the purse is full friends are plenty. – बनी के सभी मित्र बिगड़ी का कोई नहीं |
86. Time once passed/gone can never be recalled. – बीता हुआ समय कभी हाथ नहीं आता |
87. A ckosed mouth catches no fly. – बिना रोये माँ भी दूध नहीं देती |
88. Nip the evil in the bud. – बुराई को आरंभ में ही दबा दो |
89. Crying in wilderness. – भैंस के आगे बीन बजाना |
90. Something is better than nothing. – भागते चोर की लंगोटी ही सही |
91. Chance of fortune iss the lot of life. – भगवान की माया , कहीं धूप कहीं छाया |
92. A wolf in lamb's clothing. – मुख में राम ,बगल में छुरी |
93. Man process, God disposes. – मेरे मन में कुछ और है ,करता कें कुछ और |
94. Misfortunes never come alone/singly. – मुसीबत कभी अकेले नहीं आती |
95. Death keeps no calender. – म्रत्यु का कोई समय नहीं |
96. A constant guest is never welcome. – मेहमान एक या दो

दिन का होता है |

97. Man is known by the company he keeps. – मनुष्य अपनी संगति से पहचाना जाता है |

98. An open door tempts even a saint. – मुफ्त की शराब काजी को भी हलाल |

99. To err is human; to forgive divine. – मनुष्य गलती का पुतला है और भगवान का काम माफ़ करना है |

100. To make mountain of the mole hill. – राई का पर्वत बनाना |

101. Wolves may lose their teeth but not their nature.- रस्सी जल गई पर बल न गया |

102. Diamond cuts diamond. – लोहे को लोहा काटता है|

103. Riches have wings. – लक्ष्मी चंचला होती है |

104. Voice of the people is the voice of God. -लोगों की वाणी , इश्वर की वाणी |

105. A rod is the logic of fools. – लातों के भूत बातों से नहीं मानते |

106. Truth is always bitter. – सच्ची बात चुभती है |

107. It is very too late to mend. – सुबह का भुला यदि शाम को घर लोट आए तो उसे भूला नहीं कहते |

108. Slow and steady wins the race. – सहज पके सो मीठा होए |

109. Beauty need no brnaments. – सुन्दरता को आभूषण की आवस्यकता नहीं |

110. Truth fears no test. – सांच को आंच नहीं |

111. Everything looks pale to the jaundiced eye. – सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखाई देता है |

112. Time is a great healer. – समय सब घावों का मरहम है |

113. Coming events cast their shadows before. – होनहार बिरवान के होत चिकने पात |

114. Measure for measure. – हत्या के बदले फासीं |

115. Rome was not built in a day. – हथेली पर दही नहीं जमती |
116. To build casties in the air. – हवाई किले बनाना |
117. All that glitters is not gold. – हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और |
118. It's no use to cry over spilt milk. – अब पछताए होत क्या जब चिडिया चुग गयी खेत |
119. Every cock fights best on its own dunghill. – अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है |
120. Death's day is droom's day. – आप मरे जग प्रलय |
121. Out of sight, out of mind. – आँख ओझल पहाड़ ओझल
122. Do not put off till tomorrow. – आज का कार्य कल पर मत छोडो |
123. Better alone than in bad company. – कुसंगत से अकेला भला |
124. To carry coal to new castle. – उल्टे बांस बरेली को |
125. Sweep before your own door. – दुसरे के फटे में पांव नहीं देते |
126. Where there is well, there is a way. – जहाँ चाहा वहां राह |
127. Nearver the church farther from God. – दिये तले अँधेरा |
128. A guilty conscience needs no accuser. – चोर की दाढ़ी में तिनका |
129. Little drops make the ocean. – बूँद बूँद करके तालाब भरता है |
130. God helps those who help themeselve. – ईस्वर उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वेम करते हैं |
131. Love begets love and hate begets hate. – घर्णा से घ्रणा पैदा होती है |
132. A friends in need is a friend indeed. – मित्र वही है जो मुसीबत मैं काम आता है |
133. Nothing venture, nothing have. – बिना खतरे लाभ नहीं |

134. Honesty is the best policy. – इमानदारी अच्छी नीति है |
135. Spend and God will send. – शक्कर खोर को परमात्मा शक्कर देता है |
136. A good name is batter than riches. – नाम बड़ा या दाम |
137. If the sky falls, we shall catch larks. – न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी |
138. Evil pursuits bring bad reputation. – कोयले की दलाली में मुहं काला |
139. Time blunts the edge of grief. – समय सब घावों का इलाज है |
140. Death with friends is a festival. – दोस्तों के साथ नरक भी स्वर्ग है |
141. A prophet is seldom honoured in his own land. – घर को जोगी जोगडा बहार का जोगी सिद्ध |
142. Evil can bot prosper for ever. – सौ दिन चोर के एक दिन साध का |
143. Pride goeth before a fall. – घमंडी का मुहं काला |
144. east or west, home is the best. – अपने घर जैसा सुख कहीं भी नहीं |
145. He who hoards takes pains for others. – जोड़-जोड़ मर जाएँगे माल जमाई खायेगा |
146. Harping on the same string. – वही तुम वही तुम्हारा राग |
147. Virtue survives the grave. – नेकी करने के बाद याद आती है
148. Even walls have ears. – दीवार के भी कान होते हैं |
149. It is a far cry. – अभी दिल्ली दूर है |
150. Grapes are sour. – हाथ न पहुंचे थूकौडी |
151. Do unto others as you wish to be done by them. – दुसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो की वो तुमसे करें |
152. Brain is better than brawn Wisdom is better than Strength. – अक्ल बड़ी के भैंस |

153. Business is business. – व्यवसाय में लज्जा कैसी |

154. Every tide has its ebb, he who rises, must fall. – हर उन्नति के उपरांत अवनति |

155. A traitor is the worest enemy. – घर का भेदी लंका ढाए

156. When the two bulls fight, it is the grass that suffers. – गेहूं के साथ घुन भी पिस जाता है |

157. Let the sleeping dogs lie. – भिडों के छते को मत छेड़ो |

158. Greed is a curse. – लालच बुरी बात है |

159. Pen is mightier than the sword. – तलवार से कलम बड़ी है |

160. Money saved, is money earned. – जो बचाया सो कमाया |

161. Knowledge is power. – विद्या सबसे बड़ा धन है |

162. An upstart always grows haughty. – कुत्ते को घी हजम नहीं होता |

163. A talk of chalk and you talk of cheese. – सवाल गंदम जबाब चना |

164. A leopard can not change it's spots – लकीर का फकीर
Example: A person who does not accepts the change and wants to follow or is bound to follow the old ways and conventions, conservative, antediluvian, etc

165. Herd Race, Mob Mentality – भेड़ चाल

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 3
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 3

1. While In Rome Do As Romads Do – जहाँ का पीवे पानी, वहां की बोले वाणी
2. As You Sow, So Shall You Reap – जैसी करनी, वैसी भरनी
3. A thing is valued where it belongs. – जंगल में मोती की कदर नहीं होती
4. To The Good The World Appears Good – आप भला तो जग भला
5. An Empty Vessel Makes Much Noise – थोथा चना बाजे घना
6. Helath Is Wealth – तंदरुस्ती हजार नियामत है
7. No Pain, No Gain – काया को दुःख दिए बिना कोई काम नहीं सुधरता
8. Time Once Lost Cannot Be Regained – गया वक्त फिर हाथ नहीं आता
9. Society Moulds Man – खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग नही बदलता है
10. Union Is Strength- एक और एक ग्यारह होते हैं
11. Fools Praise Fools – गधे को गधा खुजलाता है
12. Many Heads Many Minds – अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग
13. Barking Dogs Seldom Bite – जो गरजते हैं सो बरसते नहीं

14. It Is No Use Building Castles In The Air – मन के लड्डुओं से भूक नहीं मिटती
15. Penny Wise Pound Foolish – गवांर गत्रा न दे, भेली दे
16. Give Loan, Enemy Own – उधार दीजे, दुश्मन कीजे
17. Birds Of a Feather Flock Together – एक थैली के चट्टे बट्टे
18. Where There is a Will, There Is a Way – जहाँ चाह-वहां राह
19. A Bad Carpenter Quarrels With Hi tool – नाच न जाने आँगन टेढा
20. Silence Is Half Consent – चुप माने, आधी मर्जी
21. An Empty Vessel Makes Much Noise – अधजल गगरी छलकत जाए
22. A Man Is a Slave to His Stomach – आदमी पेट का दास
23. The More Haste, The Worse Speed – आगे दौड़, पीछे छोड़
24. A Brunt Child Dreads The Fire./Once Bitten Twice Shy – दूध का जला छाछ फूंक-फूंक कर पीता है
25. A Honey tongue, a Heart Of Gall – मुहं में राम, बगल में छुरी
26. A Little Knowledge Is a Dangerous thing – नीम हकीम खतरा-ए-जान
27. All's Well That Ends Well – अंत भला तो सब भला
28. Style Makes The Man – कपडे देखर इज्जत मिलती है
29. One Nail Drivers Another – कांटे से कांटा निकलता है
30. Truth Lies At The Bootom of a Well – मोती गहरे पानी मैं होता है
31. There Is a Time For Everything – हर चीज का वक्त होता है
32. One Lie leads to Another – झूठ का अंत नहीं
33. It Takes All Sorts To Make The World – इ संसार में हर तरह के लोग होते हैं
34. It Takes To Make A Quarrel – ताली दोनों हाथों से बजती है
35. A Friend In Need Is a Friend Indeed – मित्र वही जी मुसीबत में काम आये

36. जिसकी लाठी उसकी भैंस – Might is right.
37. ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती – A fog cannot be dispelled by a fan.
38. थोथा चना बाजे घना / अधजल गगरी छलकत जाय – An empty vessel makes the most noise.
39. चोर – चोर मौसेरे भाई / एक ही थैली के चट्टे-बट्टे – Birds of same feather flock together.
40. कर बुरा तो होय बुरा / जैसी करनी वैसी भरनी – As you sow, so you shall reap.
The other similar ones are mentioned below:
आप भले तो जग भला – Good mind, good find.
एक हाथ से ताली नहीं बजती – It takes two to make a quarrel.
जो गरजते हैं वो बरसते नहीं – Barking dogs seldom bite.
लालच बुरी बला है – Avarice is root of all evils.
बोए पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय – Gather thistles & expect pickles.
डूबते को तिनके का सहारा – Drowning man catches at straw.
जैसा राजा वैसी प्रजा – As the king so are the subjects.
बगल में छुरी मुँह में राम राम – A honey tongue , a heart of gall.
सांच को आंच क्या – Pure gold does not fear the flame.
ऊंची दूकान फीके पकवान ./ नाम बड़े और दर्शन छोटे – Great cry little wool.
ऊँट के मुंह में जीरा – A drop in the Ocean
चार दिन की चांदनी फिर अँधेरी रात – A nine days wonder
भैंस के आगे बीन बजाना . / मूर्ख के आगे रोए अपने नैन खोए – Crying in wilderness
नेकी कर दरिया में डाल – Do good & cast in to the river.
लोहा लोहे को काटता है – Diamonds cut diamonds.
दूध का जला छाछ को भी फूंक – फूंक कर पीता है – A burnt child dreads the fire / Once bitten twice shy.
अन्धो में काना राजा – A figure among ciphers.

नीम हकीम ख़तरा-ए-जान – A little knowledge is a dangerous thing / Half knowledge is dangerous.
भेड़ की खाल में भेड़िया – A wolf in lamb's clothing.
अंत भला तो सब भला (यदि कार्य का अंत अच्छा हो जाये तो पूरा कार्य ही सफल हो जाता है) – All is well that ends well.
दूर के ढोल सुहावने लगते हैं – Grass on the other side always looks greener.
नाच न जाने आंगन टेढ़ – A bad workman blames his tools.
हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती – All that glitters is not gold.
जल में रहकर मगर से बैर – You cannot live in Rome and fight with the Pope.
जैसे को तैसा -Tit for tat.
अपना वहि जो आवे काम – A friend in need is a friend in deed.
दान की बछिया के दांत नहीं देखे जाते – Beggars Can't Be Choosers
उल्टा चोर कोतवाल को डांटे – The pot is calling the kettle black.
जैसा बोओगे वैसा काटोगे – As you sow, so shall you reap.
दाल में काला – More to it than meets the eye
आगे कुआँ पीछे खाई. / आसमान से गिरा खजूर में अटका – Between the devil and the deep sea.
नाम लिया और शैतान हाजिर – Speak/Think of the devil and the devil is here.
दुम दिखाकर भाग जाना – To turn tail / To show a clear pairs of heels.
जैसा देश वैसा भेष – When in Rome, do as Romans do.
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत – There is no use of crying over spilt milk.
घर का भेदी लंका ढाहे – A black sheep.
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद – Laying pearls before swine.
दूर के ढोल सुहावने – Things owned by other people look good

घर की मुर्गी दाल बराबर – familiarity breeds contempt
जो गरजते हैं वो बरसते नहीं – Barking dogs do not bite
जितनी चादर उतने ही पैर पसारो -Be satisfied which what is available
सौ सुनार की, एक लोहार की [एक महत्वपूर्ण कार्य कई अनर्गल कार्यों से ज्यादा सटीक होता है]- Hundred times more furious counter blast
जान है तो जहान है – If you have life, you have the world
जंगल में मोर नाचा किस ने देखा? – Wood In A Wilderness?
अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत – No benefit in crying over spilt milk.
नौ सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली [धूर्त व्यक्ति द्वारा धिकावे का किया गया अच्छा कार्य] – After eating 900 mice, the cat move on to a pilgrimage.
हाध कंगन को आरसी क्या / प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नही – Evidence doesn't require proof.
राई का पहाड़ मत बनाओ – Don't make a mountain out of a mole hill
अन्धों में काना राजा – A BIG FISH IN A LITTLE POND
जब लक्ष्मी तिलक करती हो, तब मुंह धोने नहीं जाना चाहिए – Never turn down an opportunity for wealth gains
शक का इलाज तो हकीम लुक़्मान के पास भी नहीं था – There is no cure for doubt
एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं – Two of a trade seldom agree
लातों के भूत बातों से नहीं मानते! – Persusion will not persuade fools
आप हारे और बहू को मारे – To blame others for your failures
आ बैल मुझे मार – To ask for trouble
आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर – He who is born will die one day, whether a king, a pauper or a hermit

इस हाथ दे उस हाथ ले – Early sow , early mow
ऊंट कि मूह् मे जीरा – A drop in the ocean
ना उधो को देना ना माधो से लेना – neither a borrower, nor a lender
एक और एक ग्यारह – Unity is strength
किये धरे पे गू का लीपा – flush gold down the toilet
अंधों की दुनिया में आईना बेचना – sell mirrors(spectacles) in the world of blind people
जिनके घर शीशे के होते हैं, वे दूसरों पर पत्थर नहीं फ़ेंका करते – Those who live in glass houses shouldn't throw stones at others
आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया – When expenditures exceed income
काला अक्षर भैंस बराबर – Illiterate
पुरानी आदत मुशकिल से मरती है – Old habits die hard
अंधेरे में तीर चलाना – Dance in the dark
अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग – Their Dpli their own passion
आँख का अन्धा नाम नैनसुख – Name nainsook blind eye
अँधेरे घर का उजाला – Darkness, the light of the house
ओखली में सिर दिया तो मूसली से क्या डर – Pestle in a mortar, then head of the fear
अपना उल्लू सीधा करना – Straighten your owl
ऊँची दुकान फीका पकवान – More of the show but less in quality
एक पंथ दो काज / आम के आम गुठलियों के दाम – Kill two birds with one stone / mango mango kernels prices
एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है : एक बुरा व्यक्ति सारे कुटुम्ब, समाज या साथियों को बुरा बनाता है – There is a fish pond messy: a bad person in the family, society or colleagues creates bad

काठ की हांडी एक बार ही चढ़ती है : छल-कपट से एक बार तो काम बन जाता है, पर सदा नहीं – Wooden pot climbs once: once the fraud becomes work, but not always
आस पराई जो तके जीवित ही मर जाए : जो दूसरों पर निर्भर रहता है वह जीवित रहते हुए भी मृतप्राय होता है – Tke alive who die around strange: who is dependent on others even while he was alive is dead
आए की खुशी न गए का गम (हर हालत में संतोष होना) – The gum was not happy: to be satisfied at all costs
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का – Out of greed if you run after two things, you will get none
न नो मन तेल होगा, न राधा नाचेगी – Putting almost impossible condition for some task.

अब और कहावतों और मुहावरों की चर्चा हम हिंदी में ही करेंगे।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना – (स्वयं अपनी प्रशंसा करना) – अच्छे आदमियों को अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनना शोभा नहीं देता ।
अक्ल का चरने जाना – (समझ का अभाव होना) – इतना भी समझ नहीं सके ,क्या अक्ल चरने गए है ?
अपना हाथ जगन्नाथ:- स्वंय के द्वारा किया गया कार्य ही महत्वपूर्ण होता है.
सर सलामत तो पगड़ी हजार:- व्यक्ति बाधाओं से मुक्त हो जाये तो अन्य वस्तुओं की परवाह नहीं करनी चाहिए.
अधजल गगरी छलकत जाय:- मुर्ख व्यक्ति ज्यादा चिल्लाता है, जबकि ज्ञानी शांत रहता है.
ना नों मन तेल होगा ना राधा नाचेगी:- कारण समाप्त हो जाने पर परिणाम स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे.
नांच ना जाने आँगन टेढा:-स्वंय की अकुशलता को दूसरों पर थोपना.
ओंखली में सर दिया तो मूसलो से क्या डरना:-जब आफत को निमंत्रण दे ही दिया है तो फिर डरने से क्या फायदा.

अन्धों में काना राजा:-मूर्खों में कम विद्वान भी श्रेष्ठ माना जाता है.
घर का भेदी लंका ढाए:- राजदार ही विनाश का कारण बनता है.
गरजने वाले बरसते नहीं हैं :- शक्तिहीन व्यक्ति निरर्थक चिल्लाता है. वह कुछ कर नहीं सकता है.
बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद :- मुर्ख एव असक्षम व्यक्ति किसी अच्छी एव मूल्यवान वस्तु का मोल नहीं जान सकता है.
अपने पैरों पर खड़ा होना – (स्वालंबी होना) – युवकों को अपने पैरों पर खड़े होने पर ही विवाह करना चाहिए ।
अक्ल का दुश्मन – (मूर्ख) – राम तुम मेरी बात क्यों नहीं मानते ,लगता है आजकल तुम अक्ल के दुश्मन हो गए हो ।
अपना उल्लू सीधा करना – (मतलब निकालना) – आजकल के नेता अपना अपना उल्लू सीधा करने के लिए ही लोगों को भड़काते है ।
आँखे खुलना – (सचेत होना) – ठोकर खाने के बाद ही बहुत से लोगों की आँखे खुलती है ।
आँख का तारा – (बहुत प्यारा) – आज्ञाकारी बच्चा माँ -बाप की आँखों का तारा होता है ।
आँखे दिखाना – (बहुत क्रोध करना) – राम से मैंने सच बातें कह दी , तो वह मुझे आँख दिखाने लगा ।
आसमान से बातें करना – (बहुत ऊँचा होना) – आजकल ऐसी ऐसी इमारते बनने लगी है ,जो आसमान से बातें करती है ।
ईंट से ईंट बजाना – (पूरी तरह से नष्ट करना) – राम चाहता था कि वह अपने शत्रु के घर की ईंट से ईंट बजा दे।
ईंट का जबाब पत्थर से देना – (जबरदस्त बदला लेना) – भारत अपने दुश्मनों को ईंट का जबाब पत्थर से देगा ।
ईद का चाँद होना – (बहुत दिनों बाद दिखाई देना) – राम ,तुम तो कभी दिखाई ही नहीं देते ,ऐसा लगता है कि तुम ईद के चाँद हो गए हो
उड़ती चिड़िया पहचानना – (रहस्य की बात दूर से जान लेना) – वह इतना अनुभवी है कि उसे उड़ती चिड़िया पहचानने में देर नहीं लगती ।

उन्नीस बीस का अंतर होना – (बहुत कम अंतर होना) – राम और श्याम की पहचान कर पाना बहुत कठिन है ,क्योंकि दोनों में उन्नीस बीस का ही अंतर है ।
उलटी गंगा बहाना – (अनहोनी हो जाना) – राम किसी से प्रेम से बात कर ले ,तो उलटी गंगा बह जाए ।
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना - (स्वयं अपनी प्रशंसा करना) - अच्छे आदमियों को अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनना शोभा नहीं देता ।
अक्ल का चरने जाना - (समझ का अभाव होना) - इतना भी समझ नहीं सके,क्या अक्ल चरने गए है ?
अपना हाथ जगन्नाथ:- स्वंय के द्वारा किया गया कार्य ही महत्वपूर्ण होता है.
सौ सुनार की एक लुहार की :- एक महत्वपूर्ण कार्य कई अनर्गल कार्यों से ज्यादा सटीक होता है.
चर गयी भेड़की, कुटिज गयी मोडी:-शक्तिवान द्वारा किये गए कार्य के लिए निर्दोष को सजा मिलना.
सौ चूहे खा के बिल्ली चली हज को :- धूर्त व्यक्ति द्वारा धिकावे का किया गया अच्छा कार्य
सर सलामत तो पगड़ी हजार:- व्यक्ति बाधाओं से मुक्त हो जाये तो अन्य वस्तुओं की परवाह नहीं करनी चाहिए.
अंत भला सब भला:- यदि कार्य का अंत अच्छा हो जाये तो पूरा कार्य ही सफल हो जाता है.
अधजल गगरी छलकत जाय:- मुर्ख व्यक्ति ज्यादा चिल्लाता है, जबकि ज्ञानी शांत रहता है.
ना नों मन तेल होगा ना राधा नाचेगी:- कारण समाप्त हो जाने पर परिणाम स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे.
नांच ना जाने आँगन टेढा:-स्वंय की अकुशलता को दूसरों पर थोपना.

ओंखली में सर दिया तो मूसलो से क्या डरना:-जब आफत को निमंत्रण दे ही दिया है तो फिर डरने से क्या फायदा.
अन्धों में काना राजा:-मूर्खों में कम विद्वान भी श्रेष्ठ माना जाता है.

घर का भेदी लंका ढाए:- राजदार ही विनाश का कारण बनता है.
गरजने वाले बरसते नहीं हैं :- शक्तिहीन व्यक्ति निरर्थक चिल्लाता है. वह कुछ कर नहीं सकता है.
बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद :- मुर्ख एव असक्षम व्यक्ति किसी अच्छी एव मूल्यवान वस्तु का मोल नहीं जान सकता है.
अपने पैरों पर खड़ा होना - (स्वालंबी होना) - युवकों को अपने पैरों पर खड़े होने पर ही विवाह करना चाहिए ।
अक्ल का दुश्मन - (मूर्ख) - राम तुम मेरी बात क्यों नहीं मानते ,लगता है आजकल तुम अक्ल के दुश्मन हो गए हो ।
अपना उल्लू सीधा करना - (मतलब निकालना) - आजकल के नेता अपना अपना उल्लू सीधा करने के लिए ही लोगों को भड़काते है ।
आँखे खुलना - (सचेत होना) - ठोकर खाने के बाद ही बहुत से लोगों की आँखे खुलती है ।
आँख का तारा - (बहुत प्यारा) - आज्ञाकारी बच्चा माँ -बाप की आँखों का तारा होता है ।
आँखे दिखाना - (बहुत क्रोध करना) - राम से मैंने सच बातें कह दी , तो वह मुझे आँख दिखाने लगा ।
आसमान से बातें करना - (बहुत ऊँचा होना) - आजकल ऐसी ऐसी इमारते बनने लगी है ,जो आसमान से बातें करती है ।
ईंट से ईंट बजाना - (पूरी तरह से नष्ट करना) - राम चाहता था कि वह अपने शत्रु के घर की ईंट से ईंट बजा दे।
ईंट का जबाब पत्थर से देना - (जबरदस्त बदला लेना) - भारत अपने दुश्मनों को ईंट का जबाब पत्थर से देगा ।
ईद का चाँद होना - (बहुत दिनों बाद दिखाई देना) - राम ,तुम तो कभी दिखाई ही नहीं देते ,ऐसा लगता है कि तुम ईद के चाँद हो गए हो ।

उड़ती चिड़िया पहचानना - (रहस्य की बात दूर से जान लेना) - वह इतना अनुभवी है कि उसे उड़ती चिड़िया पहचानने में देर नहीं लगती ।

उन्नीस बीस का अंतर होना - (बहुत कम अंतर होना) - राम और श्याम की पहचान कर पाना बहुत कठिन है ,क्योंकि दोनों में उन्नीस बीस का ही अंतर है ।
उलटी गंगा बहाना - (अनहोनी हो जाना) - राम किसी से प्रेम से बात कर ले ,तो उलटी गंगा बह जाए ।

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 4
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 4

सौ सोनार की, एक लोहार की (Hindi)
Translation: A single blow of a blacksmith is equal to a hundred blows of a goldsmith.
Meaning: Generally used to demonstrate the power of a strong person to a weak one.
जान है तो जहान है(Hindi)
Translation: (If) there's life, then there's the world.
Meaning: Only if you are alive, things matter.
जंगल में मोर नाचा किस ने देखा ? (Hindi)
Translation: Who saw a peacock dance in the woods?
Meaning: Even a very good thing will have to be made public, to be acclaimed by people.
जिस की लाठी उस की भैंस (Hindi)
Meaning: Whoever owns the *lathi* (a huge cane/stick) eventually owns the buffalo.
English equivalent: Might is right.
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥
Translation: One's mother and homeland are greater than even heaven.
घर का भेदी लंका ढाये (Hindi)
Translation: The insider who knows all the secrets can bring down Lanka (a very prosperous city in Hindu mythology)
Meaning: Beware of the insider, for he can bring down the biggest setup (because of his insider knowledge).
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद (Hindi)

Translation: What does a monkey know of the taste of ginger?
Meaning: Someone who can't understand can't appreciate (or) Someone without refined tastes cannot appreciate a fine thing.
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत (Hindi)
Translation: What is the use of crying when the birds ate the whole farm?
Meaning: There is no use crying over something that has already finished/happened.
नौ सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली (Hindi)
Translation: After eating 900 hundred rats, the cat goes to Hajj.
Meaning: After committing many serious crimes showing a Saintly behavior or displaying fake goodness.

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 5
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 5

अन्धों में काना राजा : मूर्ख मण्डली में थोड़ा पढ़ा-लिखा भी विद्वान् और ज्ञानी माना जाता है.

अक्ल बड़ी या भैंस : शारीरिक बल से बुद्धि बड़ी है.

अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग : सबका अलग-अलग रंग-ढंग होना.

अपनी करना पार उतरनी : अपने ही कर्मों का फल मिलता है.

अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत : समय बीत जाने पर पछताने का क्या लाभ.

आँख का अन्धा नाम नैनसुख : नाम अच्छा पर काम कुछ नहीं.

आगे कुआँ पीछे खाई : सब ओर विपत्ति.

आ बैल मुझे मार : जान-बूझकर आपत्ति मोल लेना।

आम खाने हैं या पेड़ गिनने : काम की बात करनी चाहिए, व्यर्थ की बातों से कोई लाभ नहीं.

अँधेरे घर का उजाला : घर का अकेला, लाड़ला और सुन्दर पुत्र.

ओखली में सिर दिया तो मूसली से क्या डर : जब कठिन काम के लिए

कमर कस ली तो कठिनाइयों से क्या डरना.

अपना उल्लू सीधा करना : अपना स्वार्थ सिद्ध करना.

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे : अपराधी अपने अपराध को स्वीकार करता नहीं, उल्टा पूछे वाले को धमकाता है.

ऊँची दुकान फीका पकवान : सज-धज बहुत, चीज खराब.

एक पंथ दो काज : आम के आम गुठलियों के दाम. एक कार्य से बहुत से कार्य सिद्ध होना.

एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है : एक बुरा व्यक्ति सारे कुटुम्ब, समाज या साथियों को बुरा बनाता है.

काठ की हांडी एक बार ही चढ़ती है : छल-कपट से एक बार तो काम बन जाता है, पर सदा नहीं.

आस पराई जो तके जीवित ही मर जाए : जो दूसरों पर निर्भर रहता है वह जीवित रहते हुए भी मृतप्राय होता है.

भगवान ने मनुष्य को हाथ-पांव दिए हैं जिससे वह अपना काम स्वयं कर ले। जो व्यक्ति दूसरे पर निर्भर रहता है उसका कहीं आदर नहीं होता. सच कहा है- 'आस पराई... जाए.'
आए की खुशी न गए का गम : हर हालत में संतोष होना.
वह बहुत सन्तोषी आदमी है. लाभ और हानि दोनों होने पर वह प्रसन्न रहता है. उसके ही जैसे लोगों के लिए कहा जाता है कि 'आये की खुशी... न गए का गम .'

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 6
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 6

इतनी सी जान गज भर की जबान : जब कोई लड़का या छोटा आदमी बहुत बढ़-चढ़ कर बातें करता .
Example: बच्चे को लम्बी-चौड़ी बातें करते देखकर हम सबको बड़ा आश्चर्य हुआ. रमेश ने कहा- 'इतनी सी जान... गज भर की जबान.'

इधर के रहे न उधर के रहे : दोनों तरफ से जाना, दो बातों में से किसी में भी सफल न होना.
Example: निर्मल ने गृहस्थ आश्रम छोड़कर संन्यास ले लिया, पर वह भी उससे नहीं निभा. उसे एक स्त्री से प्रेम हो गया. इस प्रकार वह न इधर का रहा न उधर का.

इधर कुआँ, उधर खाई : दो विपत्तियों के बीच में.
Example: बुराई है आज बोलने में, न बोलने में भी है बुराई. खड़ा हूँ ऐसी विकट जगह पर, इधर कुआँ है, उधर है खाई.
[ads-post]
इधर न उधर यह बला किधर : जब कोई न मरे न उसे आराम हो, तब कहते हैं.
Example : बेचारा साल भर से चारपाई पर पड़ा हुआ है. कोई दवा उसे लाभ नहीं पहुँचाती. सेवा करते-करते घर वाले ऊब गए हैं. उसका तो वही हाल है कि इधर न उधर... **यह बला** किधर.
इन तिलों में तेल नहीं निकलता : ऐसे कंजूसों से कुछ प्राप्ति नहीं होती.
Example: तुम यहाँ व्यर्थ आए हो. मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह तुम्हें कुछ न देंगे. इन तिलों... निकलता.

इब्तदाये इश्क है रोता है क्या आगे-आगे देखिए होता है क्या : अभी तो कार्य का आरंभ है, इसे ही देखकर घबरा गए, आगे देखो क्या होता है.

इस हाथ दे, उस हाथ ले : दान से बहुत पुण्य और लाभ होता है. Example: जो मनुष्य दीन-दुखियों को दान देता है, वह सदैव सम्पन्न रहता है, उसे कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं होता. इसीलिए कहा गया है कि इस हाथ दे, उस हाथ ले.

ईंट की लेनी पत्थर की देनी : कठोर बदला चुकाना, मुँह तोड़ जवाब देना.
Example: आज के जमाने में सीधा होना भी एक अभिशाप है. सीधे आदमी को लोग अनेक विशेषणों से विभूषित करते हैं, जैसे भोंदू, घोंघा बसन्त आदि, किन्तु जो व्यक्ति ईंट की लेनी पत्थर की देनी कहावत चरितार्थ करता है उससे लोग डरते रहते हैं.

ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया : भगवान की माया विचित्र है. संसार में कोई सुखी है तो कोई दु:खी, कोई धनी है तो कोई निर्धन. ईश्वर की माया समझ में नहीं आती. संसार में कोई सुन्दर है तो कोई कुरुप, कोई स्वस्थ है तो कोई रुग्ण, कोई करोड़पति है तो कोई अकिंचन. इसीलिए कहा गया है कि ईश्वर की माया... छाया

उत्तम को उत्तम मिले, मिले नीच को नीच : जो आदमी जैसा होता है उसको वैसा ही साथी भी मिल जाता है.
पर भाई, ऐसा रूप तो न आँखों देखा न कानों सुना. यह तो राजकन्या के योग्य ही है. इसमें उसने अनुचित क्या किया, क्योंकि जैसी सुन्दर वह है ऐसा ही यह भी है.

उत्तम खेती मध्यम बान, निकृष्ट चाकरी भीख निदान :
खेती सबसे श्रेष्ठ व्यवसाय है, व्यापार मध्यम है, नौकरी करना निकृष्ट

है और भीख माँगना सबसे बुरा है. यह बुद्धिमानों का महानुभूत सिद्धांत है कि 'उत्तम खेती...निदान' पर आज कल कृषिजीवी लोग ही अधिक दरिद्री पाए जाते हैं.

उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई : जब इज्जत ही नहीं है तो डर किसका?
जब लोगों ने मुझे बिरादरी से खारिज कर ही दिया है तो अब मैं खुले आम अंग्रेजी होटल में खाना खाऊँगा.

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे : अपना अपराध स्वीकार न करके पूछने वाले को डाँटना, फटकारना या दोषी ठहराना.
आज एक ग्राहक ने मेज पर से किताब उठा ली. उससे पूछा तो लगा शरीफ बनने और धौंस जमाने कि तुम मुझे चोरी लगाते हो.

उल्टे बाँस बरेली को : बरेली में बाँस बहुत पैदा होता है. इसी से उसको बाँस बरेली कहते हैं.
यहाँ से बाँस दूसरी जगह को भेजा जाता है. दूसरे स्थानों से वहाँ बाँस भेजना मूर्खता है. इसलिए इस कहावत का अर्थ है कि स्थिति के विपरीत काम करना, जहाँ जिस वस्तु की आवश्यकता न हो उसे वहाँ ले जाना।

उसी की जूती उसी का सर : किसी को उसी की युक्ति से बेवकूफ बनाना.
दो-एक बार धोखा खा के धोखेबाजों की हिकमतें सीख लो और कुछ अपनी ओर से जोड़कर 'उसी की जूती उसी का सिर' कर दिखाओ.

ऊँची दुकान फीका पकवान : जिसका नाम तो बहुत हो पर गुण कम हों.
नाम ही नाम है, गुण तो ऐसे-वैसे ही हैं. बस ऊँची दुकान फीका पकवान समझ लो.

ऊँट घोड़े बहे जाए गधा कहे कितना पानी :
जब किसी काम को शक्तिशाली लोग न कर सकें और कोई कमजोर आदमी उसे करना चाहे तब ऐसा कहते हैं.

ऊँच बिलैया ले गई, हाँ जी, हाँ जी कहना : जब कोई बड़ा आदमी कोई असम्भव बात भी कहे और दूसरा उसकी हामी भरे.

ऊधो का लेना न माधो का देना : जो अपने काम से काम रखता है, किसी के झगड़े में नहीं पड़ता उसके विषय में उक्ति.

एक अनार सौ बीमार : एक चीज के बहुत चाहने वाले.
जितने लोग हैं उनके उतनी तरह के काम हैं और एक बेचारी गाँधी टोपी है जिसे सबको पार लगाना है.
एक और एक ग्यारह होते हैं : मेल में बड़ी शक्ति होती है.
यदि तुम दोनों भाई मिलकर काम करोगे तो कोई तुम्हारा सामना न कर सकेगा.

एक कहो न दस सुनो : यदि हम किसी को भला-बुरा न कहेंगे तो दूसरे भी हमें कुछ न कहेंगे.

एक चुप हजार को हरावे : जो मनुष्य चुप अर्थात शान्त रहता है उससे हजार बोलने वाले हार मान लेते हैं.

एक तवे की रोटी क्या पतली क्या मोटी : एक कुटुम्ब के मनुष्यों में या एक पदार्थ के कभी भागों में बहुत कम अन्तर होता है.

एक तो करेला (कडुवा) दूसरे नीम चढ़ा : कटु या कुटिल स्वभाव वाले मनुष्य कुसंगति में पड़कर और बिगड़ जाते हैं.

एक ही थैले के चट्टे-बट्टे : एक ही प्रकार के लोग.लो और सुनो, सब एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं।

एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है : यदि किसी घर या समूह में एक व्यक्ति दुष्चरित्र होता है तो सारा घर या समूह बुरा या बदनाम हो जाता है।

एक लख पूत सवा लख नाती, ता रावण घर दिया न बाती : किसी अत्यंत ऐश्वर्यशाली व्यक्ति के पूर्ण विनाश हो जाने पर इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

ऐरा गैरा नत्थू खैरा : मामूली आदमी.कोई ऐरा गैरा नत्थू खैरा महल के अंदर नहीं जा सकता था।

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय : बूढ़े और बेकार मनुष्य को कोई भोजन और वस्त्र नहीं देता.कमाते-धमाते तो कुछ हैं नहीं, केवल खाने और बच्चों को डांटने-फटकारने से मतलब है...ऐसे बूढ़े...

ओछे की प्रीति, बालू की भीति : बालू की दीवार की भाँति ओछे लोगों का प्रेम अस्थायी होता है।

ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्य डर : कष्ट सहने पर उतारू होने पर कष्ट का डर नहीं रहता.बेचारी मिसेज बेदी ओखली में सिर रख चुकी थी। तब मूसलों से डर कर भी क्या कर लेतीं?

औंधी खोपड़ी उल्टा मत : मूर्ख का विचार उल्टा ही होता है।

औसर चूकी डोमनी, गावे ताल बेताल : जो मनुष्य अवसर से चूक जाता है, उसका काम बिगड़ जाता है और केवल पश्चाताप उसके हाथ आता है।

कपड़े फटे गरीबी आई : फटे कपड़े देखने से मालूम होता है कि यह मनुष्य गरीब है।

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर : समय पर एक-दूसरे की सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

कर ले सो काम, भज ले सो राम : जो कुछ करना हो उसे शीघ्र कर लेना चाहिए, उसमें आलस्य नहीं करना चाहिए।

करनी खास की, बात लाख की : जब कोई निकम्मा आदमी बढ़-चढ़कर बातें करता है।

ओस चाटे से प्यास नहीं बुझती : किसी को इतनी थोड़ी चीज़ मिलना कि उसकी तृप्ति न हो।

और बात खोटी सही दाल रोटी : संसार की सब चीज़ों में भोजन ही मुख्य है।

कंगाली में आटा गीला : मुसीबत पर मुसीबत आना.
पहले परीक्षा में फेल हुआ, फिर नौकरी छूटी और घर जाते समय रेल में संदूक रह गया। इस बार मेरे साथ बड़ी बुरी बीती, कंगाली में आटा गीला हो गया।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना : जो मिल जाए उसी पर संतुष्ट रहना चाहिए।

कमजोर की जोरू सबकी सरहज गरीब की जोरू सबकी भाभी: कमजोर आदमी को कोई गौरव नहीं प्रदान करना, सब उसकी स्त्री से हँसी-मजाक करते हैं।

करे कारिन्दा नाम बरियार का, लड़े सिपाही नाम सरदार का : छोटे लोग काम करते हैं परन्तु नाम उनके सरदार का होता है।

करनी न करतूत, लड़ने को मजबूत : जो व्यक्ति काम तो कुछ न करे पर लड़ने-झगड़ने में तेज हो।

खग जाने खग ही की भाषा : जो मनुष्य जिस स्थान या समाज में रहता है उसको उसी जगह या समाज के लोगों की बात समझ में आती है.

खर को गंग न्हवाइए तऊ न छोड़े छार : चाहे कितनी ही चेष्टा की जाय पर नीच की प्रकृति नहीं सुधरती.

खरादी का काठ काटे ही से कटता है : काम करने ही से समाप्त होता है या ऋण देने से ही चुकता है.

खरी मजूरी चोखा काम : नगद और अच्छी मजदूरी देने से काम अच्छा होता है.

खल की दवा पीठ की पूजा : दुष्ट लोग पीटने से ही ठीक रहते हैं.

खलक का हलक किसने बंद किया है : संसार के लोगों का मुँह कौन बंद कर सकता है?

खाइए मनभाता, पहनिए जगभाता : अपने को अच्छा लगे वह खाना खाना चाहिए और जो दूसरों को अच्छा लगे वह कपड़ा पहनना चाहिए.
[ads-post]

खाल ओढ़ाए सिंह की, स्यार सिंह नहीं होय : केवल रूप बदलने से गुण नहीं बदलता.

खाली दिमाग शैतान का घर : जो मनुष्य बेकार होता है उसे तरह-तरह की खुराफातें सूझती हैं.

खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे : लज्जित होकर बहुत क्रोध करना.

खुदा गंजे को नाखून न दे : अनधिकारी को कोई अधिकार नहीं मिलना चाहिए.

खूंटे के बल बछड़ा कूदे : किसी अन्य व्यक्ति, मालिक या मित्र के बल पर शेखी बघारना.

खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो : जब एक प्रकृति या रुचि के दो मनुष्य मिल जाते हैं तब उनका समय बड़े आनंद से व्यतीत होता है.

खूब मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी : दो मूर्खों का साथ, एक ही प्रकार के दो मनुष्यों का साथ.

खेत खाय गदहा मारा जाय जोलहा : जब अपराध एक व्यक्ति करे और दंड दूसरा पावे.
खेती खसम सेती : खेती या व्यापार में लाभ तभी होता है जब मालिक स्वयं उसकी देखरेख करे.

खेल खतम, पैसा हजम : सुखपूर्वक काम समाप्त हो जाने पर ऐसा कहते हैं.

खेल खिलाड़ी का, पैसा मदारी का : काम कर्मचारी करते हैं और नाम अफसर का होता है.

खोदा पहाड़ निकली चुहिया : बहुत परिश्रम करने पर थोड़ा लाभ होना.

खौरही कुतिया मखमली झूल : जब कोई कुरूप मनुष्य बहुत शौक-श्रृंगार करता है या सुन्दर वेश-भूषा धारण करता है, तब इस कहावत का प्रयोग होता है.

गंजी कबूतरी और महल में डेरा : किसी अयोग्य व्यक्ति के उच्च

पद प्राप्त करने पर ऐसा कहते हैं.

गंजी यार किसके, दम लगाए खिसके : स्वार्थी मनुष्य किसी के साथ नहीं होते, अपना मतलब सिद्ध होते ही वे चल देते हैं.

गगरी दाना सूत उताना : ओछा आदमी थोड़ा धन पाकर इतराने लगता है.

गढ़े कुम्हार भरे संसार : कुम्हार घड़ा बनाते हैं, सब लोग उससे पानी भरते हैं। एक आदमी की कृति से अनेक लोग लाभ उठाते हैं.

गधा मरे कुम्हार का, धोबिन सती होय : जब कोई आदमी किसी ऐसे काम में पड़ता है जिससे उसका कोई संबंध नहीं तब ऐसा कहा जाता है.

गधे के खिलाये न पुण्य न पाप : कृतघ्न के साथ नेकी करना व्यर्थ है.

गये थे रोजा छुड़ाने नमाज़ गले पड़ी : यदि कोई व्यक्ति कोई छोटा कष्ट दूर करने की चेष्टा करता है और उससे बड़े कष्ट में फंस जाता है तब कहते हैं.

गरीब की लुगाई, सबकी भौजाई : गरीब और सीधे आदमी को लोग प्राय: दबाया करते हैं.

कंगाली में गीला आटा : धन की कमी के समय जब पास से कुछ और चला जाता है.

गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त : जिसका काम हो वह अधिक परवाह न करे, किन्तु दूसरा आदमी अत्यधिक तत्परता दिखावे.

गाँठ में जमा रहे तो खातिर जमा : जिसके पास धन रहता है वह निश्चिंत रहता है.

गाँव के जोगी जोगना आन गाँव के सिद्ध : अपनी जन्मभूमि में किसी विद्वान या वीर की उतनी प्रतिष्ठा नहीं होती जितनी दूसरे स्थानों में होती है.

गाय गुण बछड़ा, पिता गुण घोड़, बहुत नहीं तो थोड़ै थोड़ : बच्चों पर माता-पिता का प्रभाव थोड़ा-बहुत अवश्य पड़ता है.

गाल बजाए हूँ करैं गौरीकन्त निहाल : जो व्यक्ति उदार होते हैं वे सहज में ही प्रसन्न हो जाते हैं.

गीदड़ की शामत आए तो गाँव की तरफ भागे : जब विपत्ति आने को होती है तब मनुष्य की बुद्धि विपरीत हो जाती है.

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 7
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 7

अमरीकी कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- हमारी पहचान हमेशा हमारे द्वारा छोड़ी गई उपलब्धियों से होती है। ~ अमरीकी कहावत
- सत्य को जानो, वह तुम्हें मुक्त करेगा। ~ अमरीकी कहावत
- 'अमेरीकी माने बेस बॉल का खेल, मा और ऐप्पल पाई'। ~ अमरीकी कहावत

इटली की कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- अगर आप कांटे फैलाते हैं तो नंगे पैर न चलें। ~ इटली की कहावत
- दूसरों के मामलों में न्याय हो यह सभी को भाता है। ~ इटली की कहावत
- ऐसे क़ानून व्यर्थ हैं जिनके अमल की व्यवस्था ही न हो। ~ इटली की कहावत
- सभी जो चर्च जाते हैं संत नहीं होते। ~ इटली की कहावत
- जो धीरे चलते हैं, वे दूर तक जाते हैं। ~ इटली की कहावत

तुर्की की कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- कड़े गोश्त के लिए - पैने दाँत। ~ तुर्की की कहावत

- अच्छे मित्र के साथ कोई भी मार्ग लंबा नहीं होता है। ~ तुर्की की कहावत
- अगर एक औरत मुझे पैसे के लिए कहा क्योंकि उसके पति ने उसे मुझसे शादी करने के लिए, लेकिन अपने पैसे दूर रखने के लिए कहा। ~ तुर्की की कहावत
- आज का अंडा आने वाले कल की मुर्गी से अधिक अच्छा होता है। ~ तुर्की लोकोक्ति
- आप ज्वाला से आग नहीं बुझा सकते। ~ तुर्की की कहावत

आयरिश कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- अच्छी हंसी और गहरी नींद डॉक्टरों की किताब में सबसे अच्छा उपचार हैं। ~ आयरिश कहावत
- अच्छे पत्ते जिसे मिले हों वह कभी नहीं कहेगा कि ग़लत बांटे हैं। ~ आयरिश की कहावत
- जो आपके साथ दूसरों की बातें करते हैं वे आपके बारे में भी बातें करेंगे। ~ आयरिश की कहावत

स्पेनी कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- जिस चीज़ को आप बदल नहीं सकते हैं, आपको उसे अवश्य ही सहन करना चाहिए। ~ स्पेनी कहावत
- अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए समय न निकालने वाला व्यक्ति ऐसे मिस्त्री के समान होता है तो अपने औजारों की ही देखभाल में व्यस्त रहता है ~ स्पेनी की कहावत
- सुन्दर नारी या तो मूर्ख होती नहीं या अभिमानी। ~ स्पेनी कहावत
- एक छंटाक ख़ून किलो भर दोस्ती से ज़्यादा क़ीमती होता है। ~ स्पेनी कहावत
- माल कैसा भी हो हांक हमेशा ऊंची लगानी चाहिए। ~ स्पेनी कहावत

- वह विजय महान होती है जो बिना रक्तपात के मिलती है। ~ स्पेनी लोकोक्ति
- जो वस्तु हमें पसंद होती है, जरुरी नहीं कि वह हमें मिल ही जाये,, इसलिए जो मिलता है, उसे ही पसंद कर लिया जाना चाहिए। ~ स्पेनी कहावत

चीनी कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- शिक्षक द्वार खोलते हैं; लेकिन प्रवेश आपको स्वयं ही करना होता है। ~ चीनी कहावत
- अध्यापक मार्गदर्शक का काम करते हैं, चलता आपको स्वयं पड़ता है। ~ चीनी कहावत
- अगर आप चाहते हैं कि किसी को मालूम न पड़े, तो ऐसा काम ही न करें। ~ चीनी कहावत
- यदि मुस्कान आपके स्वभाव में नहीं तो दुकानदारी के चक्कर में नहीं पड़े। ~ चीनी कहावत
- जो हाथ फूल बांटता है उस हाथ में भी सुगंध आ जाती है। ~ चीनी कहावत
- गुलाब के फूलों को देनेवाले हाथों से खुशबू चिपकी रहती है। ~ चीनी कहावत
- रईस जहां मौजूद होते हैं वहां की हवा की खुशबू बदल जाती है। ~ चीनी कहावत
- यदि आप ग़ुस्से के एक क्षण में धैर्य रखते हैं, तो आप दुःख के सौ दिन से बच जाएंगे। ~ चीनी कहावत
- ऐसा छात्र जो प्रश्न पूछता है, वह पांच मिनट के लिए मूर्ख रहता है, लेकिन जो पूछता ही नहीं है वह ज़िंदगी भर मूर्ख ही रहता है। ~ चीनी कहावत
- अच्छा क्या है, इसे सीखने के लिए एक हज़ार दिन भी अपर्याप्त हैं; लेकिन बुरा क्या है, यह सीखने के लिए एक घंटा भी ज़्यादा है। ~ चीनी कहावत

- उदार मन वाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं। संकीर्ण मन वाले केवल अंतर देखते हैं। ~ चीनी कहावत
- हजारों मील की यात्रा भी प्रथम चरण से ही आरम्भ होती है। ~ चीनी कहावत
- सबसे बड़ी यात्रा एक अकेले क़दम से शुरू होती है। ~ चीनी कहावत
- लंबे से लंबे सफर की शुरुआत एक छोटे से क़दम से होती है। ~ चीनी कहावत
- सबसे ऊंचे पहाड़ पर चढ़ने की शुरुआत एक छोटे से क़दम से होती है। ~ चीनी कहावत
- आहिस्ता चलने से नहीं, सिर्फ चुपचाप खड़े रहने से डर। ~ चीनी कहावत
- आप अपने पास दुखों को आने से नहीं रोक सकते हैं, लेकिन आप उन दुखों से घबराएं नहीं, ऐसा तो आप कर सकते हैं। ~ चीनी कहावत
- हज़ार मील की यात्रा एक छोटे क़दम से शुरू होती है। ~ चीनी कहावत
- मोती समुद्र के किनारे पर नहीं मिलते अगर आपको मोती पाना हैं तो आपके समुद्र में गोता लगाना होगा। ~ चीनी कहावत
- गज में क़ब्ज़ा करने से बेहतर है इंच में क़ब्ज़ा करना। ~ चीनी कहावत
- दूल्हे के लायक़ है, उसके हाथ की ताकत। ~ चीनी कहावत
- अगर तुम्हारे पास दो रुपये हो तो एक से रोटी ख़रीदो, दूसरे से फूल। रोटी तुम्हे ज़िन्दगी देगी और फूल तुम्हे जीने की कला सिखाएगा। ~ चीनी कहावत
- अपने दूर रहने वाले रिश्तेदारों से अधिक महत्व अपने पड़ोसियों को दीजिए। ~ चीनी कहावत
- केवल बातों से चांवल पकते नहीं। ~ चीनी कहावत
- यदि कोई व्यक्ति अच्छा जीवन जीता है तो वह भारत में पुनर्जन्म लेगा। ~ चीनी कहावत

- यदि आपको एक दिन की खुशी चाहिए, तो एक घंटा ज़्यादा सोएं। यदि एक हफ्ते की खुशी चाहिए, तो एक दिन पिकनिक पर अवश्य जाएं। यदि एक माह की खुशी चाहिए, तो अपने लोगों से मिलें। यदि एक साल के लिए खुशियां चाहिए, तो शादी कर लें और ज़िंदगी भर की खुशियां चाहिए तो किसी अनजान व्यक्ति की सहायता करें। ~ चीनी कहावत
- इंसान बूढ़ा होता है और मोती पीले पड़ते जाते हैं, इनसे बचने का कोई उपाय नहीं है। लेकिन इन परिस्थितियों के लिए तैयारी करने के उपाय तो हैं। ~ चीनी कहावत
- अंधेरे को कोसने से बेहतर है मोमबत्ती जलाओ। यानी कोसने से बेहतर करना है। ~ चीनी कहावत
- संसार में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जो सही शब्दों में मानव हैं- एक जो मर चुका है, दूसरा जिसका अभी जन्म नहीं हुआ है। ~ चीनी कहावत
- उदार मन वाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं, संकीर्ण मन वाले केवल अंतर देखते हैं। ~ चीनी कहावत
- चिड़ियां इसलिए नहीं गातीं कि उसके पास जवाब हैं। वे गाती हैं, क्योंकि उनके पास गीत हैं।' हालांकि हर गीत का अपना, अंचल जाति, संदर्भ और प्रभाव होता है। ~ चीनी कहावत
- लड़ाई के जो तीन सौ सतरह पैंतरे ज्ञानियों ने गिनवाये हैं, उनमें जो पैंतरा सबसे उपयोगी बताया गया है वो यह है कि भाग लो। ~ चीनी कहावत
- बालक माता-पिता की विरासत लेकर चलता है, सिर्फ आर्थिक की नहीं, उनका रवैया, चरित्र और आचरण भी। यानी उसकी सबसे पहली नींव माता-पिता रचते हैं। ~ चीनी कहावत
- एक तस्वीर हज़ार शब्दों से ज़्यादा अर्थवान होती है। ~ चीनी कहावत
- कुत्ते के ढेला मारने से पहले यह दरियाफ्त कर लेनी चाहिए कि इसका मालिक कौन है। ~ चीनी कहावत
- कौन जाने क्या अच्छा, क्या बुरा। ~ चीनी कहावत

- इंसान को कंघी तब मिलती है, जब वह गंजा हो जाता है। ~ चीनी कहावत
- सख्त शिक्षा से श्रेष्ठ शिष्य निकलते हैं। ~ चीनी कहावत
- ख़ाली गिलास को ही भरा जा सकता है, भरे हुए गिलास में कुछ भी डालो छलक ही पड़ेगा। ~ चीनी कहावत
- जब हाथी बीमार पड़ता है, तो नन्ही चीटियां भी उसे लात मार जाती हैं। ~ चीनी कहावत
- अगर आप किसी को एक दिन का खाना देते हो तो उसका पेट एक दिन के लिए ही भरता है, परन्तु अगर आप उसे कमाना सिखा देते हो तो फिर उसे किसी से खाना मांगना नहीं पड़ता। ~ चीनी कहावत
- बिना सद गुणों के सुन्दरता अभिशाप हैं। ~ चीनी कहावत
- अच्छे व्यक्ति व वस्तुओं की अच्छाई भविष्य में ही पता चलती है। ~ चीनी कहावत
- चीनी लोग हर उस चीज़ को खाते हैं जो उड़ती हो, चलती हो, या तैरती हो. सिवा हवाई जहाज, मोटर गाड़ी और कुर्सी मेज के। ~ चीनी कहावत
- जितनी सावधानी से छोटी मछली के व्यजंन पकाए जाते हैं, उतनी ही नजाकत से संभालना पड़ता है एक परिवार को। ~ चीनी कहावत
- दस हज़ार किताबों को पढने से बेहतर, दस हज़ार मील की यात्रा करना है। ~ चीनी कहावत
- पीड़ा अनिवार्य है, पर पीड़ित होना वैकल्पिक। ~ चीनी कहावत
- भोजन का स्वाद पहले आँखों से, फिर नासिका से और फिर मुंह से लिया जाना चाहिए। ~ चीनी कहावत

जापानी कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- यदि आप सात बार गिरते हैं, तो आठ बार खड़ें हों। ~ जापानी कहावत
- एक मीठा बोल सर्दी के तीन महीनों को ऊष्मा दे सकता है। ~ जापानी कहावत

- ज़िंदगी तो कुल एक पीढ़ी भर की होती है, पर नेक काम पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है। ~ जापानी कहावत
- असफलता से सफलता की शिक्षा मिलती है। ~ जापनी कहावत
- अगर कोई कर सकता हैं, तुम भी कर सकते हो, अगर कोई नहीं कर सकता तो तुम्हे जरुर करना हैं। ~ जापानी कहावत
- हंसी के साथ समय गुजारने का अर्थ है ईश्वर के साथ समय गुजारना। यानी हंसी में है सबसे बड़ी खुशी। ~ जापानी कहावत
- कर्म का ध्वनी शब्द से भी ऊंचा है। ~ जापानी कहावत
- हममें से कोई उतना स्मार्ट नहीं है, जितने हम सब हैं। ~ जापानी कहावत
- बन्दर पेड़ से ज़मीन पर गिर पड़े, फ़िर भी बन्दर ही रहता है, सो वह भी टार्जन की तरह। ~ जापानी कहावत

रूसी कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- हमारे आँगन में भी सूरज की धूप अवश्य आएगी। ~ रूसी कहावत
- हमारे पास जो है हम उसकी परवाह नहीं करते, लेकिन जब उसे खो देते हैं तो शोक मनाते हैं। ~ रूसी कहावत
- राहगीर ही रास्तों को जीतते हैं यानी यात्री ही राह को पार करते हैं। लेकिन किसी भी राह पर प्रारम्भिक क़दम उठाना हमेशा बड़ा कठिन होता है। ~ रूसी कहावत
- भगवान से प्रार्थना करो लेकिन नाव को किनारे तक खेना ना रोको" जीसका मतलब है कि भगवान पर भरोसा रखो लेकिन खुदकी मदद कि ज़िम्मेदारी सिर्फ आपकी है। ~ रूसी कहावत
- दो नए दोस्त एक पुराने दोस्त के बराबर होते हैं। ~ रूसी कहावत
- आप तब तक किसी को जान नहीं सकते, जब तक कि उसके साथ आपने एक पुड (वजन का नाप, जो तक़रीबन 16 किलो के बराबर होता है) नमक न खाया हो। ~ रूसी कहावत
- मुसीबत लोगों को एक दूसरे के क़रीब लाती है और उनमें एक दूसरे की सहायता करने के लिए भावनाएँ भर देती है। ~ रूसी कहावत

- सोती लोमड़ी सपने में मुर्गियाँ ही गिनती रहती है, क्योंकि जागते हुए वह इसी उधेड़बुन में लगी रहती है कि मुर्गियों को कैसे पकड़े। इसी तरह किसी काम या उलझन में होने पर व्यक्ति को उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते उस काम के सिवाय कुछ नहीं सूझता। ~ रूसी कहावत
- भिखारी की गठरी और जेल से कोई बच न पायेगा। ~ रूसी कहावत

फ़ारसी कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- परमेश्वर पर भरोसा रखिए, लेकिन अपने ऊंट को भी खूंटे से कस कर बांधे रखिए। ~ फ़ारसी कहावत
- 'हर सुख़न मौक़ा व हर नुक़्ता मुक़ामे दारद' यानी हर बात और बिंदु की अपनी एक जगह होती है। ~ फ़ारसी कहावत
- ख़ुशबू को इत्र बेचने वाले की सिफ़ारिश की ज़रूरत नहीं होती। ~ फ़ारसी कहावत
- जो तुम पर छोटा पत्थर फेंके तुम उस पर उससे बड़ा पत्थर फेंको। ~ फ़ारसी कहावत
- 'कूह बे कूह नेमी रसद अम्मा आदम बे आदम मी रसद' - एक पहाड़ दूसरे पहाड़ के हाथ नहीं लगता किंतु आदमी तो कभी न कभी आदमी के हाथ आवश्य लगता है। ~ फ़ारसी कहावत
- 'दाख़िलेमून ख़ुदेमून रो कुश्त व बीरूनेमून मर्दुम रो', जिसका तात्पर्य है, विदित रूप से किसी रोचक वस्तु को देख कर उससे ईर्ष्या करना किंतु उसे प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयों की अनदेखी कर देना। ~ फ़ारसी कहावत
- 'जहाँ-दीदा बिस्यार गोयद दरोग़' यानी अधिक दुनिया घूमा हुआ अधिक झूठ बोलता है। ~ फ़ारसी कहावत
- 'तुख़्मे मुर्ग़ दुज़्द, शुतुर दुज़्द मीशे' - मुर्ग़ी का अण्डा चुराने वाला अंततः ऊंट की चोरी करता है। ~ फ़ारसी कहावत
- सबकी मौत तो जश्न के क़ाबिल होती है। ~ फ़ारसी कहावत

- कोई भी जोड़ा लगातार तीस दिनों तक शहद और पानी का सेवन करता है तो उनकी वैवाहिक जीवन बहुत सुखमय और स्वर्गिक आनंद से भरा हुआ होता है। ~ फ़ारसी कहावत
- नक़ल के लिए भी कुछ अकल चाहिए। ~ फ़ारसी कहावत
- 'तन हम दाग, दाग़ सूद, पम्बा कुजा नेहाम' (पूरे बदन पर दाग़ ही दाग़ हैं) में कितनी जगह फाया रखूं। ~ फ़ारसी कहावत
- झूटे की याद दाश्त बहुत कमज़ोर होती है। ~ फ़ारसी कहावत
- 'हरचे आमद इमारते नो साख्त' मतलब कि जो भी आया उसने एक नई इमारत बनवाई। ~ फ़ारसी कहावत
- अवसर पर दुश्मन को न लगाया हुआ थप्पड़ अपने मुह पर लगता है। ~ फ़ारसी कहावत
- 'दरमियाने कअरे दरिया, तख्ताबंदम कर दइ, वाज मी गोई की दामन तर मकुन हुशियार वाश' अर्थात ये नाविक तूने मुझे नदी के बीच लाकर पटक दिया है और कहता है देख हुशियार रहना तेरा दामन गीला न होने पाए। ~ फ़ारसी कहावत
- जो ऊपर जाता है वह नीचे भी आता है। ~ फ़ारसी कहावत
- जबान के घाव सबसे गहरे होते हैं। ~ फ़ारसी कहावत
- 'सामने बैठे मूर्ख को कभी मूर्ख न कहो क्योंकि वह मूर्ख है' वरना मुसीबत लाजमी है। ~ फ़ारसी कहावत

अरबी कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- जो जानता नहीं कि वह जानता नही, वह मुर्ख है - उसे दुर भगाओ। जो जानता है कि वह जानता नही, वह सीधा है - उसे सिखाओ। जो जानता नहीं कि वह जानता है, वह सोया है - उसे जगाओ। जो जानता है कि वह जानता है, वह सयाना है - उसे गुरु बनाओ। ~ अरबी कहावत
- जिसके पास स्वास्थ्य है, उसके पास आशा है तथा जिसके पास आशा है, उसके पास सब कुछ है। ~ अरबी कहावत
- मौन के वृक्ष पार शान्ति का फल उगता है। ~ अरबी कहावत

- निश्चंत मन, भरी थैली से अच्छा है। ~ अरबी कहावत
- हरेक बर्तन से वही छलकता है जो कि उसमें होता है। ~ अरबी कहावत
- 'अल-मिस्ल फ़िल कलाम कल-मिल्ह फ़ित-तआम' यानी बातों में कहावतों या मुहावरों और उक्तियों की उतनी ही ज़रूरत है जितनी कि खाने में नमक की। ~ अरबी कहावत
- मनुष्य भूलों का अवतार है। ~ अरबी कहावत
- परमात्मा जब किसी आदमी को बनाता है, और दुनिया मे भेजने से पहले उसके कान में कहता है की, मैंने तुझसे अच्छा, तुझसे श्रेष्ट किसी को नहीं बनाया है और आदमी इसी मजाक के सहारे सारी ज़िन्दगी काट लेता है पर शिष्ठाचारवश किसी को कुछ नहीं कहता। पर शायद उसे पता नहीं की परमात्मा ने यही बात सबके कान में कही हुई है। ~ अरबी कहावत

अन्य देशों की कहावतें तथा लोकोक्तियाँ

- इतने मधुर न हों कि लोग आपको निगल लें, इतने कटु भी नहीं कि वे आपको उगल दें। ~ पश्तो की कहावत
- सम्पत्ति उस व्यक्ति की होती है जो इसका आनन्द लेता है न कि उस व्यक्ति को जो इसे अपने पास रखता है। ~ अफ़ग़ानी कहावत
- यदि आपको भगवान का भय है, तो आपको मनुष्यों से डर नहीं लगेगा। ~ अल्बानियाई कहावत
- ऐसा व्यक्ति जो अनुशासन के बिना जीवन जीता है वह सम्मान रहित मृत्यु मरता है। ~ आईसलैण्ड की कहावत
- हमेशा अच्छा नाम छोड़ कर जाएँ, हो सकता है आप वापस आएँ। ~ केन्या की लोकोक्ति
- आपके पास जो आटा है आप उसी की रोटी बना सकते है। ~ डेन्मार्क की लोकोक्ति
- अगर तुम घर में शान्ति चाहते हो, तो तुम्हें वह करना चाहिए जो गृहिणी चाहती है। ~ डेनिश कहावत

- उस्ताद वह नहीं जो आरंभ करता है, बल्कि वह है जो पूर्ण करता है। ~ स्लोवाकिया की कहावत
- विचार से कर्म की उत्पत्ति होती है, कर्म से आदत की उत्पत्ति होती है, आदत से चरित्र की उत्पत्ति होती है और चरित्र से आपके प्रारब्ध की उत्पत्ति होती है। ~ बौद्ध कहावत
- धर्महीन व्यक्ति बिना नकेल वाले घोड़े की तरह होता है। ~ लातिनी कहावत
- एक झूठ हज़ार सच्चाईयों का नाश कर देता है। ~ घाना की कहावत
- मित्रता आनन्द को दुगुना और दुःख को आधा कर देती है। ~ मिस्र की कहावत
- 'नोलोम तो येएलो इहीबूह', इसका अर्थ है, हम उन्हें बता रहे हैं कि यह बैल है, लेकिन वे फिर भी दूध दुहने की बात करते हैं। ~ मिस्र की कहावत
- बीमारी की कड़वाहट से व्यक्ति स्वास्थ्य की मधुरता समझ पाता है। ~ कैतालियाई कहावत
- विवाह एक ढका हुआ पकवान है। ~ स्विस कहावत
- बांट लेने से सुख दूना होता है और दु:ख आधा। ~ स्वीडन की कहावत
- साझा की गई खुशी दुगनी खुशी होती है; साझा किया गया दुख आधा होता है। ~ स्वीडन की कहावत
- शरीर के मामले में जो स्थान साबुन का है, वही आत्मा के संदर्भ में आंसू का। ~ यहूदी कहावत
- समझदार व्यक्ति एक शब्द सुनता हैं और दो शब्द समझता हैं। ~ यहुदी कहावत
- बुद्धिमान मनुष्य का एक दिन मूर्ख के जीवन भर के बराबर होता है। ~ एक कहावत
- हाथी अपने पैरों से भार अनुभव करता है और चींटी अपने पैरों से। सब अपनी-अपनी समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं। ~ हिंदी लोकोक्ति
- अपनी बुद्धि से साधु होना अच्छा, पराई बुद्धि से राजा होना अच्छा नहीं। ~ लोकोक्ति

- अनाचार और अत्याचार सिर झुकाकर वे ही सहन करते हैं जिनमें नैतिकता और चरित्र का अभाव हुआ करता है। ~ एक कहावत
- कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थायी रखती है और नए मित्र बनाती है। ~ एक कहावत
- उदार मन वाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं, संकीर्ण मन वाले केवल अंतर देखते हैं। ~ चीनी कहावत
- कृतज्ञता हृदय की स्मृति है। ~ अंग्रेजी कहावत
- ग़लती खुद अंधी होती है, लेकिन वह ऐसी संतान पैदा करती है जो देख सकती हे। ~ एक कहावत
- जब निष्कपट व्यवहार को दरवाज़े से बाहर ढकेल दिया जाता है तो चापलूसी बैठक में आ जाती है। ~ कहावत
- स्थिर रहनेवाले के पैर में दुर्भाग्य देवी, चलने वाले के पैर में श्री देवी। ~ तमिल लोकोक्ति
- जहां विनय है, वहां भय नहीं है। ~ कन्नड़ लोकोक्ति
- कांच का कटोरा, नेत्रों का जन, मोती और मन, यह एक बार टूटने पर पहले जैसी स्थिति नहीं होती, अत: पहले ही सावधानी बरतनी चाहिए। ~ लोकोक्ति
- वह विजय महान होती है जो बिना रक्तपात के मिलती है। ~ स्पेनी लोकोक्ति
- कोई भी तजुर्बा अच्छा है, बशर्ते उसकी ज़्यादा कीमत नहीं चुकानी पड़े। ~ एक कहावत
- डॉक्टर की कामयाबी को सूरज देखता है, लेकिन उसकी नाकामी को ज़मीन छिपा लेती है। ~ एक फ्रांसीसी कहावत
- अपनी बुद्धि से साधु होना अच्छा, पराई बुद्धि से राजा होना अच्छा नहीं। ~ लोकोक्ति
- वाणी मधुर हो तो सब वश में हो जाते हैं। वाणी कटु हो तो सब शत्रु हो जाते हैं। ~ हिंदी लोकोक्ति
- उदार मन वाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं, संकीर्ण मन वाले केवल अंतर देखते हैं। ~ एक चीनी कहावत

- वह विजय महान होती है जो बिना रक्तपात के मिलती है। ~ स्पेनी लोकोक्ति
- बीमारी से भी कहीं ज़्यादा खौफ डॉक्टर से खाया जाना चाहिए। ~ एक लैटिन कहावत
- डॉक्टर की कामयाबी को सूरज देखता है, लेकिन उसकी नाकामी को ज़मीन छिपा लेती है। ~ एक फ्रांसीसी कहावत
- अपनी बुद्धि से साधु होना अच्छा, पराई बुद्धि से राजा होना अच्छा नहीं है। ~ उड़िया लोकोक्ति
- कांच का कटोरा, नेत्रों का जल, मोती और मन, ये एक बार टूटने पर पहले जैसे नहीं रहते। अत: पहले ही सावधानी बरतनी चाहिए। ~ राजस्थानी लोकोक्ति
- दीपक के नीचे का अंधकार दूर करने के लिए दूसरा दीपक जलाने का प्रयत्न करना चाहिए। ~ संस्कृत लोकोक्ति
- आज का अंडा आने वाले कल की मुर्गी से अधिक अच्छा होता है। ~ तुर्की लोकोक्ति
- जिसका घर है, उसके लिए वह मथुरापुरी जैसा है। जिसका वर है, उसके लिए तो वह श्रीकृष्ण जैसा है। ~ उड़िया लोकोक्ति
- पराई बुद्धि से राजा होने से कहीं बेहतर है अपनी बुद्धि से पथिक होना। ~ लोकोक्ति
- सच्ची प्रशंसा जड़ थाम लेती है और फिर पनपने लगती है। ~ एक कहावत
- अच्छी तरह सोचना बुद्धिमत्ता है। अच्छी योजना बनाना उत्तम है। और अच्छी तरह काम को पूरा करना सबसे अच्छी बुद्धिमत्ता है। ~ फारसी कहावत
- तलवार का घाव भर जाता है, पर अपमान का घाव कभी नहीं भरता। ~ एक कहावत
- आपके पास पचास मित्र हैं, यह अधिक नहीं है। आपके पास एक शत्रु है, यह बहुत अधिक है। ~ एक कहावत
- ज्ञान अनुभव की बेटी है। ~ कहावत |

@@@

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 8

Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 8

गुड़ खाय गुलगुले से परहेज : कोई बड़ी बुराई करना और छोटी से बचना।

गुड़ न दे तो गुड़ की-सी बात तो करे : किसी को चाहे कुछ न दे, पर उससे मीठी बात तो करे।

गुड़ होगा तो मक्खियाँ भी आएँगी : यदि पास में धन होगा तो साथी या खाने वाले भी पास आएँगे।

गुरु गुड़ ही रहा चेला शक्कर हो गया : जब शिष्य गुरु से बढ़ जाता है तब ऐसा कहते हैं।

गुरु से कपट मित्र से चोरी या हो निर्धन या हो कोढ़ी : गुरु से कपट नहीं करना चाहिए और मित्र से चोरी नहीं करना चाहिए, जो मनुष्य ऐसा करता है उसकी बड़ी दुर्गति होती है।

गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है : अपराधियों के साथ निरपराध व्यक्ति भी दण्ड पाते हैं।

गैर का सिर कद्दू बराबर : दूसरे की विपत्ति को कोई नहीं समझता।
गों निकली, आँख बदली : स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर लोगों की आँख बदल जाती हैं, कृतघ्न मनुष्यों के विषय में ऐसा कहा जाता है।

बगल में छोरा शहर में ढिंढोरा : पास में रहने पर भी किसी वस्तु या व्यक्ति का दूर-दूर ढूँढ़ा जाना।

गौरी रूठेगी अपना सोहाग लेगी, भाग तो न लेगी : जब कोई आदमी किसी नौकर को छुड़ा देने की धमकी देता है तब नौकर अपनी स्वाधीनता प्रकट करने के लिए ऐसा कहता है।

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती : कोई भी व्यक्ति अपनी चीज को बुरी नहीं कहता।

घड़ीभर की बेशरमी और दिनभर का आराम : संकोच करने की अपेक्षा साफ-साफ कहना अच्छा होता है।

घड़ी में तोला घड़ी में माशा : जो जरा-सी बात पर खुश और जरा-सी बात पर नाराज हो जाय ऐसे अस्थिर चित्त व्यक्ति के कहा जाता है।

घर आई लक्ष्मी को लात नहीं मारते : मिलते हुए धन या वृत्ति का त्याग नहीं करना चाहिए।

घर आए कुत्ते को भी नहीं निकालते : अपने घर आने पर कोई बुरे आदमी को भी नहीं दुतकारता।

घर आए नाग न पूजिए, बामी पूजन जाय : किसी निकटस्थ तपस्वी सन्त की पूजा न करके किसी साधारण साधु का आदर-सत्कार करना।

घर कर सत्तर बला सिर कर : ब्याह करने और घर बनबाने में बहुत-से झंझटों का सामना करना पड़ता है।

घर का भेदी लंका ढाये : आपसी फूट से सर्वनाश हो जाता है।

घर की मुर्गी दाल बराबर : घर की वस्तु या व्यक्ति का उचित आदर नहीं होता।

घर घर मटियारे चूल्हे : सब लोगों में कुछ न कुछ बुराइयाँ होती हैं, सब लोगों को कुछ न कुछ कष्ट होता है।

घर में नहीं दाने, बुढ़िया चली भुनाने : झूठे दिखावे पर उक्ति।

घायल की गति घायल जाने : दुखी व्यक्ति की हालत दुखी ही जानता है।

घी खाया बाप ने सूंघो मेरा हाथ : दूसरों की कीर्ति पर डींग मारने वालों पर उक्ति।

घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या : मेहनताना या किसी चीज का दाम मांगने में संकोच नहीं करना चाहिए।

चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे : पहले कुछ रुपया पैसा खर्च करोगे या पहले कुछ खिलाओगे तभी काम हो सकेगा।

चट मँगनी पट ब्याह : शीघ्रतापूर्वक मंगनी और ब्याह कर देना, जल्दी से अपना काम पूरा कर देने पर उक्ति।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय : बहुत अधिक कंजूसी करने पर उचित।

चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात : थोड़े दिनों के लिए सुख तथा आमोद-प्रमोद और फिर दु:ख।

चाह है तो राह भी : जब किसी काम के करने की इच्छा होती है तो उसकी युक्ति भी निकल आती है।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता : बेशर्म आदमी पर किसी बात का असर नहीं होता।

चिकने मुँह सब चूमते हैं : सभी लोग बड़े और धनी आदमियों की हाँ में हाँ मिलाते हैं।

चित भी मेरी, पट भी मेरी : हर तरह से अपना लाभ चाहने पर उक्ति।

चिराग तले अँधेरा : जहाँ पर विशेष विचार, न्याय या योग्यता आदि की आशा हो वहाँ पर यदि कुविचार, अन्याय या अयोग्यता पाई जाए।

बेवकूफ मर गए औलाद छोड़ गए : जब कोई बहुत मूर्खता का काम करता है तब उसके लिए ऐसा कहते हैं।

चूल्हे में जाय : नष्ट हो जाय। उपेक्षा और तिरस्कारसूचक शाप जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं।

चोर उचक्का चौधरी, कुटनी भई प्रधान : जब नीच और दुष्ट मनुष्यों के हाथ में अधिकार होता है।

चोर की दाढ़ी में तिनका : यदि किसी मनुष्य में कोई बुराई हो और कोई उसके सामने उस बुराई की निंदा करे, तो वह यह समझेगा कि मेरी ही बुराई कर रहा है, वास्तविक अपराधी जरा-जरा-सी बात पर अपने ऊपर संदेह करके दूसरों से उसका प्रतिवाद करता है।

चोर-चोर मौसेरे भाई : एक व्यवसाय या स्वभाव वालों में जल्द मेल-जोल हो जाता है।

चोरी और सीनाजोरी : अपराध करना और जबरदस्ती
दिखाना, अपराधी का अपने को निरपराध सिद्ध करना और अपराध को दूसरे के सिर मढ़ना।
चौबे गए छब्बे होने दुबे रह गए : यदि लाभ के लिए कोई काम किया जाय परन्तु उल्टे उसमें हानि हो।

घायल की गति घायल जाने : दुखी व्यक्ति की हालत दुखी ही जानता है।

घी खाया बाप ने सूंघो मेरा हाथ : दूसरों की कीर्ति पर डींग मारने वालों पर उक्ति।

घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या : मेहनताना या किसी चीज का दाम मांगने में संकोच नहीं करना चाहिए

चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे : पहले कुछ रुपया पैसा खर्च करोगे या पहले कुछ खिलाओगे तभी काम हो सकेगा।

चट मँगनी पट ब्याह : शीघ्रतापूर्वक मंगनी और ब्याह कर देना, जल्दी से अपना काम पूरा कर देने पर उक्ति।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय : बहुत अधिक कंजूसी करने पर उचित।

चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात : थोड़े दिनों के लिए सुख तथा आमोद-प्रमोद और फिर दु:ख।

चाह है तो राह भी : जब किसी काम के करने की इच्छा होती है तो उसकी युक्ति भी निकल आती है।

चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता : बेशर्म आदमी पर किसी बात का असर नहीं होता।

चिकने मुँह सब चूमते हैं : सभी लोग बड़े और धनी आदमियों की हाँ में हाँ मिलाते हैं।
चित भी मेरी, पट भी मेरी : हर तरह से अपना लाभ चाहने पर उक्ति।

चिराग तले अँधेरा : जहाँ पर विशेष विचार, न्याय या योग्यता आदि

की आशा हो वहाँ पर यदि कुविचार, अन्याय या अयोग्यता पाई जाए।

बेवकूफ मर गए औलाद छोड़ गए : जब कोई बहुत मूर्खता का काम करता है तब उसके लिए ऐसा कहते हैं।

चूल्हे में जाय : नष्ट हो जाय। उपेक्षा और तिरस्कारसूचक शाप जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं।

चोर उचक्का चौधरी, कुटनी भई प्रधान : जब नीच और दुष्ट मनुष्यों के हाथ में अधिकार होता है।

चोर की दाढ़ी में तिनका : यदि किसी मनुष्य में कोई बुराई हो और कोई उसके सामने उस बुराई की निंदा करे, तो वह यह समझेगा कि मेरी ही बुराई कर रहा है, वास्तविक अपराधी जरा-जरा-सी बात पर अपने ऊपर संदेह करके दूसरों से उसका प्रतिवाद करता है।

चोर-चोर मौसेरे भाई : एक व्यवसाय या स्वभाव वालों में जल्द मेल-जोल हो जाता है।

चोरी और सीनाजोरी : अपराध करना और जबरदस्ती दिखाना, अपराधी का अपने को निरपराध सिद्ध करना और अपराध को दूसरे के सिर मढ़ना।

चौबे गए छब्बे होने दुबे रह गए : यदि लाभ के लिए कोई काम किया जाय परन्तु उल्टे उसमें हानि हो।

छूछा कोई न पूछा : गरीब आदमी का आदर-सत्कार कोई नहीं करता।

छोटा मुँह बड़ी बात : छोटे मनुष्य का लम्बी-चौड़ी बातें करना।

जंगल में मोर नाचा किसने देखा : जब कोई ऐसे स्थान में अपना गुण दिखावे जहाँ कोई उसका समझने वाला न हो।

जने-जने से मत कहो, कार भेद की बात : अपने रोजगार और भेद की बात हर एक व्यक्ति से नहीं कहनी चाहिए।

जब आया देही का अन्त, जैसा गदहा वैसा सन्त : सज्जन और दुर्जन सभी को मरना पड़ता है।

जब ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर : जब कष्ट सहने के लिए तैयार हुआ हूँ तब चाहे जितने कष्ट आवें, उनसे क्या डरना।

जब तक जीना तब तक सीना : जब तक मनुष्य जीवित रहता है तब तक उसे कुछ न कुछ करना ही पड़ता है।

जबरा मारे और रोने न दे : जो मनुष्य जबरदस्त होता है उसके अत्याचार को चुपचाप सहना होता है।

जर, जोरू, ज़मीन जोर की, नहीं और की : धन, स्त्री और ज़मीन बलवान् मनुष्य के पास होती है, निर्बल के पास नहीं।

जल की मछली जल ही में भली : जो जहाँ का होता है उसे वहीं अच्छा लगता है।

थोथा चना बाजे घना : दिखावा बहुत करना परन्तु सार न होना।

दूर के ढोल सुहावने : किसी वस्तु से जब तक परिचय न हो तब तक ही अच्छी लगती है।

नदी में रहकर मगरमच्छ से बैर : अपने को आश्रय देने वाले से ही शत्रुता करना।

बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपैया : रुपये वाला ही ऊँचा समझा जाता है।

भेड़ जहाँ जायेगी, वहीं मुँडेगी : सीधे-सादे व्यक्ति को सब लोग बिना हिचक ठगते हैं।

रस्सी जल गई पर बल नहीं गया : बरबाद हो गया, पर घमंड अभी तक नहीं गया।

अपने बेरों को कोई खट्टा नहीं बताता : अपनी वस्तु को कोई बुरी नहीं बताता।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू : अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना।

अन्त भले का भला : अच्छे आदमी की अन्त में भलाई होती है।

अन्धे के हाथ बटेर : अयोग्य व्यक्ति को कोई अच्छी वस्तु मिल जाना।

जिसकी बंदरी वही नचावे और नचावे तो काटन धावे : जिसकी जो काम होता है वही उसे कर सकता है।

जिसकी बिल्ली उसी से म्याऊँ करे : जब किसी के द्वारा पाला हुआ व्यक्ति उसी से गुर्राता है।

जिसकी लाठी उसकी भैंस : शक्ति अनधिकारी को भी अधिकारी बना देती है, शक्तिशाली की ही विजय होती है।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा : जिसके पास धन होता है उसको लोग भलामानस समझते हैं, निर्धन को लोग भलामानस नहीं समझते।

जिसके राम धनी, उसे कौन कमी : जो भगवान के भरोसे रहता है, उसे किसी चीज की कमी नहीं होती।

जिसके हाथ डोई (करछी) उसका सब कोई : सब लोग धनवान का साथ देते हैं और उसकी खुशामद करते हैं।

जिसे पिया चाहे वही सुहागिन : जिस पर मालिक की कृपा होती है उसी की उन्नति होती है और उसी का सम्मान होता है।

जी कहो जी कहलाओ : यदि तुम दूसरों का आदर करोगे, तो लोग तुम्हारा भी आदर करेंगे।

जीभ और थैली को बंद ही रखना अच्छा है : कम बोलने और कम खर्च करने से बड़ा लाभ होता है।

जीभ भी जली और स्वाद भी न पाया : यदि किसी को बहुत थोड़ी-सी चीज खाने को दी जाये।

जीये न मानें पितृ और मुए करें श्राद्ध : कुपात्र पुत्रों के लिए कहते हैं जो अपने पिता के जीवित रहने पर उनकी सेवा-सुश्रुषा नहीं करते, पर मर जाने पर श्राद्ध करते हैं।

जी ही से जहान है : यदि जीवन है तो सब कुछ है। इसलिए सब तरह से प्राण-रक्षा की चेष्टा करनी चाहिए।

जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खाय तुरंग : जब कोई कठिन परिश्रम करे और उसका आनंद दूसरा उठावे तब कहते हैं, जैसे गरीब आदमी परिश्रम करते हैं और पूँजीपति उससे लाभ उठाते हैं
जूँ के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती : साधारण कष्ट या हानि के डर से कोई व्यक्ति काम नहीं छोड़ देता।

जेठ के भरोसे पेट : जब कोई मनुष्य बहुत निर्धन होता है और उसकी स्त्री का पालन-पोषण उसका बड़ा भाई (स्त्री का जेठ) करता है तब कहते हैं।

जेते जग में मनुज हैं तेते अहैं विचार : संसार में मनुष्यों की प्रकृति-प्रवृत्ति तथा अभिरुचि भिन्न-भिन्न हुआ करती है।

जैसा ऊँट लम्बा, वैसा गधा खवास : जब एक ही प्रकार के दो मूर्खों का साथ हो जाता है।

जैसा कन भर वैसा मन भर : थोड़ी-सी चीज की जाँच करने से पता चला जाता है कि राशि कैसी है।

जैसा काछ काछे वैसा नाच नाचे : जैसा वेश हो उसी के अनुकूल काम करना चाहिए।

जैसा तेरा ताना-बाना वैसी मेरी भरनी : जैसा व्यवहार तुम मेरे साथ करोगे, वैसा ही मैं तुम्हारे साथ करूँगा।

जैसा देश वैसा वेश : जहाँ रहना हो वहीं की रीतियों के अनुसार आचरण करना चाहिए।

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 9
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 9

खेती खसम सेती : खेती या व्यापार में लाभ तभी होता है जब मालिक स्वयं उसकी देखरेख करे.

खेल खतम, पैसा हजम : सुखपूर्वक काम समाप्त हो जाने पर ऐसा कहते हैं.

खेल खिलाड़ी का, पैसा मदारी का : काम कर्मचारी करते हैं और नाम अफसर का होता है.

खोदा पहाड़ निकली चुहिया : बहुत परिश्रम करने पर थोड़ा लाभ होना.

खौरही कुतिया मखमली झूल : जब कोई कुरूप मनुष्य बहुत शौक-श्रृंगार करता है या सुन्दर वेश-भूषा धारण करता है, तब इस कहावत का प्रयोग होता है.

गंजी कबूतरी और महल में डेरा : किसी अयोग्य व्यक्ति के उच्च पद प्राप्त करने पर ऐसा कहते हैं.

गंजी यार किसके, दम लगाए खिसके : स्वार्थी मनुष्य किसी के साथ नहीं होते, अपना मतलब सिद्ध होते ही वे चल देते हैं.

गगरी दाना सूत उताना : ओछा आदमी थोड़ा धन पाकर इतराने लगता है.

गढ़े कुम्हार भरे संसार : कुम्हार घड़ा बनाते हैं, सब लोग उससे पानी भरते हैं। एक आदमी की कृति से अनेक लोग लाभ उठाते हैं.

गधा मरे कुम्हार का, धोबिन सती होय : जब कोई आदमी किसी ऐसे काम में पड़ता है जिससे उसका कोई संबंध नहीं तब ऐसा कहा जाता है.

गधे के खिलाये न पुण्य न पाप : कृतघ्न के साथ नेकी करना व्यर्थ है.

गये थे रोजा छुड़ाने नमाज़ गले पड़ी : यदि कोई व्यक्ति कोई छोटा कष्ट दूर करने की चेष्टा करता है और उससे बड़े कष्ट में फंस जाता है तब कहते हैं.

गरीब की लुगाई, सबकी भौजाई : गरीब और सीधे आदमी को लोग प्राय: दबाया करते हैं.

कंगाली में गीला आटा : धन की कमी के समय जब पास से कुछ और चला जाता है.

गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त : जिसका काम हो वह अधिक परवाह न करे, किन्तु दूसरा आदमी अत्यधिक तत्परता दिखावे.

गाँठ में जमा रहे तो खातिर जमा : जिसके पास धन रहता है वह निश्चिंत रहता है.

गाँव के जोगी जोगना आन गाँव के सिद्ध : अपनी जन्मभूमि में किसी विद्वान या वीर की उतनी प्रतिष्ठा नहीं होती जितनी दूसरे स्थानों में होती है.

गाय गुण बछड़ा, पिता गुण घोड़, बहुत नहीं तो थोड़ै थोड़ : बच्चों पर माता-पिता का प्रभाव थोड़ा-बहुत अवश्य पड़ता है.

गाल बजाए हूँ करैं गौरीकन्त निहाल : जो व्यक्ति उदार होते हैं वे सहज में ही प्रसन्न हो जाते हैं.

गीदड़ की शामत आए तो गाँव की तरफ भागे : जब विपत्ति आने को होती है तब मनुष्य की बुद्धि विपरीत हो जाती है.

(1) अपनी खिचड़ी अलग पकाना-सबसे पृथक् काम करना।
वाक्य-प्रयोग-वह अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।

(2) आँखों में धूल झोंकना-धोखा देना।
वाक्य-प्रयोग-तुमने उसकी आँखों में धूल झोंक दी।

उपर्युक्त उदाहरणों से मुहावरों का अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है। इनके स्थान पर शुद्ध, अर्थपूर्ण और पूर्ण वाक्यों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

शुद्ध एवं आदर्श वाक्य-प्रयोग- कुछ महत्त्वपूर्ण मुहावरे एवं उनके वाक्यों में प्रयोग |

1. अपनी खिचड़ी अलग पकाना-सबसे पृथक् काम करना। वाक्य-प्रयोग-हमारी कक्षा के कुछ छात्र पिकनिक मनाने के लिए गए। पिकनिक-स्थल पर जाकर आगे का कार्यक्रम निश्चित हुआ। सर्वप्रथम सभी साथी भोजन की व्यवस्था में लग गए, परन्तु मोहन अकेले ही जंगल में घूमने की जिद करने लगा। सभी ने उससे यही कहा कि तुम अपनी खिचड़ी अलग पकाते हो, यह अच्छी बात नहीं है। सभी लोग साथ चलेंगे।

2. आँखों में धूल झोंकना-धोखा देना। . वाक्य-प्रयोग हमारे भाई यद्यपि रेलयात्रा में पर्याप्त सतर्क रहते हैं, तथापि लखनऊ के स्टेशन पर किसी ने उनसे 50 रुपये ठगकर उनकी आँखों में धूल झोंक दी।

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 10
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 10

1. अँगारे बरसना—अत्यधिक गर्मी पड़ना।
जून मास की दोपहरी में अंगारे बरसते प्रतीत होते हैं।

2. अंगारों पर पैर रखना-कठिन कार्य करना।
युद्ध के मैदान में हमारे सैनिकों ने अंगारों पर पैर रखकर विजय प्राप्त की।

3. अँगारे सिर पर धरना—विपत्ति मोल लेना।
सोच-समझकर काम करना चाहिए। उससे झगड़ा लेकर व्यर्थ ही अंगारे सिर पर मत धरो।

4. अँगूठा चूसना-बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।
कभी तो समझदारी की बात किया करो। कब तक अंगूठा चूसते रहोगे?

5. अँगूठा दिखाना-इनकार करना।
जब कृष्णगोपाल मन्त्री बने थे तो उन्होंने किशोरी को आश्वासन दिया था कि जब उसका बेटा इण्टर कर लेगा तो वह उसकी नौकरी लगवा देंगे। बेटे के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर किशोरी ने उन्हें याद दिलाई तो उन्होंने उसे अँगूठा दिखा दिया।

6. अँगूठी का नगीना-अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति अथवा वस्तु। अकबर के नवरत्नों में बीरबल तो जैसे अंगूठी का नगीना थे।

7. अंग-अंग फूले न समाना-अत्यधिक प्रसन्न होना। राम के अभिषेक की बात सुनकर कौशल्या का अंग-अंग फूले नहीं समाया।

8. अंगद का पैर होना-अति दुष्कर/असम्भव कार्य होना। यह पहाड़ी कोई अंगद का पैर तो है नहीं, जिसे हटाकर रेल की पटरी न बिछाई जा सके।

9. अन्धी सरकार—विवेकहीन शासन। कालाबाजारी खूब फल-फूल रही है, किन्तु अन्धी सरकार उन्हीं का पोषण करने में लगी है।

10. अन्धे की लाठी लकड़ी.होना-एकमात्र सहारा होना। निराशा में प्रतीक्षा अन्धे की लाठी है।

11. अन्धे के आगे रोना-निष्ठुर के आगे अपना दुःखड़ा रोना।। जिस व्यक्ति ने पैसों के लिए अपनी पत्नी को जलाकर मार दिया, उससे सहायता माँगना तो अन्धे के आगे रोना जैसा व्यर्थ है।

12. अम्बर के तारे गिनना-नींद न आना। तुम्हारे वियोग में मैं रातभर अम्बर के तारे गिनता रहा।

13. अन्धे के हाथ बटेर लगना-भाग्यवश इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना।

तृतीय श्रेणी में स्नातक लोकेन्द्र को क्लर्क की नौकरी क्या मिली, मानो अन्धे के हाथों बटेर लग गई।

14. अन्धों में काना राजा-मूों के बीच कम ज्ञानवाले को भी श्रेष्ठ ज्ञानवान् माना जाता है।
कभी आठवीं पास मुंशीजी अन्धों में काने राजा हुआ करते थे; क्योंकि तब बारह-बारह कोस तक विद्यालय न थे।

15. अक्ल का अन्धा-मूर्ख।
वह लड़का तो अक्ल का अन्धा है, उसे कितना ही समझाओ, मानता ही नहीं है।

16. अक्ल के घोड़े दौड़ाना-हवाई कल्पनाएँ करना।
परीक्षा में सफलता परिश्रम करने से ही मिलती है, केवल अक्ल के घोड़े दौड़ाने से नहीं।

17. अक्ल चरने जाना-मति-भ्रम होना, बुद्धि भ्रष्ट हो जाना।
दुर्योधन की तो मानो अक्ल चरने चली गई थी, जो कि उसने श्रीकृष्ण के सन्धि-प्रस्ताव को स्वीकार न करके उन्हें ही बन्दी बनाने की ठान ली।

18. अक्ल पर पत्थर पड़ना-बुद्धि नष्ट होना।
राजा दशरथ ने कैकेयी को बहुत समझाया कि वह राम को वन भेजने का वरदान न माँगे; पर उसकी अक्ल पर पत्थर पड़े हुए थे; अत: वह न मानी।

19. अक्ल के पीछे लाठी लिये फिरना-मूर्खतापूर्ण कार्य करना।
तुम स्वयं तो अक्ल के पीछे लाठी लिये फिरते हो, हम तुम्हारी क्या सहायता करें।

20. अगर मगर करना-बचने का बहाना ढूँढना।
अब ये अगर-मगर करना बन्द करो और चुपचाप स्थानान्तण पर चले जाओ, गोपाल को उसके अधिकारी ने फटकार लगाते हुए यह कहा।

21. अटका बनिया देय उधार-जब अपना काम अटका होता है तो मजबूरी में अनचाहा भी करना पड़ता है।
जब बहू ने हठ पकड़ ली कि यदि मुझे हार बनवाकर नहीं दिया तो वह देवर के विवाह में एक भी गहना नहीं देने देगी, बेचारी सास क्या करे! अटका बनिया देय उधार और उसने बहू को हार बनवा दिया।

22. अधजल गगरी छलकत जाए-अज्ञानी पुरुष ही अपने ज्ञान की शेखी बघारते हैं।
आठवीं फेल कोमल अपनी विद्वत्ता की बड़ी-बड़ी बातें करती है। आखिर करे भी क्यों नहीं, अधजल गगरी छलकत जाए।

23. अन्त न पाना-रहस्य न जान पाना।
गुरुजी ने अपने प्रवचन में ईश्वर की महिमा का गुणगान करते हुए बताया कि ईश्वर की माया का अन्त किसी ने नहीं पाया है।

24. अन्त बिगाड़ना-नीच कार्यों से वृद्धावस्था को कलंकित करना।

लाला मनीराम को बुढ़ापे में भी घटतौली करते देखकर गोविन्द ने उससे कहा कि लाला कम-से-कम अपना अन्त तो न बिगाड़ो।

25. अन्न-जल उठना-मृत्यु के सन्निकट होना।
रामेश्वर की माँ की हालत बड़ी गम्भीर है, लगता है कि अब उसका अन्न-जल उठ गया है।

26. अपना उल्लू सीधा करना-अपना काम निकालना।
कुछ लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए दूसरों को हानि पहुँचाने से भी नहीं चूकते।

27. अपनी खिचड़ी अलग पकाना – सबसे पृथक् कार्य करना।
कुछ लोग मिलकर कार्य करने के स्थान पर अपनी खिचड़ी अलग पकाना पसन्द करते हैं।

28. अपना राग अलापना-दूसरों की अनसुनी करके अपने ही स्वार्थ की बात कहना।
कुछ व्यक्ति सदैव अपना ही राग अलापते रहते हैं, दूसरों के कष्ट को नहीं देखते।

29. अपने मुँह मियाँ मिट्ठ बनना-अपनी प्रशंसा स्वयं करना।
अपने मुँह मियाँ मिट्ठ बननेवाले का सम्मान धीरे-धीरे कम हो जाता है।

30. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना-लज्जित होना।
अपनी झूठी बात की वास्तविकता का पता चलने पर वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

31. अपना घर समझना–संकोच न करना।
राम अपने मित्र के घर को अपना घर समझता है। इसलिए वहाँ वह अपनी सब परेशानियाँ कह देता है।

32. अपने पैरों पर खड़ा होना स्वावलम्बी होना।
जब तक लड़का अपने पैरों पर खड़ा न हो जाए, तब तक उसकी शादी करना उचित नहीं है।

33. अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारना-अपने अहित का काम स्वयं करना।
तुमने अपने मन की बात प्रकट करके अपने पाँव में स्वयं कुल्हाड़ी मारी।

34. आकाश-पाताल एक करना-अत्यधिक प्रयत्न अथवा परिश्रम करना।
वानरों ने सीताजी की खोज के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।

35. आँख चुराना-बचना, छिप जाना।
मुझसे रुपये उधार लेने के बाद मोहन निरन्तर आँख चुराता रहता है, मेरे सामने नहीं आता।

36. आँखें फेरना-उपेक्षा करना, कृपा दृष्टि न रखना।
जिससे ईश्वर भी आँखे फेर ले, भली कोई उसकी सहायता कैसे कर सकता है।

37. आँखें बिछाना-आदरपूर्वक किसी का स्वागत करना।
यहाँ कोई ऐसा नहीं है, जो तुम्हारे लिए आँखें बिछाए बैठा रहेगा, व्यर्थ के भुलावे में न रहो।

38. आँख मिलाना-सामने आना।
अपनी कलई खुल जाने के बाद रमेश मुझसे आँख मिलाने का साहस नहीं रखता।

39. आँखें खुल जाना—वास्तविकता का ज्ञान होना, सीख मिलना।
विवेक के अपहरण में उसके मित्र की संलिप्तता देखकर लोगों की आँखें खुल गईं कि अब किसी पर विश्वास करने का जमाना नहीं रह गया है।

40. आँखें नीची होना-लज्जा से गड़ जाना, लज्जा का अनुभव करना।
छेड़खानी के आरोप में बेटे को हवालात में बन्द देखकर पिता की आँखें नीची हो गईं।

41. आँखें चार होना/आँखें दो-चार होना-प्रेम होना।
दुष्यन्त और शकुन्तला की आँखें चार होते ही उनके हृदय में प्रेम का उद्रेक हो गया।

42. आँख का तारा-अत्यन्त प्यारा।
प्रत्येक सुपुत्र अपने माता-पिता की आँखों का तारा होता है।

43. आँखों पर परदा पड़ना-विपत्ति की ओर ध्यान न जाना।
कमला की आँखों पर तो परदा पड़ गया, जो उसने गुस्साई बहू को दुकान से मिट्टी का तेल लेने भेज दिया।

44. आँखों में धूल झोंकना-धोखा देना।
राम बहुत समझदार है तो भी किसी व्यक्ति ने उसकी आँखों में धूल झोंककर उसे नकली नोट दे दिया।

45. आँखों में सरसों का फूलना-मस्ती होना।
वह कुछ इस तरह का सिरफिरा था कि उसकी आँखों में सदा सरसों फूलती रहती थी।

46. आँखों का पानी ढलना-निर्लज्ज हो जाना।
जिनकी आँखों का पानी ढल गया है, उन्हें नीच-से-नीच काम करने में भी संकोच नहीं होता।

47. आँख दिखाना—क्रुद्ध होना।
उधार लेते समय प्रत्येक व्यक्ति बड़े प्रेम से बात करता है, किन्तु वापस करते समय आँख दिखाना साधारण-सी बात है।

48. आँचल-बाँधना-गाँठ बाँधना, याद कर लेना।
यह बात प्रत्येक कन्या को आँचल-बाँध लेनी चाहिए कि सास-ससुर को अपने माता-पिता माननेवाली बहू ही ससुराल में आदर पाती है।

49. आग-बबूला होना-अत्यधिक क्रोध करना।
नौकरानी से टी-सेट टूट जाने पर मालकिन एकदम आग-बबूला हो गई।

50. आग में घी डालना-क्रोध अथवा झगड़े को और अधिक भड़का देना।
बेटी के मुँह से बहू की शिकायत सुनकर सास वैसे ही भरी बैठी थी, बस बहू की टिप्पणी ने तो जैसे आग में घी डाल दिया और सास ने रौद्र रूप दिखाते हुए बहू को चोटी पकड़कर घर से बाहर कर दिया।

51. आठ-आठ आँसू बहाना-बहुत अधिक रोना।
सुभाष अपने पिता के स्वर्गवास पर आठ-आठ आँसू रोया।

52. आड़े हाथों लेना-शर्मिन्दा करना।
मोहन बहुत बढ़-चढ़कर बातें कर रहा था, जब मैंने उसे आड़े हाथों लिया तो उसकी बोलती बन्द हो गई।

53. आधा तीतर आधा बटेर-अधूरा ज्ञान।
या तो हिन्दी बोलिए या अंग्रेजी। यह क्या, आधा तीतर आधा बटेर।

64. आपे से बाहर होना-सामर्थ्य से अधिक क्रोध प्रकट करना।
अपने साथी की पिटाई का समाचार सुनते ही छात्र आपे से बाहर हो गए।

55. आसमान टूट पड़ना-अचानक घोर विपत्ति आ जाना।
यूसुफ जाई मलाला ने स्त्री शिक्षा का समर्थन क्या किया, उस पर तो मानो आसमान टूट पड़ा और उसकी जान पर बन आई।

56. आसमान से बातें करना-बहुत बढ़-चढ़कर बोलना।
यद्यपि दीपक एक साधारण लिपिक का पुत्र है, किन्तु अपने साथियों में बैठकर वह आसमान से बातें करता है।

57. आसमान पर दिमाग चढ़ना-अत्यधिक घमण्ड होना।
परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते ही रमेश का दिमाग आसमान पर चढ़ गया।

58. आसमान पर थूकना-सच्चरित्र व्यक्ति पर कलंक लगाने का प्रयास करना।
महात्मा गांधी पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगानेवाले यह नहीं सोचते कि हम आसमान पर थूक रहे हैं।

59. आस्तीन का साँप-कपटी मित्र।
प्रदीप से अपनी व्यक्तिगत बात मत कहना, वह आस्तीन का साँप है; क्योंकि आपकी सभी बातें वह अध्यापक महोदय को बता देता है।

60. इज्जत मिट्टी में मिलाना-मान-मर्यादा नष्ट करना।
अन्तर्जातीय विवाह के लिए अड़ी अपनी बेटी के सामने गिड़गिड़ाते हुए उसकी माँ ने कहा-बेटी तू हमारी इज्जत मिट्टी में मत मिला।

61. इधर की उधर लगाना-चुगली करना।
अनेक लोग ऐसे होते हैं, जो इधर की उधर लगाकर लोगों में विवाद कराते रहते हैं।

62.. ईंट से ईंट बजाना-हिंसा का करारा जवाब देना, खुलकर लड़ाई करना।
तुम मुझको कमजोर मत समझो, समय आने पर मैं ईंट से ईंट बजाने के लिए भी तैयार हूँ।

63. ईमान बेचना-विश्वास समाप्त करना।
ईमान बेचकर धन कमाना मनुष्य को शोभा नहीं देता।

64. ईद का चाँद होना-कभी-कभी दर्शन देना।
नौकरी पर चले जाने के बाद दीपक बहुत दिनों पश्चात् अपने मित्र से मिला। इस पर मित्र ने कहा कि यहाँ से जाने के बाद तो तुम ईद के चाँद ही हो गए।

65. उँगली उठाना—दोष दिखाना।
समय आने पर ही वास्तविकता का पता चलता है। प्रदीप की सच्चाई पर किसी को सन्देह नहीं था, किन्तु अब तो लोग उस पर भी उँगली उठाने लगे हैं।

66. उँगली पकड़ते-पकड़ते पहुँचा पकड़ना-थोड़ा प्राप्त हो जाने पर अधिक पर अधिकार जमाना।
पहले सुरेश कभी-कभी पुस्तक माँगकर ले जाता था, किन्तु अब उसने उँगली पकड़ते-पकड़ते पहुँचा पकड़ लिया है। अब तो

वह कोई भी पुस्तक ले जाता है और पूछने का कष्ट भी नहीं करता।

67. उँगली पर नचाना-संकेत पर कार्य कराना।
रमेश अपनी पत्नी को उँगलियों पर नचाता है।

68. उड़ती चिड़िया पहचानना-दूर से भाँप लेना।
दारोगा ने सिपाही से कहा, "ऐसा अनाड़ी नहीं हूँ, उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ।"

69. उड़ती चिड़िया के पंख गिनना-कार्य-व्यापार को देखकर व्यक्तित्व को जान लेना।
उड़ती चिड़िया के पंख गिननेवाले गुरु विरजानन्द ने दयानन्द को निस्संकोच अपना शिष्य बना लिया।

70. ऊँची दुकान फीके पकवान-प्रसिद्ध स्थान की निकृष्ट वस्तु होना।
हम यह सोचकर बड़ी मिल का कपड़ा लाए थे कि अधिक चलेगा, किन्तु धोते ही उसका रंग निकल गया। यह तो वही हुआ कि ऊँची दुकान फीके पकवान।

71. ऊँट के मुँह में जीरा-बहुत कम मात्रा में कोई वस्तु देना।
मोहन प्रतिदिन दस रोटियाँ खाता है, उसे दो रोटियाँ देना तो ऊँट के मुँह में जीरा देने के समान है।

72. उल्टी गंगा बहाना—परम्परा के विपरीत काम करना।
सदैव उल्टी गंगा बहाकर समाज में वैचारिक क्रान्ति नहीं लाई जा सकती।

73. उल्टी माला फेरना—किसी के अमंगल की कामना करना, लोक विश्वास अथवा परम्परा के विपरीत कार्य करना।
उल्टी माला फेरकर किसी का अहित नहीं किया जा सकता।

74. उल्लू सीधा करना किसी को बेवकूफ बनाकर काम निकालना।
फसाद करानेवाले लोग तो अपना ही उल्लू सीधा करते हैं।

75. एक आँख से देखना-सबके साथ समानता का व्यवहार करना, पक्षपातरहित होना।
सच्चा शासक वही होता है, जो सबको एक आँख से देखता है।

76. एक अनार सौ बीमार-एक वस्तु के लिए बहुत-से व्यक्तियों द्वारा प्रयत्न करना।
मेरे पास पुस्तक एक है और माँगनेवाले दस छात्र हैं। यह तो वही बात हुई कि एक अनार सौ बीमार।

77. एक और एक ग्यारह होना-एकता में शक्ति होना।
उनको कमजोर मत समझो, आवश्यकता पड़ने पर वे एक और एक ग्यारह हो जाते हैं।

78. एक हाथ से ताली नहीं बजती-झगड़ा एक ओर से नहीं होता।

मिताली सच-सच बताओ क्या बात है; क्योंकि यह बात तुम भी अच्छी तरह जानती हो कि एक हाथ से ताली नहीं बजती।

79. एड़ी-चोटी का पसीना एक करना-अत्यधिक परिश्रम करना।
अच्छी श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण करना कोई सरल कार्य नहीं है। एड़ी-चोटी का पसीना एक करने पर ही अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते हैं।

80. ऐसी-तैसी करना-अपमानित करना/काम खराब करना।
मण्डलीय समीक्षा करते समय मुख्यमन्त्री ने उन अधिकारियों की ऐसी-तैसी कर दी, जो पूरी तैयारी के साथ नहीं आए थे।

81. ओखली में सिर देना-जान-बूझकर अपने को मुसीबत में डालना।
उस नामी गुण्डे को छेड़कर क्यों ओखली में सिर दे रहे हो।

82. कंगाली में आटा गीला होना–विपत्ति में और विपत्ति आना।
श्री गुप्ता की पहले तो नौकरी छूट गई और उसके बाद उनके घर में चोरी हो गई। वास्तव में कंगाली में आटा गीला होना इसे ही कहते हैं।

83. कन्धे से कन्धा मिलाना–सहयोग देना।
देश पर विपत्ति के समय प्रत्येक नागरिक को कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करना चाहिए, जिससे दुश्मन हमारा कुछ भी नं बिगाड़ सके।

84. कच्चा चिट्ठा खोलना—गुप्त भेद खोलना।
आपात्कालीन स्थिति ने बड़े-बड़े सफेदपोशों का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख दिया।

85. कमर टूटना–हिम्मत पस्त होना।
पहले तो रमेश के पिताजी का स्वर्गवास हो गया और अब व्यापार में हानि होने से उसकी कमर टूट गई।

86. कलाम तोड़ना–अत्यन्त अनूठा, मार्मिक या हृदयस्पर्शी वर्णन करना।
स्वामीजी के भक्त पत्रकारों ने उनकी प्रशंसा में कलम तोड़कर रख दी।

87. कलेजा छलनी होना-कड़ी बात से जी दुःखना।
अपनी सौतेली माँ के व्यंग्य-बाणों से दीपक का कलेजा छलनी हो गया है।

88. कलेजा थामना-दु:ख सहने के लिए हृदय को कड़ा करना।
परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने पर मोहन अपना कलेजा थामकर रह गया।

89. कलेजा धक-धक करना-भयभीत होना।
घने जंगल में घूमते समय हम सभी के कलेजे धक-धक कर रहे थे।

90. कलेजा निकालकर रख देना-सर्वस्व दे देना।
यदि सौतेली माँ अपना कलेजा निकालकर रख दे तो भी बहुत कम व्यक्ति उसकी प्रशंसा करेंगे।

91. कलेजा मुँह को आना-अत्यधिक व्याकुल होना।
अपने मित्र के स्वर्गवास का समाचार सुनकर मोहन को ऐसा लगा जैसे उसका कलेजा मुँह को आ गया हो।

92. कलेजे पर पत्थर रखना-धैर्य धारण करना।
पुत्र की मृत्यु का दुःख उसने कलेजे पर पत्थर रखकर सहन किया।

93. कसाई के खूटे से बाँधना-निर्दयी व्यक्ति को सौंपना।
रमेश से विवाह के बाद शीला बहुत दुःखी है। यदि हमें पता होता तो हम उसे कसाई के खुंटे से कभी नहीं बाँधते।

94. काँटों पर लोटना-ईर्ष्या से जलना, बेचैन होना।
मोहन ने सुना कि रमेश नई कार लाया है। इस समाचार से मोहन की बेचैनी बढ़ गई, तभी किसी ने कहा कि व्यर्थ काँटों पर क्यों लोटते हो।

95. कागज काला करना-व्यर्थ ही कुछ लिखना।
तुम्हारी रचनाओं को कोई भी तो पसन्द नहीं करता, व्यर्थ ही कागज काला करने से क्या लाभ है?

96. कागजी घोड़े दौड़ाना-कोरी कागजी कार्यवाही करना।
किसी भी योजना की ठोस रूपरेखा बनाए बिना केवल कागजी घोड़े दौड़ाने से समस्या हल नहीं हो सकती।

97. काठ का उल्लू होना-मूर्ख होना।
उससे बात करना बिल्कुल व्यर्थ है। वह तो निरा काठ का उल्लू है।

98. कान काटना-मात देना, बढ़कर होना।
भाषण प्रतियोगिता में छोटी कक्षा के छात्र ने बड़ी कक्षा के छात्र के कान काट लिए।

99. कान का कच्चा होना—बिना सोचे-विचारे दूसरों की बातों पर विश्वास करना।
कान का कच्चा व्यक्ति अच्छा राजा या कुशल प्रशासक नहीं हो सकता।

100. कान खड़े होना-सचेत होना।
अपने सम्बन्ध में बात होते देखकर उसके कान खड़े हो गए।

101. कान खाना-निरन्तर बातें करके परेशान करना।
यद्यपि उस समय उसकी बात सुनने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी, तथापि उसने मेरे कान खाकर मुझे परेशान कर दिया।

102. कान पर जूं न रेंगना-~-बार-बार कहने पर भी प्रभाव न होना।

अब अनुत्तीर्ण हो जाने पर क्यों रोते हो? जब मैं पढ़ने के लिए बार-बार कहता था, तब तुम्हारे कानों पर जूं भी न रेंगती थी।

103. कान भरना-चुगली करना।
मोहन ने सोहन से कहा कि आज साहब नाराज हैं, किसी ने उनके कान भरे हैं।

104. काया पलट देना-स्वरूप में आमूल परिवर्तन कर देना।
आपास्थिति ने तो देश की काया ही पलट दी।

105. काला अक्षर भैंस बराबर—बिल्कुल अनपढ़।
संगीत के विषय में मेरी स्थिति काला अक्षर भैंस बराबर है।

106. कीचड़ उछालना-लांछन लगाना।
कुछ लोगों को दूसरों पर कीचड़ उछालने में मजा आता है।

107. कुएँ में भाँग पड़ना-सम्पूर्ण समूह परिवार. का दूषित प्रवृत्ति का होना।
जब घर से भागकर प्रेम-विवाह करनेवाली साधना की दूसरी बेटी भी घर से भाग गई तो सभी सुननेवालों ने यही कहा कि वहाँ तो कुएँ में ही भाँग पड़ी है।

108. कुएँ में बाँस डालना-बहुत तलाश करना।
कई दिन से कुएँ में बाँस डाल रखे हैं, किन्तु उनका मिलना तो दूर उनका कोई समाचार भी नहीं मिला है।

109. कुत्ते की मौत मरना-बुरी तरह मरना।
तस्कर व डाकू जब पुलिस के चंगुल में पड़ जाते हैं तो कुत्ते की मौत मारे जाते हैं।

110. कूप-मण्डूक होना-संकुचित विचारवाला होना।
समुद्र पार करने का निषेध करके हमारे पुरखों ने हमें कूप-मण्डूक बना रहने दिया।

111. कोयले की दलाली में हाथ काले-कुसंगति से कलंक अवश्य लगता है।
अपने मातहत दो बाबुओं को रंगे हाथ रिश्वत लेते पकड़े जाने के आरोप में अजब सिंह को भी उनके पद से हटा दिया गया। आखिर कोयले की दलाली में हाथ काले होते ही हैं।

112. कोल्हू का बैल-अत्यन्त परिश्रमी।
मजदूर रात-दिन कोल्हू के बैल की तरह जुटे रहने पर भी भरपेट रोटी प्राप्त नहीं कर पाते।

113. खटाई में डालना-उलझन पैदा करना।
मेरे मामले का निर्णय अभी तक नहीं हुआ, लिपिक महोदय ने जान-बूझकर उसे खटाई में डाल दिया है।

114. खरी-खोटी सुनाना-फटकारना।
अध्यापक द्वारा खरी-खोटी सुनाने पर भी निर्लज्ज छात्र पर कोई प्रभाव न पड़ा।

115. खरी मजूरी चोखा काम–अच्छी मजदूरी लेनेवाले से अच्छे काम की ही अपेक्षा की जाती है।
रोजगार की तलाश में शहर जाते बेटे को समझाते हुए पिता ने कहा कि छोटे शहर में खरी मजूरी चोखा काम चाहनेवालों की कमी नहीं है।

116. खाक छानना-भटकना।
मेरा शोध-विषय इतना जटिल है कि इसके लिए मुझे दर-दर की खाक छाननी पड़ रही है।

117. खाक में मिलाना-नष्ट करना।
अयोग्य सन्तान अपने पिता की इज्जत को तनिक-सी देर में खाक में मिला देती है।

118. खून का प्यासा होना-जानी दुश्मन होना।
जब सरदार भगतसिंह ने लाला लाजपतराय की मृत्यु का समाचार सुना तो वे अंग्रेजों के खून के प्यासे हो गए।

119. खून सूख जाना—भयभीत होना।
रमेश अपने पिता से बिना कहे सिनेमा देखने चला गया। सिनेमाहाल पर अचानक अपने पिता को देखकर उसका खून सूख गया।

120. खून सफेद होना—उत्साह का समाप्त हो जाना, बहुत डर जाना।
अपने सामने एक बहुत ही भयानक चेहरे के व्यक्ति को खड़ा देखकर मानो उसका खून सफेद हो गया।

121. खून-पसीना एक करना-कठोर परिश्रम करना।
मुकेश ने परीक्षा में सफलता पाने के लिए खून-पसीना एक कर दिया।

122. खेल खिलाना-प्रतिपक्षी को समय देना।
राम ने रावण को मारने से पूर्व युद्ध के मैदान में उसे तरह-तरह से खेल खिलाए।

123. खेत रहना-लड़ाई में मारा जाना।
भारत और चीन के युद्ध में शत्रुओं के कई हजार सैनिक खेत रहे।

124. गड़े मुर्दे उखाड़ना-बहुत पुरानी बात दोहराना।
गड़े मुर्दे उखाड़ने से किसी समस्या का हल नहीं मिलता। वस्तुतः हमें वर्तमान सन्दर्भ में ही समस्या का समाधान खोजना चाहिए।

125. गागर में सागर भरना-थोड़े शब्दों में अधिक बात कहना।
बिहारी ने अपनी सतसई के दोहों में बड़े-बड़े अर्थ रखकर गागर में सागर भरने की बात को चरितार्थ किया।

126. गाल बजाना-डींग मारना।
केवल गाल बजाने से सफलता नहीं मिल सकती, इसके लिए परिश्रम भी परम आवश्यक है।

127. गुड़-गोबर करना—काम बिगाड़ना।
कवि-सम्मेलन बड़े आनन्द से चल रहा था, श्रोता रसमग्न होकर

कविताएँ सुन रहे थे कि अचानक आई तेज वर्षा ने सारा गुड़-गोबर कर दिया।

128. गूलर का फूल होना-अलभ्य वस्तु होना।
आज के युग में ईमानदारी गूलर का फूल हो गई है।

129. घड़ों पानी पड़ना-दूसरों के सामने हीन सिद्ध होने पर अत्यन्त लज्जित होना।
बहू ने जब सास का झूठ सबके सामने पकड़ लिया तो उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

130. घर का दीपक-घर की शोभा और कुल की कीर्ति को बढ़ानेवाला।
एकमात्र पुत्र की मृत्यु पर संवेदना व्यक्त करने आए प्रत्येक व्यक्ति ने यही कहा कि उनके घर का तो दीपक ही बुझ गया।

131. घर की खेती सहज में मिलनेवाला पदार्थ।
बाल काट देने पर इतना क्यों रोते हो? यह तो घर की खेती है। कुछ दिन में फिर बढ़ जाएगी।

132. घर फूंक तमाशा देखना-क्षणिक आनन्द के लिए बहुत अधिक खर्च करना।
सेठ भोलामल का बड़ा लड़का शराब व जुए में सम्पत्ति नष्ट करके घर फूंक तमाशा देख रहा है।

133. घाट-घाट का पानी पीना–अनेक स्थलों का अच्छा-बुरा अनुभव प्राप्त करना/चालाक होना।

जिसने घाट-घाट का पानी पिया हो, उसे जीवन में कौन धोखा दे सकता है।

134. घाव पर नमक छिड़कना-दु:खी व्यक्ति के हृदय को और दुःख पहुँचाना।
परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने पर रमेश वैसे ही दु:खी है। अब अपशब्द कहकर आप उसके घाव पर नमक छिड़क रहे हैं।

135. घाव हरा होना-भूले दुःख की याद आना।
मैं तो अपना दुःख भूल चुका था, किन्तु आज आपको वैसे ही कष्ट में देखकर मेरा घाव हरा हो गया।

136. घी के दीये जलाना-खुशी मनाना।
अपने प्रतिद्वन्द्वी की हार पर सुनील ने घी के दीये जलाए।

137. घोड़े बेचकर सोना निश्चिन्त होना।
किशन परीक्षा समाप्त होते ही घोड़े बेचकर सोता है।

138. चम्पत होना-भाग जाना।
सिपाही को देखते ही चोर वहाँ से चम्पत हो गया।

139. चाँद पर थूकना-निर्दोष को दोष देना।
आप सत्यता के साथ अपने कार्य को कीजिए। आप पर दोष लगानेवाले स्वयं चुप हो जाएँगे। चाँद पर थूकने से उसका कुछ बिगड़ता नहीं है।

140. चूना लगाना-हानि पहुँचाना।
उसने मुझे रिश्तेदारी का हवाला दिया और मैं पिघल गया। बेबात में उसने मुझे सौ रुपये का चूना लगा दिया।

141. चाँदी काटना- अधिक लाभ प्राप्त करना।
आपास्थिति से पूर्व काले धन्धे में लगे व्यक्ति कृत्रिम कमी उत्पन्न करके चाँदी काट रहे थे। अब सभी के होश ठिकाने आ गए हैं।

142. चिकना घड़ा होना-निर्लज्ज होना। वह पूरा चिकना घड़ा है। उस पर आपकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

143. चिकनी-चुपड़ी बातें करना-चालबाजी से भरी मीठी बातें करना। उसकी बातों में न आना।
वह चिकनी-चुपड़ी बातें करके अपना मतलब सिद्ध करने में बड़ा चतुर है।

144. चुल्लूभर पानी में डूब मरना-अपने गलत काम के लिए लज्जा का अनुभव करना।
रमेश ने अपनी बहन की सम्पत्ति पर भी कब्जा करने की कोशिश की। जब सम्बन्धियों को पता चला तो उन्होंने उससे कहा कि जाओ, चुल्लूभर पानी में डूब मरो।।

145. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना-घबराहट आदि के कारण चेहरे का रंग उड़ जाना।
शहर में दंगा होने की खबर सुनकर शहर में नई आई मेघना के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

146. चोर की दाढ़ी में तिनका वास्तविक अपराधी का बिना पूछे बोल उठना।
छात्रों ने श्यामपट पर एक कार्टून बना दिया था। अध्यापक ने उसके सम्बन्ध में छात्रों से पूछा। इसी बीच एक छात्र खड़ा होकर कहने लगा कि यह कार्टून मैंने नहीं बनाया। सब छात्र कहने लगे- "चोर की दाढ़ी में तिनका।"

147. चोली-दामन का साथ होना-घनिष्ठ अथवा अटूट सम्बन्ध।
पन्ना रूपवती स्त्री थी और रूप तथा गर्व में चोली-दामन का नाता था।

148. छक्के छुड़ाना-हिम्मत पस्त कर देना।
व्यापारमण्डल ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करके मेरे विरोधियों के छक्के छुड़ा दिए।

149. छठी का दूध याद आना-घोर संकट में फँसना।
अचानक आए तूफान ने पर्वतारोहियों को छठी का दूध याद दिला दिया।

150. छठी का दूध याद कराना-बहुत अधिक कष्ट देना।
सतपाल ने अखाड़े में बड़े-बड़े पहलवानों को भी छठी का दूध याद करा दिया।

151. छाती पर मूंग दलना-अत्यन्त कष्ट देना।
माँ ने नाराज होकर बच्चों से कहा कि मेरी छाती पर ही मूंग दलते रहोगे या कुछ पढ़ोगे-लिखोगे भी।

152. छाती पर पत्थर रखना-दुःख सहने के लिए हृदय कठोर करना।
अपनी छाती पर पत्थर रखकर उसने अपना पुश्तैनी मकान भी बेच दिया।

153. छाती/कलेजे पर साँप लोटना-ईर्ष्या से हृदय जल उठना।
किसी की उन्नति की चर्चा सुनकर उसकी छाती पर साँप लोटने लगते हैं।

164. जमीन पर पैर न रखना-बहुत अभिमान करना।
प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के बाद उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे हैं।

155. जहर उगलना-कठोर, जली-कटी, लगनेवाली बात कहना।
उन्हें जब देखो, तब जहर उगलते रहते हैं। उन्हें किसी की उन्नति तनिक भी नहीं सुहाती।

156. जली-कटी कहना-व्यंग्यपूर्ण बात करना।
जब देखो जली-कटी कहते रहते हो। कभी तो प्रेम के साथ बोला करो।

157. जहाज का पंछी होना—ऐसी मजबूरी होना, जिससे वही आश्रय लेने के लिए बाध्य होना पड़े।
बहुत ढूँढने पर भी मुझे कहीं स्थान नहीं मिला। जहाज के पंछी की तरह मैं फिर लौटकर वहीं आ गया।

158. जी-जान लड़ाना-बहुत परिश्रम करना।
हमने तो कार्यक्रम की सफलता के लिए जी-जान लड़ा दी, किन्तु उन्हें कोई बात पसन्द ही नहीं आती।

159. जीती मक्खी निगलना-अहित की बात स्वीकार करना।
मोहना को भली प्रकार ज्ञात था कि घर और वर दोनों उसके अनुरूप नहीं हैं, फिर भी माता-पिता की विवशता देखकर उसने जीती मक्खी को निगल लिया।

160. जोड़-तोड़ करना–दाँव-पेंचयुक्त उपाय करना।
किसी भी तरह जोड़-तोड़ करके रमेश उत्तीर्ण हो ही गया।

161. झख मारना-व्यर्थ समय गँवाना/विवश होना।
i. तुम कब से बैठे झख मार रहे हो, जाकर स्नान क्यों नहीं करते?
ii. झख मारकर उसे रुपया देना ही पड़ा।

162. टस से मस न होना—विचलित न होना।
कितनी ही विपत्तियाँ आईं, किन्तु रमेश टस से मस नहीं हुआ। अन्ततः जीत उसी की हुई।

163. टका-सा जवाब देना-साफ इनकार करना।
मैंने कितनी ही बार उसकी सहायता की, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर उसने मुझे टका-सा जवाब देने में तनिक भी संकोच नहीं किया।

164. टपक पड़ना-सहसा बिना बुलाए आ पहुँचना।।
अरे! अभी तुम्हारी ही बात हो रही थी, तुम एकदम कहाँ से टपक पड़े?

165. टाँग अड़ाना-दखल देना।
उसे कुछ आता-जाता तो है नहीं, किन्तु टाँग हर बात में अड़ाता रहता है।

166. टाट उलटना-दिवालिया होने की सूचना देना।
लोगों ने समय-समय पर उसकी बहुत आर्थिक मदद की, किन्तु जब लोगों ने अपनी रकम उससे माँगी तो उसने टाट उलट दिया।

167. टेढ़ी खीर-कठिन कार्य।
परीक्षा में प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करना टेढ़ी खीर है।

168. टोपी उछालना-इज्जत से खिलवाड़ करना।
कैसे भी प्रिय व्यक्ति को कोई अपनी टोपी उछालने की इजाजत नहीं दे सकता।

169. ठकुरसुहाती करना/कहना-चापलूसी करना।
स्वाभिमानी व्यक्ति भूखा मर जाता है, किन्तु ठकुरसुहाती नहीं करता।

170. ठगा-सा रह जाना—चकित रह जाना।
साईं बाबा के चमत्कार देखकर मैं ठगा-सा रह गया।

171. ठिकाने लगाना-मार डालना।
तुम्हारा मामला है, वरना उस दुष्ट को मैं कब का ठिकाने लगा देता।

172. ठोकर खाना-असावधानी के कारण नुकसान उठाना।
रमेश हमेशा सुरेश को समझाता रहता था कि यदि बुरी राह चलोगे तो ठोकर खाओगे, लेकिन सुरेश न माना।

173. डूबते को तिनके का सहारा-संकट में छोटी वस्तु से भी सहायता मिलना।
भूख के कारण उसके प्राण निकले जा रहे थे। तभी किसी ने उसे एक रोटी देकर मानो डूबते को तिनके का सहारा दिया।

174. ढाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना-सार्वजनिक मत के विरुद्ध कार्य करना।
उससे हमारी मित्रता सम्भव नहीं है। वह सदैव ढाई ईंट की मस्जिद अलग बनाता रहता है।

175. ढिंढोरा पीटना-बात का खुलेआम प्रचार करना।
रमा के पेट में कोई बात नहीं पचती, वह तुरन्त बात का ढिंढोरा पीट देती है।

176. ढोल की पोल/ढोल के भीतर पोल—बाहरी दिखावे के पीछे छिपा खोखलापन।
ये स्वामी लोग व्याख्यान तो बहुत सुन्दर देते हैं, परन्तु उनके जीवन को निकट से देखने पर पता चलता है कि ढोल के भीतर भी पोल है।

177. तकदीर फूट जाना—भाग्यहीन होना।
युवावस्था में विधवा होने पर स्त्री की तो मानो तकदीर ही फूट जाती है।

178. तलवे चाटना-खुशामद करना। रमेश में तनिक भी स्वाभिमान नहीं है।
वह सदैव अपने अधिकारी के तलवे चाटता रहता है।

179. तिल का ताड़ करना/बनाना-छोटी-सी बात को बड़ी बनाना।
बात तो बहुत छोटी-सी थी, किन्तु उन्होंने तिल का ताड़ करके आपस में झगड़ा करा दिया।

180. तीन-तेरह करना-गायब करना, तितर-बितर करना।
छापा पड़ने से पहले ही लालाजी ने अपने सारे कागजों को तीन-तेरह कर दिया।

181. तीन-पाँच करना-बहाना बनाना, इधर-उधर की बात करना।
सच-सच बताओ कि बात क्या है? तीन-पाँच करोगे तो अच्छा न होगा।

182. तोते के समान रहना-बात के सार को समझे बिना उसे रट लेना।
वर्तमान शिक्षा-प्रणाली छात्रों को केवल तोते के समान रटना सिखाती है।

183. थाली का बैंगन होना-पक्ष बदलते रहना।
उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करता। वह तो थाली का बैंगन है। कभी इस ओर हो जाता है और कभी उस ओर।

184. थूककर चाटना-त्यक्त वस्तु को पुनः ग्रहण करना, कही हुई बात पर अमल न करना।
पहले तो आवेश में तुमने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब उसके लिए पुनः आवेदन-पत्र देकर थूककर चाटते क्यों हो?

185. दंग रह जाना—आश्चर्यचकित होना।
बाबा के चमत्कारों को देखकर मैं तो दंग रह गया।

186. दाँत खट्टे करना-हरा देना।
भारतीय सैनिकों ने कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

187. दाँत पीसकर रह जाना-क्रोध रोक लेना।
रमेश की बदतमीजी पर पिताजी को क्रोध तो बहुत आया, किन्तु अपने मित्रों के सामने वे दाँत पीसकर। रह गए।

188. दाँतों तले उँगली दबाना-आश्चर्यचकित होना।
महारानी लक्ष्मीबाई के रणकौशल को देखकर अंग्रेजों ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

189. दाने-दाने को तरसना-भूखों मरना।
जिन लोगों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया, उनके बच्चे आज दाने-दाने को तरस रहे हैं।

190. दाल न गलना-युक्ति में सफल न होना।
जब अधिकारी के सामने लिपिक की दाल न गली तो वह निराश होकर लौट आया।

191. दाल में काला होना-दोष छिपे होने का सन्देह होना।
पड़ोसी के घर पुलिस को आया देखकर पिता ने पुत्र से कहा-मुझे तो दाल में कुछ काला लगता है।

192. दिल बाग-बाग होना अत्यधिक प्रसन्न होना।
आपके घर की सजावट देखकर मेरा दिल बाग-बाग हो गया।

193. दिल भर आना-दुःखी होना।
जाड़े की रात में भिखारिन और उसके बच्चे को ठिठुरते हुए देखकर मेरा दिल भर आया।

194. दूध का दूध पानी का पानी-सही और उचित न्याय।।
विक्रमादित्य के राज्य में प्रजा सब प्रकार से सन्तुष्ट थी; क्योंकि उनके यहाँ दूध का दूध पानी का पानी किया जाता था।

195. दूध की नदियाँ बहाना-दूध का जरूरत से अधिक उत्पादन करना/धन-धान्य से परिपूर्ण होना।
श्वेत क्रान्ति भी देश में दूध की नदियाँ न बहा सकी।

196. दूध की मक्खी की तरह निकाल देना-अवांछित, अनुपयोगी व्यक्ति को व्यवस्था से अलग करना।
रामसिंह ने लालाजी की जीवनभर सेवा की, किन्तु उन्होंने बुढ़ापे में उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल दिया।

197. दुम दबाकर चल देना-डरकर हट जाना। पुलिस की ललकार सुनकर चोर दुम दबाकर भाग गए।

198. देवता कूच कर जाना—अत्यन्त भयभीत हो जाना, होश गायब हो जाना।
जंगल में अचानक सिंह को अपने सामने देखकर मनमोहन के तो देवता कूच कर गए।

199. दो नावों पर पैर रखना-दो अलग-अलग पक्षों से मिलकर रहना।
जो व्यक्ति दो नावों पर पैर रखकर चलते हैं, वे ठीक मझधार में डूबते हैं।

200. दो टूक बात कहना–स्पष्ट कहना। मोहन किसी से भी नहीं डरता।
वह हर व्यक्ति के सामने उचित बात को दो टूक कह देता है।

201. दो दिन का मेहमान होना-थोड़े दिन रहना।
वकील साहब का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। वे अब दो दिन के मेहमान हैं। इसलिए सब मिलकर उनकी सेवा करें।

202. धूप में बाल सफेद नहीं होना-अनुभवी होना।
तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते, मेरे बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं।

203. नकेल हाथ में होना-नियन्त्रण अपने हाथ में होना।।
चिन्ता न करो, उसकी नकेल मेरे हाथ में है। वह तुम्हारा विरोध नहीं कर सकता।

204. नजर लग जाना—बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना।
नजर लगने के भय से माताएँ अपने बच्चों के माथे पर दिठौना काजल का टीका. लगा देती हैं।

205. नजर से गिरना-प्रतिष्ठा खो देना।
कुकर्मों के प्रकट होने के बाद प्रवीण सभी की नजरों से गिर गया।

206. नदी-नाव संयोग-आश्रय-आश्रित का सम्बन्ध।
कर्मचारी के हितों के नाम पर यूनियन के नेता फैक्ट्री में तालाबन्दी की बात कर रहे हैं, अब भला कोई उनसे पूछे फैक्ट्री और कर्मचारी में नदी-नाव का संयोग होता है, फिर तालाबन्दी से कर्मचारियों का कल्याण कैसे हो सकता है।

207. नमक-मिर्च लगाना-बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
कुछ लोगों की आदत होती है कि वे हर बात को नमक-मिर्च लगाकर ही कहते हैं।

208. नमकहरामी करना-कृतघ्नता करना।
यदि कोई व्यक्ति हमारी भलाई करता है तो हमें उसका कृतज्ञ होना चाहिए, किन्तु बहुत-से व्यक्ति सरासर नमकहरामी करते हैं।

209. नहले पे दहला चलना-अकाट्य दाँव चलना।
बड़ी संख्या में सवर्णों को विधानसभा-टिकट देकर सुश्री मायावती ने ऐसा नहले पे दहला चला कि उन पर दलित राजनीति करने का आरोप लगानेवाले चारों खाने चित्त हो गए।

210. नाक कटना-बेइज्जती होना।
बेटे के चोरी करते पकड़े जाने पर निखिल के पिता की नाक कट गई।

211. नाक कटने से बचाना-बेइज्जत होने से बचाना।
माता-पिता बच्चों के अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्धों को सहज रूप में स्वीकार करके ही अपनी नाक कटने से बचा सकते हैं।

212. नाक का बाल-अत्यन्त अन्तरंग, प्रिय।
अपनी नाक का बाल बने घोटाले में फँसे विधायक को पार्टी से कैसे निकालें, मुख्यमन्त्री के सामने अब यह एक बड़ी समस्या है।

213. नाक नीची कराना–बेइज्जती कराना।
अखिल ने कार चोरी का कार्य करके समाज में अपने पिता की नाक नीची करा दी।

214. नाक बचाना-इज्जत बचाना।
आजकल के बच्चे अपने माँ-बाप की नाक बचाए रखें, यही उनकी सबसे बड़ी सेवा और भक्ति है।

215. नाक रगड़ना-किसी बात के लिए अत्यधिक खुशामद और क्षमा-याचना करना।
रावण ने हनुमान् से कहा कि राम आकर मेरे चरणों में अपनी नाक रगड़े तो वह सीता को वापस कर देगा।

216. नाक रख लेना-इज्जत रख लेना।
मुकेश ने अपने बड़े भाई की बात मानकर उनकी नाक रख ली।

217. नाकों चने चबाना-बहुत तंग करना।
अगर हम और कहीं होते तो लोगों को नाकों चने चबवा देते।

218. नौ-दो-ग्यारह होना—गायब हो जाना।
पुलिस को आता देखकर गिरहकट नौ-दो-ग्यारह हो गए।

219. पगड़ी उछालना-बेइज्जती करना।
किसी इज्जतदार आदमी की पगड़ी उछालना इंसानियत की बात नहीं है।

220. पत्ता काटना-मामले या पद से हटा देना।
अपने मण्डल दौरे पर आई मुख्यमन्त्री ने सभी दोषी अधिकारियों का पत्ता काट दिया।

221. पत्थर की लकीर-अमिट बात।
महापुरुषों की बातें पत्थर की लकीर के समान अटल होती हैं।

222. पर्दा डालना-दुर्गुणों को छिपाना।
बच्चे तभी बिगड़ते हैं, जब माँ-बाप उनकी गलतियों पर पर्दा डालते हैं।

223. पसीना-पसीना होना-पसीने से तर-ब-तर होना।
भयंकर गर्मी में कार्य करते हुए मजदूर पसीना-पसीना हो गया।

224. पहाड़ टूट पड़ना—मुसीबतें आना।
राम के पिता की मृत्यु से उसके परिवार पर मानो पहाड़ टूट पड़ा।

225. पाँचों उँगली घी में होना-आनन्द-ही-आनन्द होना।
दीपक की मम्मी के आ जाने पर आजकल उसकी पाँचों उँगली घी में हैं।

226. पानी उतर जाना-इज्जत समाप्त हो जाना।
रमेश की चोरी पकड़े जाने के बाद से जनता की निगाह में उसका पानी उतर गया।

227. पानी-पानी होना–शर्मिन्दगी अनुभव होना।
दरवाजे की खटखटाहट सुनकर अंशु भीतर से ही बड़बड़ाती आई कि इन भिखारियों ने भी नाक में दम कर रखा है, किन्तु दरवाजे पर अपने ससुर को खड़ा देखकर बेचारी पानी-पानी हो गई।

228. पानी फेर देना—निराश कर देना।
अनमोल ने विद्यालय छोड़कर अपने पिता की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

229. पापड़ बेलना–कष्ट झेलना।
राम को नौकरी प्राप्त करने के लिए बड़े पापड़ बेलने पड़े।

230. पीठ दिखाना-हारकर भाग जाना।
भारतीय सेना के सम्मुख पाकिस्तानी सिपाही पीठ दिखाकर भाग गए।

231. पेट में दाढ़ी होना—कम अवस्था में ही अधिक बुद्धिमान्/चतुर-चालाक होना।
श्याम की आयु केवल पन्द्रह साल की है, किन्तु वह अपने चाचा से राजनीति की चर्चा कर रहा था। यह देखकर वहाँ बैठे एक व्यक्ति ने कहा कि इस लड़के के पेट में तो दाढ़ी है।

232. पौ बारह होना-खूब लाभ प्राप्त होना।
आपात्काल से पहले गल्ला-व्यापारियों के पौ बारह हो रहे थे।

233. प्यासा ही कुएँ के पास जाता है—जरूरतमन्द ही अपनी जरूरत की वस्तु के स्रोत को ढूँढता हुआ उस तक पहुँचता है।
बेटा! बाजार में एक से बढ़कर एक पुस्तक उपलब्ध है; वहाँ जाना तो पड़ेगा ही; क्योंकि प्यासा ही कुएँ के पास जाता है, कुआँ स्वयं चलकर उसके पास नहीं आता।

234. प्राण हथेली पर रखना-मृत्यु के लिए तैयार रहना।
भारतीय सैनिक प्राण हथेली पर रखकर अपने शत्रुओं का सामना करते हैं।

235. फुलझड़ी छोड़ना-हँसी की बात कहना।
तुम तो बात-बात में फुलझड़ी छोड़ते हो। कभी तो गम्भीरता से बात किया करो।

236. फूटी आँखों न देखना-ईर्ष्या रखना।
अधिकतर विमाताएँ अपने सौतेले पुत्र को फूटी आँखों नहीं देख सकतीं।

237. फूला न समाना-अत्यधिक प्रसन्न होना।
अपनी प्यारी बहन मीरा के मिलने पर विमल फूला नहीं समाया।

238. बगुलाभगत होना–साधु के वेश में ठग, पाखण्डी।
आजकल अनेक लोग गेरुए वस्त्र धारण करके बगुलाभगत बने बैठे हैं।

239. बगलें झाँकना-निरुत्तर होना।
अध्यापक के प्रश्न को सुनकर तथा उत्तर समझ में न आने पर छात्रगण बगलें झाँकने लगे।

240. बाँछे खिल जाना—प्रसन्नता से भर उठना।।
अपनी प्रोन्नति का समाचार सुनकर शशांक की बाँछे खिल गईं।

241. बाल की खाल निकालना–बारीकी से जाँच-पड़ताल करना।
मोहन का स्वभाव ऐसा ही है कि वह हर बात में बाल की खाल निकालता है।

242. बाल-बाँका न होना-कुछ भी हानि न पहुँचना।
इस मुकदमे में तुम चाहे कितना ही धन व्यय करो, किन्तु उनका बाल-बाँका नहीं हो सकता।

243. बालू की दीवार-दुर्बल आधार।
बालू की दीवार पर जीवन का महल बनाना उचित नहीं है।

244. बिजली गिरना-घोर विपत्ति आना।
सरला के जवान बेटे की मौत क्या हुई, उस पर तो मानो बिजली गिर गई।

245. बीड़ा उठाना-कोई जोखिम भरा काम करने की जिम्मेदारी लेना।
फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने युद्ध-क्षेत्र में घायलों की सेवा का बीड़ा उठाया।

246. बे-पर की उड़ाना-झूठी बात फैलाना।
यद्यपि मीनू का परीक्षाफल नहीं आया था, किन्तु उसने अपनी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की घोषणा करके बे-पर की उड़ा दी।

247. बे-सिर-पैर की बात करना—निरर्थक बात करना।
उन्हें काम तो कुछ है नहीं, हर समय बे-सिर-पैर की बात करते हैं।

248. बोटी-बोटी फड़कना-जोश आना।
कवि-सम्मेलन में वीर रस की कविताओं को सुनकर श्रोताओं की बोटी-बोटी फड़कने लगी।

249. भण्डा फूटना-भेद खुल जाना, रहस्य प्रकट हो जाना।
जनसभा में जब नेताजी के भ्रष्टाचार का भण्डा फूट गया तो वे चुपचाप ही वहाँ से खिसक लिए।

250. भीगी बिल्ली बनना-भय या स्वार्थवश अति नम्र होना।
घर पर रहकर मूंछों पर ताव देनेवाले मुरलीधर कार्यालय में अपने अधिकारी के सामने भीगी बिल्ली बने रहते हैं।

251. मक्खन लगाना-चापलूसी करना।
अफसरों को मक्खन लगाना कोई शोभित से सीखे, जिसने सालभर में ही प्रोन्नति प्राप्त कर ली।

252. मक्खियाँ मारना-बेकार बैठे रहना।
जब से यहाँ आया हूँ, बैठा-बैठा मक्खियाँ मारा करता हूँ।

253. मन के मोदक खाना-काल्पनिक बातों से प्रसन्न होना।
उनके पास पैसा तो है नहीं, वे मन के मोदक खाकर ही प्रसन्न हो लेते हैं।

254. मन खट्टा हो जाना–मन घृणा से भर जाना।
उधर तो दीपक के पिता की लाश पड़ी थी, इधर उसका छोटा भाई बँटवारे के लिए झगड़ रहा था। यह देखकर उसके प्रति दीपक का मन खट्टा हो गया।

255. मन मारकर बैठना-विवशता के कारण निराश होना।
हामिद के पास तीन पैसे थे, उनसे वह मिठाई कैसे खरीदता। बेचारा, साथियों को मिठाई खाता देख मन मारकर रह गया।

256. मन्त्र फॅकना-सफल युक्ति का प्रयोग करना।
विवेकीजी पता नहीं, अपने छात्रों में ऐसा कौन-सा मन्त्र फूंकते हैं, कि कोई भी छात्र प्रथम श्रेणी से कम उत्तीर्ण ही नहीं होता।

257. मिट्टी के मोल बिकना-अत्यन्त कम मूल्य पर बिकना।
विवश होकर प्रेमचन्दजी को अपने उपन्यास प्रकाशकों के हाथ मिट्टी के मोल बेचने पड़े।

258. मिट्टी में मिलाना–पूरी तरह नष्ट कर देना।
कुपुत्र अपने पूर्वजों के यश को मिट्टी में मिला देते हैं।

259. मुँह पर कालिख लगना-कलंक लगना।
चन्दर के बेटे के चोरी के अपराध में रंगे हाथों पकड़े जाने पर उसके मुँह पर कालिख लग गई।

260. मुँह की खाना-परास्त होना, अपमानित होना।
सतपाल से बड़े-बड़े पहलवानों ने मुँह की खाई।

261. मुँह में पानी भर आना-जी ललचाना।
मिठाइयों का नाम सुनते ही उसके मुँह में पानी भर आया।

262. मुट्ठी गर्म करना-रिश्वत देना।
लिपिक की मुट्ठी गर्म करने पर ही लाभचन्द को चीनी का परमिट मिल सका।

263. मँखें नीची हो जाना-अपमानित होना।
बेटी के साँवले दूल्हे से शादी करने से इनकार कर देने पर चौधरी की मूंछे नीची हो गईं।

264. मूंछों पर ताव देना-शक्ति पर घमण्ड करना।
रमेश के पिता एक बाहुबली सांसद हैं; अत: वह मूंछों पर ताव दिए फिरता है।

265. मैदान मारना-सफलता/जीत प्राप्त करना।
राजेन्द्र अग्रवाल चुनाव का मैदान मारकर संसद पहुँच ही गए हैं।

266. रंग उतरना-रौनक खत्म होना।
जब से मेले में दो गुटों में झगड़ा हुआ है, मेले का रंग ही उतर गया है।

267. रंग जमाना-धाक जमाना।
किसी समय फिल्मी दुनिया में अमिताभ बच्चन ने अपना रंग जमा रखा था।

268. रंग में भंग पड़ना-आनन्द में विघ्न होना।
सिनेमाहाल में झगड़ा होने पर दर्शकों के रंग में भंग पड़ गया।

269. राई से पर्वत करना-छोटी बात को बहुत बढ़ा देना।
साम्प्रदायिक दंगों के समय समाज-विरोधी तत्त्व राई-जैसी बातों को पर्वत बनाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं।

270. रास्ते का काँटा बनना-मार्ग में बाधा डालना।
देश की प्रगति के रास्ते में काँटा बननेवालों को समाप्त कर देना चाहिए।

271. रोंगटे खड़े होना-भयभीत होना, हर्ष/आश्चर्य से पुलकित होना।
अनियन्त्रित बस जब पहाड़ी के किनारे एक पेड़ से रुक गई और यात्रियों ने पहाड़ी से नीचे देखा तो खाई की गहराई देखकर उनके रोंगटे खड़े हो गए।

272. लकीर का फकीर होना-पुरानी नीति पर चलना।
आधुनिक विज्ञान के युग में लकीर का फकीर होना समझदारी का प्रमाण नहीं है।

273. लाल-पीला होना क्रोधित होना।
रामू से दूध बिखर जाने पर उसकी माँ उस पर खूब लाल-पीली हुई।

274. लुटिया डुबोना-प्रतिष्ठा नष्ट करना, काम बिगाड़ देना, कलंक लगाना।

उसने तो दस-बारह रुपये का ही नुकसान किया था, तुमने तो लुटिया ही डुबो दी।

275. लोहा लोहे को काटता है-कठोर बनकर ही कठोरता का समाधान किया जा सकता है।
कश्मीरियों ने जब अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं हथियार उठाए, तब जाकर वहाँ कुछ शान्ति स्थापित हुई; क्योंकि वे जानते थे कि लोहा ही लोहे को काटता है।

276. लोहा लेना-साहसपूर्वक सामना करना।
हमें अपने शत्रुओं से डटकर लोहा लेना चाहिए।

277. लोहे के चने चबाना-अत्यधिक कठिन काम करना।
किसी भी व्यापार को आरम्भ करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को लोहे के चने चबाने पड़ते हैं, तब कहीं सफलता मिलती है।

278. श्रीगणेश करना-कार्य आरम्भ करना।
इस शुभ कार्य का श्रीगणेश तुरन्त कर देना चाहिए।

279. सफेद झूठ-बिल्कुल झूठ।
उसके प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने का समाचार सफेद झूठ है।

280. सिर उठाना–विरोध में खड़े होना, बगावत करना।
भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख कंस जैसे अनेक दुराचारियों ने सिर उठाया, जो उनके द्वारा मार दिए गए।

281. सिर खाना-परेशान करना।
इस समय मैं अपनी परीक्षा की तैयारी में लगा हूँ, बार-बार प्रश्न पूछकर मेरा सिर मत खाओ।

282. सिर खुजलाना-सोच में पड़ जाना, अनिर्णय की स्थिति में होना।
परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण पूछे जाने पर निकेत सिर खुजलाने लगा कि क्या जवाब दे।

283. सितारा चमकना-उन्नति पर होना।।
हमारे वैज्ञानिकों के प्रयत्नों से विज्ञान के क्षेत्र में भी हमारा सितारा चमक रहा है।

284. सिर पर सवार होना-कड़ाई से निगरानी करना।
वह व्यक्ति मेरे काम को बार-बार टालता रहता है। अब तो उसके सिर पर सवार होकर ही काम करवाया जा सकता है।

285. सिर माथे पर चढ़ाना/लेना-सादर स्वीकार करना।
जुम्मन ने भरी पंचायत में खड़े होकर कहा कि मैं पंचों का हुक्म सिर माथे पर चढ़ाऊँगा।

286. सीधी उँगली से घी नहीं निकलता-बेशर्म लोगों से काम कराने के लिए कठोर टेढ़ा. होना ही पड़ता है।
लाख अनुनय-विनय के बाद भी जब सोमनाथ का फंड न मिला तो वह समझ गया कि सीधी उँगली से घी नहीं निकलनेवाला।

287. सीधे मुँह बात न करना-अकड़कर बोलना।
सरकारी कार्यालय के लिपिक सीधे मुँह बात ही नहीं करते।

288. सौ बात की एक बात-सार तत्त्व।
सौ बात की एक बात है कि मैं आज सिनेमा नहीं जा सकता। मुझे जरूरी काम निपटाने हैं।

289. साँप-छछंदर की गति होना-दुविधा में पड़ना।
रावण के प्रस्ताव से मारीच की गति साँप-छडूंदर की-सी हो गई।

290. हथियार डाल देना-हिम्मत हार जाना, समर्पण कर देना।
कलिंग की सेना ने अन्तिम साँस रहने तक अशोक के सामने हथियार नहीं डाले।

291. हवाई किले बनाना/हवा में किले बनाना-काल्पनिक योजनाएँ बनाना।
वह बुद्धि जो हवा में किले बनाती रहती थी, अब इस गुत्थी को भी न सुलझा सकती थी।

292. हवा से बातें करना-बहुत तेज गति से दौड़ना।
चेतक राणा के सवार होते ही हवा से बातें करने लगता था।

293. हाथ मलना-अपनी विवशता व्यक्त करना।
उसने मेरा पर्स छीना और भाग गया। मैंने बहुत शोर मचाया, किन्तु कोई भी सहायता के लिए न आया। अन्त में मैं हाथ मलता रह गया।

294. हाँ में हाँ मिलाना-चापलूसी करना।
स्वार्थी लोग अधिकारियों की हाँ में हाँ मिलाकर अपना काम निकाल लेते हैं।

295. हाथ के तोते उड़ना-अचानक किसी अनिष्ट के कारण स्तब्ध रह जाना।
अपने पुत्र के दुर्घटना में मारे जाने का समाचार सुनकर मानो गिरधर के हाथ के तोते उड़ गए।

296. हाथ पर हाथ रखकर बैठना-निष्प्रयत्न निष्क्रिय. होना।
हाथ पर हाथ रखकर बैठने से तो किसी की समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

297. हाथ-पाँव मारना-प्रयत्न करना।
आप चाहे कितने भी हाथ-पाँव मार लें, किन्तु आपकी समस्या का समाधान बिना सुविधा-शुल्क के नहीं हो सकता।

298. हाथ-पाँव फूलना-भय से घबरा जाना।
डाकुओं को देखकर यात्रियों के हाथ-पाँव फूल गए।

299. हाथ पीले करना-विवाह करना।
कमला अपने पति की मृत्यु के पश्चात् बड़ी मुश्किल से अपनी बेटी के हाथ पीले कर सकी।

300. हाथ को हाथ नहीं सूझना-बहुत अँधेरा होना।
हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा है, वहाँ कैसे जाऊँ?

301. हाथ मलते रह जाना-पश्चात्ताप होना।
पहले तो परिश्रम नहीं किया, अब अनुत्तीर्ण हो जाने पर हाथ मलने से क्या होता है।

302. हिलोरें मारना-तरंगित होना, उत्साहित होना।
समुद्र को हिलोरें मारते देखना सभी को आनन्दित करता है।

303. हुक्का भरना–सेवा करना, जी हुजूरी करना।
साहब ने जब अपने मातहत से अपने विरुद्ध षड्यन्त्र रचने के विषय में पूछा तो वह गिड़गिड़ाकर बोला-साहब हमें तो उम्रभर आपका हुक्का भरना है, भला मैं आपके विरुद्ध षड्यन्त्र की बात सोच भी कैसे सकता हूँ।

304. होश ठिकाने होना-अक्ल ठिकाने होना।
आपात्काल में बड़ी-बड़ों के होश ठिकाने आ गए।

305. होश उड़ जाना—घबरा जाना।
सामने से शेर को आता देखकर शिकारी के होश उड़ गए।

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 11
Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 11

लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ – Hindi Loktokis with Meanings

1. अन्त बुरे का बुरा-बुरे का परिणाम बुरा होता है।
2. अन्त भला सो भला-परिणाम अच्छा रहता है तो सब-कुछ अच्छा कहा जाता है।
3. अन्धा क्या चाहे दो आँखें—प्रत्येक व्यक्ति अपनी उपयोगी वस्तु को पाना चाहता है।
4. अन्धी पीसे कुत्ता खाय-परिश्रमी के असावधान रहने पर उसके परिश्रम का फल निकम्मों को मिल जाता है।
5. अन्धे के आगे रोए अपने नैन खोए-जिसमें सहानुभूति की भावना न हो, उसके सामने दुःख-दर्द की बातें करना व्यर्थ है।
6. अन्धों में काना राजा-मूों के समाज में कम ज्ञानवाला भी सम्मानित होता है।
7. अक्ल बड़ी या भैंस-शारीरिक शक्ति की अपेक्षा बुद्धि अधिक बड़ी होती है।
8. अधजल गगरी छलकत जाय-अधूरे ज्ञानवाला व्यक्ति ही अधिक बोलता डींगें हाँकता. है।
9. अपना पैसा खोटा तो परखनेवाले का क्या दोष-अपने अन्दर अवगुण हों तो दूसरे बुरा कहेंगे ही।
10. अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग-सबका अपनी-

अपनी अलग बात करना।
11. अपनी करनी पार उतरनी-अपने बुरे कर्मों का फल भुगतना ही होता है।
12. अपने घर पर कुत्ता भी शेर होता है-अपने स्थान पर निर्बल भी अपने को बलवान् प्रकट करता है।
13. अपना हाथ जगन्नाथ-अपना कार्य स्वयं करना।
14. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता-अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।
15. अशर्फियाँ लुटें और कोयलों पर मुहर-मूल्यवान् वस्तुओं की उपेक्षा करके तुच्छ वस्तुओं की चिन्ता करना।
16. आँख के अन्धे गाँठ के पूरे—मूर्ख और हठी।
17. आँखों के अन्धे, नाम नयनसुख-गुणों के विपरीत नाम होना।।
18. आई मौज फकीर की दिया झोपड़ा फूंक-वह व्यक्ति, जो किसी भी वस्तु से मोह नहीं करता है।
19. आगे कुआँ पीछे खाई—विपत्ति से बचाव का कोई मार्ग न होना।
20. आगे नाथ न पीछे पगहा-कोई भी जिम्मेदारी न होना।

21. आटे के साथ घुन भी पिसता है-अपराधी के साथ निरपराधी भी दण्ड प्राप्त करता है।
22. आधी तज सारी को धाए, आधी मिले न सारी पाए-लालच में सब-कुछ समाप्त हो जाता है।
23. आप भला सो जग भला-अपनी नीयत ठीक होने पर सारा संसार ठीक लगता है।
24. आम के आम गुठलियों के दाम-दुहरा लाभ उठाना।
25. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास-किसी महान कार्य को करने का लक्ष्य बनाकर भी निम्न स्तर के काम में लग

जाना।
26. आसमान से गिरा खजूर पर अटका-एक विपत्ति से छूटकर दूसरी में उलझ जाना।
27. उठी पैंठ आठवें दिन लगती है—एक बार व्यवस्था भंग होने पर उसे पुन: कायम करने में समय लगता है।
28. उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई-निर्लज्ज बन जाने पर किसी की चिन्ता न करना।
29. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे-अपना दोष स्वीकार न करके उल्टे पूछनेवाले पर आरोप लगाना।
30. ऊधो का लेना न माधो का देना–स्पष्ट व्यवहार करना।
31. एक और एक ग्यारह होना—एकता में शक्ति होती है।
32. एक चुप सौ को हराए-चुप रहनेवाला अच्छा होता है।
33. एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत-स्वास्थ्य का अच्छा रहना सभी सम्पत्तियों से श्रेष्ठ होता है।
34. एक तो करेला, दूसरे नीम चढ़ा-अवगुणी में और अवगुणों का आ जाना।
35. एक तो चोरी दूसरी सीनाजोरी-गलती करने पर भी उसे स्वीकार न करके विवाद करना।
36. एक थैली के चट्टे-बट्टे-सबका एक-सा होना।
37. एक पन्थ दो काज-एक ही उपाय से दो कार्यों का करना।
38. एक हाथ से ताली नहीं बजती-झगड़ा एक ओर से नहीं होता।
39. एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं—एक ही स्थान पर दो विचारधाराएँ नहीं रह सकतीं।
40. एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय-प्रभावशाली एक ही व्यक्ति के प्रसन्न कर लेने पर सबको प्रसन्न करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। सबको प्रसन्न करने के प्रयास में कोई भी प्रसन्न नहीं हो पाता।

41. ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर–कठिन कार्य में उलझकर विपत्तियों से घबराना बेकार है।
42. ओछे की प्रीत बालू की भीत-नीच व्यक्ति का स्नेह रेत की दीवार की तरह अस्थायी क्षणभंगुर. होता है।
43. कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर संयोगवश कभी कोई किसी के काम आता है तो कभी कोई दूसरे के।
44. कभी घी घना, कभी मुट्ठीभर चना, कभी वह भी मना-जो कुछ मिले, उसी से सन्तुष्ट रहना चाहिए।
45. करघा छोड़ तमाशा जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय-अपना काम छोड़कर व्यर्थ के झगड़ों में फँसना हानिकर होता है।
46. कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली-दो असमान स्तर की वस्तुओं का मेल नहीं होता।
47. कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा; भानुमती ने कुनबा जोड़ा-इधर-उधर से उल्टे-सीधे प्रमाण एकत्र कर अपनी बात सिद्ध करने का प्रयत्न करना।
48. कागज की नाव नहीं चलती-बिना किसी ठोस आधार के कोई कार्य नहीं हो सकता।
49. कागा चला हंस की चाल-अयोग्य व्यक्ति का योग्य व्यक्ति जैसा बनने का प्रयत्न करना।
50. काठ की हाँड़ी केवल एक बार चढ़ती है-कपटपूर्ण व्यवहार बार-बार सफल नहीं होता।
51. का बरसा जब कृषि सुखाने-उचित अवसर निकल जाने पर प्रयत्न करने का कोई लाभ नहीं होता।
52. को नृप होउ हमहिं का हानी—राजा चाहे कोई भी हो, प्रजा की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता। प्रजा, प्रजा ही रहती है।
53. खग जाने खग ही की भाषा–एकसमान वातावरण में रहनेवाले अथवा प्रवृत्तिवाले एक-दूसरे की बातों के सार शीघ्र ही समझ लेते हैं।

54. खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है—एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है।
55. खोदा पहाड़ निकली चुहिया-अधिक परिश्रम करने पर भी मनोवांछित फल न मिलना।
56. गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास-देश-काल-वातावरण के अनुसार स्वयं को ढाल लेना।
57. गुड़ न दे, गुड़ जैसी बात तो करे–चाहे कुछ न दे, परन्तु वचन तो मीठे बोले।
58. गुड़ खाए, गुलगुलों से परहेज-किसी वस्तु से दिखावटी परहेज।
69. घर का भेदी लंका ढावै-अपना ही व्यक्ति धोखा देता है।
60. घर का जोगी जोगना,आन गाँव का सिद्ध-गुणवान् व्यक्ति की अपने स्थान पर प्रशंसा नहीं होती।

61. घर की मुर्गी दाल बराबर-घर की वस्तु का महत्त्व नहीं समझा जाता।
62. घर खीर तो बाहर खीर-यदि व्यक्ति अपने घर में सुखी और सन्तुष्ट है तो उसे सब जगह सुख और सन्तुष्टि का अनुभव होता है।
63. घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने-झूठी शान दिखाना।
64. घी कहाँ गिरा, दाल में व्यक्ति का स्वार्थ के लिए पतित होना।
65. घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या-संकोचवश पारिश्रमिक न लेना।
66. घोड़े को लात, आदमी को बात-घोड़े के लिए लात और सच्चे आदमी के लिए बात का आघात असहनीय होता है।
67. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए-लालची होना।
68. चलती का नाम गाड़ी—जिसका नाम चल जाए वही ठीक।

69. चादर के बाहर पैर पसारना—हैसियत क्षमता. से अधिक खर्च करना।
70. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात-सुख क्षणिक ही होता है।
71. चिड़िया उड़ गई फुरै-अभीष्ट व्यक्ति अथवा वस्तु का प्राप्ति से पूर्व ही गायब हो जाना/मृत्यु हो जाना।
72. चिराग तले अँधेरा-अपना दोष स्वयं को दिखाई नहीं देता।
73. चोर-चोर मौसेरे भाई-समाजविरोधी कार्य में लगे हुए व्यक्ति समान होते हैं।
74. चूहे का जाया बिल ही खोदता है-बच्चे में पैतृक गुण आते ही हैं।
75. चोरी का माल मोरी में जाता है—छल की कमाई यों ही समाप्त हो जाती है।
76. छछून्दर के सिर पर चमेली का तेल-कुरूप व्यक्ति का अधिक श्रृंगार करना।
77. जल में रहकर मगर से बैर-अधिकारी से शत्रुता करना।
78. जहाँ चाह वहाँ राह—इच्छा, शक्ति से ही सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है।
79. जहाँ देखी भरी परात, वहीं गंवाई सारी रात-लोभी व्यक्ति वहीं जाता है, जहाँ कुछ मिलने की आशा होती है।
80. जाके पाँव व फटी बिबाई, सो क्या जाने पीर पराई—जिसने कभी दुःख न देखा हो, वह दूसरे की पीड़ा दुःख. को नहीं समझ सकता।

81. जिसकी लाठी उसकी भैंस-शक्तिशाली की विजय होती है।
82. जिस थाली में खाना उसी में छेद करना-कृतघ्न होना।
83. जैसे कंता घर रहे वैसे रहे विदेश–स्थान परिवर्तन करने पर भी परिस्थिति में अन्तर न होना।

84. जैसा देश वैसा भेष—प्रत्येक स्थान पर वहाँ के निवासियों के अनुसार व्यवहार करना।
85. जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ-दो नीच व्यक्तियों में किसी को अच्छा नहीं कहा जा सकता।
86. जो गरजते हैं बरसते नहीं-अकर्मण्य लोग ही बढ़-चढ़कर डींग मारते हैं। अथवा कर्मनिष्ठ लोग बातें नहीं बनाते। .
87. ढाक के वही तीन पात-कोई निष्कर्ष हल. न निकलना।
88. तबेले की बला बन्दर के सिर—एक के अपराध के लिए दूसरे को दण्डित करना।
89. तीन लोक से मथुरा न्यारी-सबसे अलग, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण।
90. तीन में न तेरह में, मृदंग बजावे डेरा में किसी गिनती में न होने पर भी अपने अधिकार का ढिंढोरा पीटना।
91. तुम डाल-डाल हम पात-पात-प्रतियोगी से अधिक चतुर होना। अथवा प्रतियोगी की प्रत्येक चाल को विफल करने का उपाय ज्ञात होना।
92. तुरत दान महाकल्याण-किसी का देय जितनी जल्दी सम्भव हो, चुका देना चाहिए।
93. तू भी रानी मैं भी रानी, कौन भरेगा पानी—सभी अपने को बड़ा समझेंगे तो काम कौन करेगा।
94. तेली का तेल जले, मशालची का दिल-व्यय कोई करे, दुःख किसी और को हो।
95. तेल देख तेल की धार देख–कार्य को सोच-विचारकर करना और अनुभव प्राप्त करना।
96. थोथा चना बाजे घना-कम गुणी व्यक्ति में अहंकार अधिक होता है।
97. दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते-मुफ्त की वस्तु का अच्छा-बुरा नहीं देखा जाता।
98. दाल-भात में मूसलचंद-किसी कार्य में व्यर्थ टाँग अड़ाना।

99. दिन दूनी रात चौगुनी-गुणात्मक वृद्धि।
100. दीवार के भी कान होते हैं रहस्य खुल ही जाता है।

101. दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम-दुविधाग्रस्त व्यक्ति को कुछ भी प्राप्त नहीं होता।
102. दूर के ढोल सुहावने होते हैं—प्रत्येक वस्तु दूर से अच्छी लगती है।
103. धोबी का कुत्ता घर का न घाट का-लालची व्यक्ति कहीं का नहीं रहता/लालची व्यक्ति लाभ से वंचित रह ही जाता है।
104. न तीन में, न तेरह में महत्त्वहीन होना, किसी काम का न होना।
105. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी-झगड़े की जड़ काट देना।
106. नाच न जाने/आवै आँगन टेढ़ा-काम न आने पर दूसरों को दोष देना।
107. नाम बड़े, दर्शन छोटे-प्रसिद्धि के अनुरूप निम्न स्तर होना।
108. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी-न इतने अधिक साधन होंगे और न काम होगा।
109. नीम हकीम खतरा-ए-जान-अप्रशिक्षित चिकित्सक रोगी के लिए जानलेवा होते हैं।
110. नौ नकद न तेरह उधार-नकद का विक्रय कम होने पर भी उधार के अधिक विक्रय से अच्छा है।
111. नौ दिन चले अढ़ाई कोस-धीमी गति से कार्य करना।
112. नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को चली—जीवनभर पाप करने के बाद बुढ़ापे में धर्मात्मा होने का ढोंग करना।
113. पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखा कुदरत का खेल-भाग्यवश योग्य व्यक्ति द्वारा तुच्छ कार्य करने के लिए विवश होना।
114. बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी-विपत्ति अधिक समय तक नहीं टल सकती।

115. बगल में छोरा, नगर में ढिंढोरा-वाँछित वस्तु की प्राप्ति के लिए अपने आस-पास दृष्टि न डालना।
116. बड़े मियाँ सो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभानअल्लाह-छोटे का बड़े से भी अधिक धूर्त होना।
117. बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद-मूर्ख व्यक्ति गुणों के महत्त्व को नहीं समझ सकता।
118. बाप ने मारी मेंढकी, बेटा तीरंदाज-कुल-परम्परा से निम्न कार्य करते चले आने पर भी महानता का दम्भ भरना।
119. बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना-अचानक कार्य सिद्ध हो जाना।
120. भइ गति साँप छछून्दति केरी-दुविधा की स्थिति।

121. भरी जवानी में माँझा ढीला-युवावस्था में पौरुष उत्साह.हीन होना।
122. भागते भूत की लँगोटी भली-न देनेवाले से जो भी मिल जाए, वही ठीक है।
123. भूखे भजन न होय गोपाला-भूखे पेट भक्ति भी नहीं होती।
124. भैंस के आगे बीन बजाना-मूर्ख के आगे गुणों का प्रदर्शन करना व्यर्थ होता है।
125. मन चंगा तो कठौती में गंगा-मन के शुद्ध होने पर तीर्थ की आवश्यकता नहीं होती।
126. मरे को मारे शाहमदार राजा से लेकर धूर्त तक सभी सामर्थ्यवान् कमजोर को ही सताते हैं।
127. मान न मान मैं तेरा मेहमान-जबरदस्ती गले पड़ना।
128. मुँह में राम बगल में छुरी-कपटपूर्ण व्यवहार।
129. मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक-प्रत्येक व्यक्ति अपनी पहुँच के भीतर कार्य करता है।
130. यथा नाम तथा गुण-नाम के अनुरूप गुण।

131. यथा राजा तथा प्रजा-जैसा स्वामी वैसा सेवक।
132. रस्सी जल गई ऐंठ न गई-अहित होने पर भी अकड़ न जाना।
133. राम नाम जपना पराया माल अपना-धर्म का आडम्बर करते हुए दूसरों की सम्पत्ति को हड़पना।
134. लातों के भूत बातों से नहीं मानते-नीच बिना दण्ड के नहीं मानते।
135. लाल गुदड़ी में भी नहीं छिपते—गुणवान् हीन दशा में होने पर भी पहचाना जाता है।
136. शौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा-शौक पूरे करते समय अपनी आर्थिक स्थिति की अनदेखी करना।
137. साँच को आँच नहीं सत्यपक्ष का कोई भी विपत्ति कुछ नहीं बिगाड़ सकती/सत्य की सदैव विजय होती है।
138. साँप निकल गया लकीर पीटते रहे कार्य का अवसर हाथ से निकल जाने पर भी परम्परा का निर्वाह करना।
139. साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे-काम भी बन जाए और कोई हानि भी न हो।
140. सावन हरे न भादों सूखे-सदैव एक-सी स्थिति में रहना।

141. सावन के अन्धे को सब जगह हरियाली दिखना-स्वार्थ में अन्धे व्यक्ति को सब जगह स्वार्थ ही दिखता है।
142. सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना—कार्य के आरम्भ में ही बाधा उत्पन्न होना।
143. सूरज को दीपक दिखाना-सामर्थ्यवान को चुनौती देना; ज्ञानी व्यक्ति को उपदेश देना।
144. हंसा थे सो उड़ गए, कागा भए दिवान–सज्जनों के पलायन कर जाने पर सत्ता दुष्टों के हाथ में आ जाती है।
145. हमारी बिल्ली हमीं को म्याऊँ-पालक पालनेवाले. के प्रति

विद्रोह की भावना रखना।
146. हल्दी/हर्र लगे न फिटकरी, रंग चोखा आए-बिना कुछ प्रयत्न किए कार्य अच्छा होना।
147. हाथ कंगन को आरसी क्या-प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।
148. हाकिम की अगाड़ी, घोड़े की पिछाड़ी-विपत्ति से बचकर ही निकलना चाहिए।
149. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और-कपटी व्यक्ति कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं।
150. हाथी के पाँव में सबका पाँव-ओहदेदार व्यक्ति की हाँ में ही सबकी हाँ होती है।
151. होनहार बिरवान के होत चीकने पात-प्रतिभाशाली व्यक्ति के लक्षण आरम्भ से ही दिखने लगते हैं।
152. हाथी निकल गया, दुम रह गई—सभी मुख्य काम हो जाने पर कोई मामूली-सी अड़चन रह जाना।
153. होइहि सोइ जो राम रचि राखा-वही होता है, जो भगवान् ने लिखा होता है।

प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे - भाग 12

Famous Hindi Idioms, Phrases and Proverbs-Part 12

हिंदी भाषा में कई मुहावरों या कहावतों का इस्तेमाल होता है जिन्हें समझना मुश्किल होता है। साथ ही ज्यादातर बच्चों की परीक्षा में भी मुहावरे या लोकोक्तियां से जुड़े प्रश्न आते हैं जो आप इस लेख के माध्यम से जान सकते हैं। मुहावरों का उपयोग हिंदी में खासकर कुछ बड़ी बात को एक छोटे पंक्ति के रूप में समझाना होता है।
ज्यादातर स्कूली किताबों में कहावतों का इस्तेमाल कहानियों में होता है। चलिए जानते हैं कुछ बेहतरीन मुख्य मुहावरों और कहावतों के बारे में जिनका हिंदी भाषा में ज्यादा उपयोग किया जाता है।

अंग अंग मुसकाना
अर्थ – बहुत प्रसन्न होना, बहुत खुश होना
उदाहरण वाक्य – परीक्षा में अपने अच्छे अंक लाने पर अरुण का अंग अंग मुस्काने लगा।
अंग अंग ढीला होना
अर्थ – थक जाना
उदाहरण वाक्य – ज्यादा व्यायाम करने के कारण आज मेरा अंग-अंग ढीला हो गया है।
अपनी खिचड़ी अलग पकाना
अर्थ – दूसरों से अलग रहना
उदाहरण वाक्य – चैतन्य दूसरे लड़कों से आजकल बात नहीं करता है और अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।

अंगूठा दिखाना
अर्थ – मना करना, इनकार करना
उदाहरण वाक्य – अनीता पर मुझे पूर्ण विश्वास था परंतु अंत समय पर उसने भी मुझे अंगूठा दिखा दिया।
अपना उल्लू सीधा करना
अर्थ – अपना मतलब निकालना
उदाहरण वाक्य – कभी-कभी अपना उल्लू सीधा करने के लिए दुश्मन को भी दोस्त बनाना पड़ता है।
अपने पांव आप कुल्हाड़ी मारना
अर्थ – स्वयं अपनी हानि करना
उदाहरण वाक्य – इतने अच्छे नौकरी को छोड़ कर तुमने अपने पांव आप कुल्हाड़ी मार दी है।
अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना
अर्थ – अपनी प्रशंसा या तारीफ स्वयं करना
उदाहरण वाक्य – जो व्यक्ति अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनते हैं उन से बड़ा मूर्ख दुनिया में कोई नहीं होता है।
आटे दाल का भाव मालूम होना
अर्थ – कठिनाई का अनुभव होना
उदाहरण वाक्य – एक बार जीवन में ईमानदारी से काम करना शुरू करके देखो तब तुम्हें आटे दाल का भाव मालूम होगा।
आकाश के तारे तोड़ना
अर्थ – असंभव कार्य को पूरा करना
उदाहरण वाक्य – मेहनत करने वाले आकाश से तारे तोड़ने की ताकत रखते हैं।

आसमान पर चढ़ाना

अर्थ – जरूरत से ज्यादा प्रशंसा या तारीफ करना

उदाहरण वाक्य – तुमने अपने बेटे को आसमान पर चढ़ा रखा है इसलिए वह तुम लोगों की बात नहीं मानता है।

आसमान सिर पर उठाना

अर्थ – बहुत हल्ला या शोर मचाना

उदाहरण वाक्य – बच्चे को तंग करने के कारण बच्चे ने आसमान सिर पर उठा लिया।

इधर-उधर की हांकना

अर्थ – इधर-उधर की बातें करना, गप्पे मारना

उदाहरण वाक्य – इधर-उधर की हांकना बंद करो और अपने काम पर ध्यान दो।

ईट से ईट बजाना

अर्थ – सर्वनाश कर देना

उदाहरण वाक्य – भगवान श्रीराम ने लंका की ईट से ईट बजा दी।

ईद का चांद होना

अर्थ – बहुत दिन बाद दिखना या नजर आना

उदाहरण वाक्य – अरे राहुल तुम कहां ईद के चांद हो गए थे बहुत दिन से तुमने अपना दुकान क्यों नहीं खोला है?

उल्टी गंगा बहाना

अर्थ – विरुद्ध या विपरीत काम करना, उल्टा काम करना

उदाहरण वाक्य – आज अपने दुश्मन के घर जाकर तुमने उलटी गंगा बहा दिया।

एड़ी चोटी का जोर लगाना

अर्थ – बहुत कोशिश या प्रयत्न करना

उदाहरण वाक्य – परीक्षा में अव्वल अंक लाने के लिए रोहित को एड़ी चोटी काट जोर लगाना पड़ा।

कफन सिर पर बांधना

अर्थ – मरने के लिए तैयार होना, जान निछावर करने को तैयार रहना।

उदाहरण वाक्य – बॉर्डर पर हमारे वीर सैनिक हमेशा कफन सिर पर बांधे रहते हैं।

काम तमाम करना

अर्थ – मार डालना

उदाहरण वाक्य – जंगल में अकेले एक शेर ने तीन हिरण का काम तमाम कर डाला।

कान काटना

अर्थ – बहुत चालाक होना

उदाहरण वाक्य – दोस्त अनिल को बच्चा मत समझना वह बड़ों बड़ों के कान काटता है।

कान पर जूं रेंगना

अर्थ – ध्यान ना देना, बात ना सुनना

उदाहरण वाक्य – मैं तुम्हें इतना समझाता हूं परंतु तुम्हारे कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

कटे पर नमक छिड़कना

अर्थ – दुख को और बढ़ाना

उदाहरण वाक्य – कुंभकरण की मृत्यु की खबर असुरराज रावण के लिए कटे पर नमक छिड़कने जैसा था।

खिल्ली उड़ाना

अर्थ – मजाक या हंसी उड़ाना

उदाहरण वाक्य – इस गांव का जमीदार हमेशा गांव के गरीब लोगों का खिल्ली उड़ाता है।

गिरगिट की तरह रंग बदलना

अर्थ – एक बात पर स्थिर न रहना, अपनी बात बदलते रहना, अपनी बात पर अमल ना करना।

उदाहरण वाक्य – रवि गिरगिट की तरह रंग बदलता है। कल तक वह कोई बुरे काम नहीं करता था परंतु आज वह सभी काले काम करता हैं।

गुड गोबर कर देना

अर्थ – बात को बिगाड़ना, बात का बतंगड़ बना

उदाहरण वाक्य – उसे अच्छी नौकरी मिल चुकी थी परंतु ऑफिस में मैनेजर के साथ बदतमीजी करके उसने सब गुड गोबर कर दिया।

गुलछर्रे उड़ाना

अर्थ – मौज उड़ाना, मजे करना

उदाहरण वाक्य – करोड़पति होने के बाद वह दिन-रात गुलछर्रे उड़ा रहा है।

घाट घाट का पानी पीना

अर्थ – चालाक या बुद्धिमान होना

उदाहरण वाक्य – मुझे पाठ मत पढ़ाओ मैंने घाट घाट का पानी पिया है।

घाव पर नमक छिड़कना

अर्थ – दुखी को और दुख देना

उदाहरण वाक्य – इस महँगाई के दौर पर सरकार द्वारा ज्यादा कर लगाना लोगों के लिए घाव पर नमक छिड़कना जैसा हुआ।

घोड़े बेचकर सोना

अर्थ – बिना किसी चिंता के सोना, निश्चिंत होकर निद्रा में डूब जाना

उदाहरण वाक्य – पहरेदार घोड़े बेच कर सो रहे थे तब डाकुओं नेराजमहल का सारा सोना चुरा लिया।

चादर के बाहर पैर पसारना

अर्थ – आय से अधिक व्यय करना, कमाई से ज्यादा खर्च करना

उदाहरण वाक्य – यदि तुम चादर से बाहर पैर पसरोगे तो दरिद्रता बहुत जल्दी तुम्हें गले लगाएगी।

चार दिन की चांदनी

अर्थ – क्षण भर का सुख, कुछ दिनों का सुख

उदाहरण वाक्य – बुरे काम करने से मिलने वाला धन चार दिन की चांदनी प्रदान करता है।

चुल्लू भर पानी में डूबना

अर्थ – शर्म के मारे मुंह छुपाना

उदाहरण वाक्य – ऐसे कुकर्म करने के बाद तुम्हें चुल्लू भर पानी में डूब जाना चाहिए।

चिकनी- चुपड़ी बातें करना

अर्थ – धोखा देने के लिए मीठी-मीठी बातें करना

उदाहरण वाक्य – मैं तुम्हें अच्छे से पहचानता हूं मैं तुम्हारी चिकनी चुपड़ी बातों में नहीं आने वाला।

छाती पर सांप लोटना

अर्थ – द्वेष से जलना

उदाहरण वाक्य – मेहनती लोगों के उन्नति को देखकर आलसी और दुष्ट लोगों के छाती पर सांप लोटने लगता है।

छठी का दूध याद आना

अर्थ – घोर संकट में पढ़ना

उदाहरण वाक्य – चोर का झूठ पकड़े जाने पर पुलिस ने उसे छठी का दूध याद दिला दिया।

छप्पर फाड़ कर देना

अर्थ – बिना परिश्रम के अत्यधिक लाभ मिलना

उदाहरण वाक्य – शेयर मार्केट में अत्यधिक लाभ होने के कारण व्यापारी को भगवान ने छप्पर फाड़ कर लाभ दिया।

छाती पर मूंग दलना

अर्थ – किसी का अत्यधिक दिल दुखाना

उदाहरण वाक्य – किसी से अत्यधिक प्रेम करके उसके छाती पर मूंग नहीं दलना चाहिए।

जान पर खेलना

अर्थ – अपना जीवन निछावर करके कार्य करना

उदाहरण वाक्य – अंतरिक्ष पर जाने वाले वैज्ञानिक जान पर खेलकर

जान के लाले पड़ना

अर्थ – संकट या मुश्किल में पड़ना

उदाहरण वाक्य – बुरे काम करने वाले व्यक्तियों के कभी ना कभी जान के लाले पड़ते ही हैं।

जल भुनकर कोयला होना

अर्थ – ईशा से पागल होना

उदाहरण वाक्य – परीक्षा में इशिता के अच्छे अंक आने पर किरण जल भुन कर कोयला हो गयी।

डूबती नाव पर लगाना

अर्थ – संकट से बचाना

उदाहरण वाक्य – अब तो ईश्वर ही मेरी डूबती नाव को पार लगा सकते हैं।

डींग मारना

अर्थ – गप्पे मारना

उदाहरण वाक्य – तुम डींग मारना बंद करो हमें पता चल चुका है कि तुम कितने दूर कितने पानी के धुले हो।

तिल का ताड़ करना

अर्थ – बात को बढ़ाना

उदाहरण वाक्य – अपने मित्रों की छोटी-छोटी बातों का तिल का ताड़ करना सही नहीं होता है।

दांत खट्टे करना

अर्थ – नीचा दिखाना

उदाहरण वाक्य – राम की सेना ने युद्ध भूमि में रावण की सेना के दांत खट्टे कर दिए।

दंग रह जाना

अर्थ – विस्मित हो जाना

उदाहरण वाक्य – सड़क पर दुर्घटना देखकर मैं दंग रह गया।

दांतो तले उंगली दबाना

अर्थ – आश्चर्यचकित हो जाना

उदाहरण वाक्य – ताजमहल की सुंदरता देखकर बड़े-बड़े देशों से आए हुए लोगों के भी दांतों तले उंगली दब जाते हैं।

दिन दुगनी रात चौगुनी

अर्थ – बहुत उन्नति करना

उदाहरण वाक्य – विजय मैं अपनी कंपनी मैं लगन के साथ काम किया इसलिए आज उसका व्यापार दिन दुगनी रात चौगुनी आगे बढ़ रहा है।

दाल में काला होना

अर्थ – कुछ गड़बड़ होना

उदाहरण वाक्य – उन दो लोगों की बातचीत और चाल-ढाल से लगता है कि दाल में कुछ काला है।

नाकों चने चबाना

अर्थ – परेशान करना, खूब सताना

उदाहरण वाक्य – भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक करके पाकिस्तानी सेना को नाकों चने चबवा दिया।

नौ दो ग्यारह होना

अर्थ – जल्दी से भाग जाना

उदाहरण वाक्य – पुलिस के आते ही सभी गुंडे नौ दो ग्यारह हो गए।

नानी याद आना

अर्थ – भारी संकट में पड़ना, बड़ी मुश्किल में पड़ना

उदाहरण वाक्य – पुलिस ने चोरों का ऐसा पिटाई किया कि उनको नानी याद आ गई।

पांचों उंगलियां घी में होना

अर्थ – अत्यधिक लाभ होना

उदाहरण वाक्य – कंपनी के बॉस तुम पर बहुत प्रसन्न नहीं है और उन्होंने तुम्हारा वेतन भी बढ़ा दिया है, अब तो तुम्हारे पांचों उंगली घी में हैं।

पांव जमीन पर ना टिकना

अर्थ – अभिमान करना

उदाहरण वाक्य – ज्यादातर अमीर आदमियों के पांव जमीन पर नहीं टिकते।

पेट में चूहे कूदना

अर्थ – भूख लगना

उदाहरण वाक्य – मुझे जल्दी से कुछ खाने को दीजिए मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

फूंक फूंक कर कदम रखना

अर्थ – सोच समझ कर काम करना

उदाहरण वाक्य – नया नया व्यापार शुरू करने पर फूंक फूंक कर कदम रखना चाहिए

बाल की खाल उतारना

अर्थ – छोटी सी बात पर बहुत सोचना या विचार करना

उदाहरण वाक्य – बेकार की बातों में बाल की खाल उतारना समय की बर्बादी है।

बाल भी बांका ना होना

अर्थ – जरा भी हानि ना पहुंचना

उदाहरण वाक्य – सड़क पर एक बहुत बड़ी दुर्घटना हुई परंतु गाड़ी में बैठे हुए व्यक्ति का बाल भी बांका नहीं हुआ।

बात का बतंगड़ बनाना

अर्थ – साधारण बात का बढ़ जाना

उदाहरण वाक्य – उसका छोटा सा घरेलू झगड़ा बात का बतंगड़ बन गया और कोर्ट जाने की नौबत आ गई।

बाग बाग होना

अर्थ – बहुत प्रसन्न होन

उदाहरण वाक्य – परीक्षा में अच्छे अंक लाने पर वह बाग बाग हो गया।

मुंह में पानी भर आना

अर्थ – ललचाना

उदाहरण वाक्य – दूसरे के पैसे देखकर चोर व्यक्ति के मुंह में पानी भर आया।

राई का पहाड़ बनाना

अर्थ – साधारण सी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताना

उदाहरण वाक्य – तुम बेकार ही राई का पहाड़ बना कर झगड़े को और बढ़ा रहे हो।

लोहे के चने चबाना

अर्थ – कठिन काम करना

उदाहरण वाक्य – जिस व्यक्ति ने जीवन में लोहे के चने चबाना हो वह कभी असफल नहीं होते।

लहू पसीना एक करना

अर्थ – बहुत कष्ट झेलना

उदाहरण वाक्य – मैंने लहू पसीना एक करके अपने इस व्यापार को इन ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।

सिर पर भूत सवार होना

अर्थ – कोई धुन लग जाना, एक ही चीज पर मगन रहना

उदाहरण वाक्य – उसके बेटे के सिर पर मोबाइल फोन का भूत सवार है जब देखो वहां मोबाइल फोन पकड़ कर बैठा रहता है।

सोने की चिड़िया

अर्थ – लाभदायक वस्तु

उदाहरण वाक्य – अंग्रेजों के लिए हमारा देश भारत सोने की चिड़िया थी।

हथियार डाल देना

अर्थ – हार मान लेना

उद्धरण वाक्य – युद्ध में राजा की मृत्यु के बाद विवश होकर सेना ने हथियार डाल दिए।

हाथों के तोते उड़ना

अर्थ – होश उड़ जाना

उदाहरण वाक्य – अपने घनिष्ठ दोस्त की अकाल मृत्यु समाचार सुनकर उसके हाथों के तोते उड़ गए।

हाथ साफ करना

अर्थ – बेईमानी करके सब लूट लेना या खा जाना

उदाहरण वाक्य – अनिल शर्मा के बड़े भाई ने अवसर पाते ही उसकी सारी पूंजी पर हाथ साफ कर लिया।

हाथ धोकर पीछे पड़ना

अर्थ – बुरी तरीके से पीछे पड़ना

उदाहरण वाक्य – कुछ लुटेरे एक व्यक्ति के हाथ धोकर पीछे पड़ गए।

अंत भले का भला

अर्थ – अच्छे काम का परिणाम हमेशा अच्छा ही होता है।

अंधा क्या चाहे दो आंखें

अर्थ – जरूरत की वस्तुएं बिना किसी प्रयत्न या कष्ट के मिल जाना।

अंधी पीसे कुत्ता खाए

अर्थ – मेहनत करके पैसा कोई और कमाए परंतु उसका लाभ और उपयोग कोई और करें।

अंधेरी नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा

अर्थ – घोर अन्याय होना

अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत

अर्थ – समय बीत जाने पर पश्चाताप करना व्यथा है

आम के आम गुठलियों के दाम

अर्थ – किसी काम में दुगना लाभ होना

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया

अर्थ – ईश्वर बहुत ही विचित्र है कहीं सुख प्रदान करता है तो कहीं दुख।

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे

अर्थ – अपना दोस्त ना मानकर उल्टा दूसरों को दोषी ठहराना।

एक अनार सौ बीमार

अर्थ – वस्तु एक परंतु लेने वाले बहुत।

एक तो चोरी दूसरी सीनाजोरी

अर्थ – बुरा काम करके उल्टा आंखें दिखाना।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं समझ सकती

अर्थ – दो शक्तिशाली या प्रभुत्वशाली व्यक्ति एक ही स्थान या राज्य पर शासन नहीं कर सकते।

एक मछली सारे पानी को गंदा करती है

अर्थ – एक व्यक्ति के बुरा काम करने पर उसके जुड़े कई व्यक्ति दोषी हो जाते हैं।

काला अक्षर भैंस बराबर

अर्थ – अनपढ़ मनुष्य या मूर्ख व्यक्ति

गागर में सागर

अर्थ – विस्तृत बात को थोड़े में कहना

घर की मुर्गी दाल बराबर

अर्थ – घर या आसपास में मिलने वाली वस्तु की कोई कद्र नहीं होती।

छछूंदर के सिर में चमेली का तेल

अर्थ – किसी योग्य व्यक्ति को कुछ ऐसी वस्तु मिल जाना जिसके वह योग्य ना हो।

जो गरजते हैं वह बरसते नहीं

अर्थ – जो ज्यादा डिंग मारते हैं वह कभी जीवन में सफल नहीं होते हैं।

धोबी का कुत्ता ना घर का ना घाट का

अर्थ – जिस मनुष्य का कोई स्थाई ठिकाना ना हो।

ना रहेगा बांस ना बजेगी बांसुरी

अर्थ – जिससे आपको हानि हो उसका जड़ से नाश करना ही अच्छा है।

नाच ना जाने आंगन टेढ़ा

अर्थ – ऐसा व्यक्ति जो काम करना तो नहीं जानता है परंतु गलतियां निकालने में सबसे आगे है।

बगल में छुरी मुंह में राम राम

अर्थ – ऐसा व्यक्ति जो ऊपर से मित्रता दिखाता हो परंतु भीतर से शत्रु हो।

रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई

अर्थ – बर्बाद हो जाने पर भी अकड़े रहना, और अंत तक घमंड ना छोड़ना।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते

अर्थ – दुष्ट व्यक्ति को जब तक दंड ना दिया जाए तब तक वह होश में नहीं आता है।

सौ सुनार की एक लोहार की

अर्थ – बार बार सहन करना परंतु एक बार बदला लेना।

हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और

अर्थ – ऐसा व्यक्ति जो अंदर और बाहर से अपने विचारों और कार्यों से विभिन्न हो।

समाप्ति

Conclusion

हमारे हिंदी के कह|वतें किसी भी देश के महान और अनुभवकारी व्यक्तियों के द्वारा किसी विषय पर कही हुई साधारण और वास्तविक बातें होती हैं।ये कहावतें आमतौर पर हमारे जीवन के वास्तविक तथ्यों को साबित करती है। सभी कही हुई कहावतें आम धारणा पर आधारित सत्य और सलाह को प्रदर्शित करती है। महान व्यक्तित्वों के द्वारा कही हुई बातें मानवता के प्रयोग किए गए अनुभव बन जाते हैं और अन्य लेखक भी इन की अनुकरण करने लगते हैं। हमारे हिंदी भाषा के कहावतें या मुहावरे अनुशासन, स्वास्थ्य, नैतिकता, समय, शिक्षा, स्वच्छता, बीमारी, ईमानदारी, ज्ञान आदि पर हो सकती है। हम ने कोशिश कर के यहाँ संसारभर के महान व्यक्तित्वों द्वारा कही हुई कहावतों या मुहावरों पर निबंधों की विभिन्न किस्में उपलब्ध करा दिए हैं अब हमारे पाठक इन में या तो और बची कुचि कहावतों और मुहावरों को जोड़ सकते है या उन पर अपनी टिपण्णी भी कर सकतें हैं ।

विद्यार्थियों को स्कूल या कॉलेज में इन कहावतों के अर्थ पर चर्चा करने, पैराग्राफ लिखने, निबंध लिखने के लिए शिक्षकों या परीक्षकों के द्वारा दिए जाते हैं तो मेरे इस संग्रह से उन को भी कुछ सहूलियत होगी । आप इनमें से कोई भी कहावत पर निबंध को अपनी आवश्यकता और जरुरत के अनुसार चुन सकते हैं जैसे की हम ने अपने उपसंहार में नीचे कुछ उदहारण दिए है। आशा है यह मेरी प्रेरणा आप सब के मन भाएगी।

हमारे इस विस्तृत रूप में वर्णन किया हुआ सम्पूर्ण खोज बीन से हमारे सभी उभरते लेखक तो लाभ उठा ही सकेंगे लेकिन हमारे मझे हुए निपूर्ण लेखक भी इस संग्रह दे जरूर लाभ उठाएंगे यह मेरा अनुमान और विस्वास भी है।

धन्यवाद।

उपसंहार
Epilogue

हिंदी कहावतों पर बनी कहानियाँ

आशा है इन दस कहानियों में काम में लाये गए मुहावरों और कहावतों से पाठक जरूर कुछ लाभ उठा सकेंगे।

1. जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं

कुंभज नामक एक कुम्हार बहुत सुंदर घड़ेसुराही, गमले आदि बनाता था। उसके बनाए सामान की मांग दूरदूर तक थी। वह अपना काम पूरी ईमानदारी और निष्ठा से करता था। उसके पास एक छोटा-सा कमरा था और बाहर बहुत बड़ा चौक। वह अपने सभी मिट्टी के बर्तनों को बनाकर उन्हें चौक में सुखाता था। उसके चौक में बहुत अच्छी और गहरी धूप आती थी | कुंभज अपने जीवन में दिनरात परिश्रम कर बेहद खुश रहता था।
वह अभी अविवाहित था। उसने सोचा हुआ था कि जब मैं अपनी मेहनत से कुछ रुपये इकट्ठे कर एक बढ़िया-सा घर बना लूगा तभी विवाह कलंगा और फिर विवाह के लिए रुपये भी तो चाहिए।
सुबह उठते ही वह पूरा चौक साफ़ करता। इसके बाद दैनिक दिनचर्या से निवृत्त होकर व्यायाम करता। उसका बदन भी गठीला और रौबदार था। इसके साथ ही वह बच्चों से भी प्रेम करता था। बच्चे जबतब उसके चौक में आकर सुंदर-सुंदर मिट्टी के बर्तनों को निहारते और कुंभज से उन्हें बनाने

की प्रक्रिया सीखते। कुंभज को इन सब में एक असीम आनंद व सुख मिलता था।

वह बहुत होशियार था। हर बात को गहराई से समझ कर ही किसी काम में हाथ डालता था। कुंभज के बर्तन हमेशा चौक में ही रहते थे इसलिए उसे उस समय खासी दिक्कत का सामना करना पड़ता था जब चौमासे होते थे या बेमौसम बरसात आती थी।

इसके लिए उसने एक बड़ा तिरपाल (Tarpaulin) लाकर रखा हुआ था और जैसे ही मौसम के मिजाज को देखकर उसे लगता कि बारिश होने वाली है तो वह तो वह अपने बर्तनो को टांग देता । इससे उस के सभी चौक पर बर्तन बच जाते थे।

एक दिन जब वह अपने बर्तनों को बना रहा था तो अचानक मूसलाधार आंधी-सी चलने लगी। हवाओं की नमी से मौसम के तेवर बदल गए। बिगड़ते हुए मौसम दुर्दशा का संकेत देने लगी। बहती बहती पुरवइया कुंभज को बेहद परेशां करने लगी। अपने बनाई हुई बर्तनो को वह उठा ही रहा था कि तभी बड़ी बड़ी जोर जोर से बादल गरजने लगे। बादलों की गर्जन इतनी भयानक थी कि उनकी गड़गड़ाहट सुनकर कांप उठा। उसे लगा कि आज तो बारिश होगी और तेज हवाओं के झोंके व आंधी उसके तिरपाल को हवन उड़ा देंगे।

यह सोचकर वह चौक के कोनों पर मजबूत कीलें बांधकर उस तिरपाल को बांधने लगा। कुछ ही देर में उसने जल्दी-जल्दी चारों कोनों में मजबूत कीलें ठोककर तिरपाल को बांध दिया। लेकिन इतने में ही उसने देखा कि जो बादल जोर-जोर से गरजगरज कर सबको डरा रहे थे वो अब शांत होने लगे थे। पानी की एक बूंद तक न थी और उस दिन बारिश की एक बूंद तक न टपकी। मौसम का ऐसा मिजाज देखकर कुंभज हैरान होकर मुस्करा उठा और अपने काम में लग गया। इसी प्रकार दिन बीतते रहे।

एक दिन कुंभज के पास उसका दूर का भाइ अंबुज आया। कुंभज चौक में अंबुज के साथ बातें करता हुआ बर्तन बना रहा था तभी एकाएक जोर से हवाएं चलने लगीं और मौसम का रुख बदल कर आसमान में बादलों की गर्जना गूंज उठी। उनकी गूंज से अंबुज भी कांप उठा और बोला "भइया ऐसा लगता है कि आज तो आपके इलाके में मूसलाधार बारिश होगी। ऐसे में आपके मिट्टी के बनाए सारे बर्तन तो टूटफूट जाएंगे। क्या आपने इनसे निपटने के लिए कोई इंतजाम नहीं किया हुआ है?"

अंबुज की बात सुनकर कुंभज बोला, "अरे अंबुज घबराने की कोई बात नहीं है। जो गरजते हैं वो बरसते नहीं। अभी कुछ देर में मौसम शांत हो जाएगा । हां, तुम यह पूछ रहे थे कि मैंने बारिश से बचने के लिए इंतजाम किए हैं या नहीं तो मेरे भाई वो मैंने अच्छी तरह से किए हुए हैं।"

इसके बाद कुंभज ने बताया कि किस प्रकार उसने तिरपाल को मजबूती से दीवार के कोनों से बांधकर एक छतसी बनाई हुई है जो न सिर्फ वर्षा में अपितु तेज गर्मी व सर्दी में भी उसका बचाव करती है। कुछ देर बाद ही अंबुज ने बादलों की ओर निहारा। तो पाया कि सचमुच गजरने वाले बादलों में पानी की एक बूंद नहीं थी | अंबुज कुंभज से बोला, "हां भाई! तुम सही कहते हो- जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं।"

इस प्रकार तभी से शायद यह कहावत चल पड़ी कि 'जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं।'

2. दिन में तारे

स्कूल से घर पहुंचते ही गोलू ने बस्ता सोफे पर पटका और हाथमुंह धोने चला गया, मां ने पुकारा..गोलू । जल्दी से मेज पर आओ, खाना लगा दिया है आओ। साथसाथ खाएंगे। ठीक है..गोलू ने कहा पर देर तक मेज पर नहीं आयामां का मन खटका, कहां है गोलू । वह स्नानघर की तरफ लपकी, पर गोलू वहां नहीं था, वह तो पीछे वाले कमरे का दरवाजा खोलकर झट नौ दो ग्यारह हो गया था।
उफ ! गोलू फिर भाग निकला बड़ा मनमौजी हो गया है यह लड़का, इसकी लगाम अब कसनी ही पड़ेगी, बड़बड़ाती हुई मां खाना खाने जा बैठी। दोतीन घंटे बीत गए, गोलू नहीं लौटा तो मां कमरे में जाकर आराम करने लगी। मां की आंख लग गई तब गोलू चुपके से घर में घुसामेज पर खाना लगा था, जल्दीजल्दी सब सफाचट करके फिर खेलने निकल गया।
मां उठी, खाना देखासब खत्म.समझ गई खा-पीकर बच्चू फिर रफूचक्कर हो गए। कितने ही दिनों से गोलू ऐसी हरकतें कर रहा था, मां खीज उठी, मन ही मन बोली-आज आने दो इसके पापा को, खूब नमकमिर्च लगाकर शिकायत कलंगीडांट पड़ेगी, तो बच्चू की सिट्टीपिट्टी गुम हो जाएगी, हां, यही ठीक रहेगा, सोचती हुई मां रसोई के काम में लग गई।

गोलू महाराज का हाल ये कि भूख लगे तो घर में घुसो वरना खेलते रहो। खेलने से उसका जी नहीं भरता था, सारे बच्चे सांझ होने तक घर लौट आतेपर वह खेलने में मग्न रहता। रात घिरने को आ गईमां गोलू को खोजने मैदान की तरफ निकल गईआज कोई नहीं था गोलू जी थे और उनकी फुटबाल जिसे वहां, पैरों से उछालते हुए वह अकेले ही मग्न , मां ने तीखे स्वर में कहा-गोलू।
अंधेरा घिर आया है, देखो बत्तियां भी जल गई हैं, आज क्या यहीं रैनबसेरा डालेगा। गोलू ने सुनामुस्कराया और झट फुटबाल उठाकर तेजी से घर की तरफ दौड़ा, मां पीछेपीछे आ रही थी, गोलू ने घर में आते ही फुटबाल एक ओर रख दी, हाथमुंह धोकर निकला तो मां से बोला, "देखा मां मैं कितनी तेजी से घर आ गया, अब कुछ खाने को दो मां। मेरी अच्छी मां।
पर मां गुस्से से मुंह फुलाए काम पर लगी रही, कुछ न बोली, गोलू समझ गया, आज तो दाल गलने वाली नहीं, फिर भी मां के पास जाकर मक्खनबाजी करने लगा,.मां भूख लगी है कुछ खाने को दो ना.
ये खा, ले खा, मां ने तड़ातड़ दो तमाचे गोलू को जड़ दिएअब गोलू का पारा सातवें आसमान में चढ़ गया, उसने मेज पर रखी चीजों को पटका और फिर पैर पटकता हुआ खुद भी बाहर निकल गयागली में उसे रामू और श्यामू दोनों मिल गएवे भी गोलू के जैसे ही थे, दिन-रात मटरगश्ती करने वाले, गोलू ने पास जाकर कहा-रामू ! यार कुछ है जेब में।
चार-पांच रुपये और क्या! क्यों?
भूख लग रही है जोर , मां बहुत नाराज है, खाने को चांटे मिले हैं, दे दो यार कुछ उधारीकल ही लौटा देंगा।

चल ठीक है, श्यामू ने जेब से एक दस रुपये का नोट निकाला, ले तू भी क्या याद करेगा कि किस रईस से पाला पड़ा, पर कल लौटा जरूर हां, हां! पक्का, गोलू ने नोट लियाउसकी बांछे खिल गई वह चटपट बाजार की तरफ निकल गया, प्लेट भर चाट पकौड़ी खाई, एक गिलास ठंडा पानी पियाफिर मगन होकर गलियों में घूमने लगा, आज तो मैं भी मां को खूब सताऊंगामुझे मारा है मां ने. .सोचता हुआ गोलू दूर तक निकल गयारास्ते में उसे बीरू मिल गया, वह अपने पापा के साथ था, पापा बोले...इतनी रात गए तक तुम क्या कर रहे हो गोलू । घर जाओ ना, देखो दस बज गए हैं ।
दस बज गएअरे बाप रे। पापा तो घर आ चुके होंगे, आज तो खैर नहीं, सोचता हुआ गोलू सरपट भागने लगा।

घर में मां ने गोलू की शिकायत पापा से कर दी थी, पापा गुस्से में भरे बैठे थे। गोलू के आते ही दो थप्पड़ पापा ने भी जमा दिए बेचारा गोलू मार खाकर चुपचाप कमरे में चला गया और "होमवर्क" करने लगा।
गनीमत थी कि गोलू पढ़ने में तेज था। स्कूल जाने में कभी टालमटोल नहीं करता था। इसलिए मां उसकी ज्यादतियां भी सह लेती थी, मां तो चुप थी। पर बड़बड़ाते जा रहे थे, दिव्या! तुम्हारे लाड़प्यार ने इस लड़के का पापा दिमाग खराब कर दिया है। तुम्हारा उस पर जरा भी अनुशासन नहीं है।
देखना यह किसी दिन ऐसा कुछ करेगा कि हमारी नाक कटवा देगा, अभी से यह ऐसा बंडलबाज हो गया है।

मां चुपचाप सब सुनती रही। पापा खूब देर तक बोलते रहे।
फिर खाना खाकर सोने चले गए। गोलू बाहर नहीं निकला तो मां ने उसका खाना जाकर उसकी मेज में रख दिया।

सुबह समय पर गोलू उठा, नहा धोकर तैयार हुआ, चुपचाप नाश्ता किया और बेग उठा कर बस पकड़ने बस स्टैंड पर जा खड़ा हुआ।
श्यामू और रामू दोनों वहां खड़े थे, देखते ही बोले-दस का नोट । अरे ! मैं जल्दी में लाना भूल गया। दिन में दे दूंगा |
पक्का.
पक्का.
बस आ गई तो तीनों बस में जा बैठे श्यामू बोला-दिन में पैसे नहीं लौटाए तो खाल उधेड़ लूँगा , समझे।

इसकी नौबत ही नहीं आएगी यार |
घर आते ही गोलू ने अपनी गुल्लक टटोली दो रुपये थे।
चटोरा तो था ही, पैसे जमा क्या करता, अब क्या क। हां! आइडिया..बस गोलू हाथ मुंह धोकर मेज में जा बैठा- मां खाना दे दो।
क्या बात है आज तो बड़ी शराफत से पेश आ रहे हो। कल की मार से होश ठिकाने आ गए क्या? हां मां ! गोलू चुपचाप खाने लगा, मां भी रसोई में खटरपटर करने लगी।
मां व्यस्त है देखकर गोलू भगवान जी के मंदिर की ओर बढ़ा झट थाल से एक दस का नोट खिसकाया और चुपचाप वापस मेज में बैठ गया, खा-

पीकर वह चुपचाप पीछे के रास्ते से बाहर निकल गया। उसने जल्दी से श्यामू को नोट पकड़ाया और घर के अंदर दबे पांव लौटा ही था कि.मां की छड़ी पीठ पर पड़ी.चोरी भी करने लगा तू तू क्या सोच रहा था मेरी नजर तुझ पर नहीं थी, मैंने तुझे मेज से उठकर जाते देखादस का नोट जेब में सरकाते देखाउसी समय कान खींचती पर तू चुपचाप खिसक गया.
ले खा मार मां की छड़ी दनादन बरसने लगी.गोलू चिल्लाया...मां! मुझे माफ कर दो, अब ऐसा कभी नहीं करूगा।

चोरी करेगा, दिनभर आवारागर्दी करेगाघर से चुपचाप निकलेगा.
..ले..ले. मां की छड़ी चल पड़ीसुधर जा गोलू । मुझे तेरे पापा से भी क्या-क्या सुनना पड़ता है।

मां ! अब मनमानी भी नहीं करूगा।
न....न. तुझे तो मारना ही पड़ेगा, डाट का कोई असर नहीं होता है ना.कैसा लड़का है ये.इसे तो अपना भलाबुरा भी नजर नहीं आता। आ रहा है मां! सब नजर आ रहा है, अब तो मुझे दिन में तारे भी नजर आने लगे..गोलू रो पड़ा। चल हट। मां ने छड़ी छोड़ दी। गोलू झटपट अपने कमरे में जा बैठा। तौबा, तौबा, मेरी तौबा, । वह बड़बड़ा रहा था

3. नाच न जान आंगन टेढ़ा

प्रांजलि की आदत थी कि वह छोटी से छोटी बात को बहुत बढ़ाचढ़ाकर बोलती थी। क्लास में कोई भी ऐसा बच्चा नहीं था, जिसका वह मजाक नहीं उड़ाती थी।
कई बार तो उसके दोस्त नाराज हो जाते थे और कई बार हंसकर टाल देते थे। पर ज्यादा समय तक कोई भी उससे गुस्सा रह भी नहीं पाता था क्योंकि प्रांजलि बहुत ही मिलनसार और हंसमुख थी। उसका सिर्फ एक यही दुर्गुण था कि वह जब देखो सबका मजाक उड़ाया करती थी और खुद को सबसे महत्वपूर्ण बताती थी। धीरे-धीरे उसके दोस्त भी उसकी इस आदत को जान गए थे, इसलिए उन्होंने इस बात पर भी ध्यान देना बंद कर दिया।
जब सब दोस्त बातों को अनसुना कर देते है तो एक दिन वह अपने दोस्तों से बोली "मैं इस बार स्कूल के किसी भी सांस्कृतिक कायक्रम में जरूर भाग लूंगी ।

सोनम ने आश्चर्य से पूछा, "क्या करोगी तुम उसमें ?"
"मैं डांस करूंगी ।" प्रांजलि ने गर्व से कहा।

अमित ठहाका मारकर हंसता हुआ बोला, पर तुम्हें डांस कहां आता |
किसने कहा कि मुझे डांस नहीं आता?" प्रांजलि ने खिसियाते हुए जवाब दिया।
मीना मुस्करा कर बोली हम तो तुम्हारे साथ इतने सालों से पढ़ रहे हैं। हमने तो कभी नहीं देखा, तुम्हें डांस करते हुए ।"
"हां-हां, क्योंकि कभी ऐसा कोई मौका ही नहीं आया तो तुम में से किसी को भी नहीं पता है कि मैं बहुत अच्छा नाचती हूं।"
"अरे वाह.." सभी दोस्त खुश होते हुए बोले।
यह देखकर प्रांजलि को बहुत खुशी हुई और वह इतरा उठी। कुछ ही दिनों बाद उसकी सहेली नीलम का जन्मदिन था। नीलन ने अपने सभी दोस्तों को बुलाया था।
जब प्रांजलि वहां पहुंची तो उसे सबके साथ गुब्बारे फोड़ने और गेंद खेलने में बहुत मजा आया। थोड़ी ही देर बाद नीलम ने म्यूजिक चलाया। और सबको डांस करने के लिए कहा। मीना बोली, "नहीं आज हम सबसे पहले प्रांजलि का डांस देखें |
प्रांजलि ने आश्चर्य से कहा "मेरा डांस।" अब तक प्रांजलि यह भूल चुकी थी कि वह सभी दोस्तों के सामने अपने डांस करने की डींगें मार चुकी थी। नीलू ने उसे याद दिलाते हुए कहा "तुमने तो उस दिन कहा था कि तुम अच्छा नाचती हो।"
जब प्रांजलि को कुछ नहीं सूझा तो उसने बहाना बनाते हुए कहा "पर इस गाने पर नहीं मुझे तो दूसरे गाने पर डांस करना आता है।"
"कोई बात नहीं, हम गाना दूसरा चला देते हैं।" नीलम ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा, " कौनसा?"
इसके पास हर गाना होगा, प्रांजलि ने सोचा |
पर उस दिन प्रांजलि का पासा उलटा पड़ गया। वह जो भी गाने बता रही थी, नीलम एक के बाद एक गाने चलाती जा रही थी।
प्रांजलि को काटो तो खून नहीं, उसे तो बिलकुल भी नाचना नहीं आता था। सब लोग उसी की तरफ देख रहे थे।
तभी वह बोली, "यहां पर नाचने में मुझे मजा नहीं आएगा। मुझे खुली जगह में नाचने में मजा आता है।" यह सुनकर सभी दोस्त जोरों से हंस पड़े।

नीलम बोली ठीक है मैं इसका आवाज बढ़ा देती हूँ जिससे बाहर तक सुनाई पड़ेगा और तुम बाहर आंगन में डांस करो हम लोग वहां देखे लेंगे। अब प्रांजलि का चेहरा उतरगया।
वह सबसे बता भी नहीं सकती थी कि उसे बिलकुल भी नाचना नहीं आता। उसने फिर एक बहाना सोचा और बोली, "नहीं मुझे लग रहा है कि आज कुछ मौसम ठीक नहीं है और शायद यह जमीन भी ऊबड़खाबड़ है।
मैं फिर कभी नाचूंगी। यह सुनते ही नीलम की दादी जोरों से हंस पड़ी। वह बहुत देर से प्रांजलि और उसके दोस्तों की बातचीत सुन रही थी।
वह हंसते हुए बोली, "प्रांजलि, बेटा नाच न जाने आंगन टेढ़ा।" और यह सुनते ही सभी दोस्त खिलखिलाकर हंस पड़े। पर प्रांजलि को यह समझ में आ गया था कि अब वह कभी भी झूठी डींगें नहीं मारेगी और कभी किसी का मजाक नहीं उड़ाएगी।

4. सेर को सवा सेर

शहर गंगापुर में सबसे बड़ी दुकान दमड़ी साह की थी। उनकी दुकान पर जरूरत का हर सामान मिल जाता था। लेकिन दमड़ी साह थे बड़े नफाखोर। सस्ती और बेकार चीजें उठा लाते और यहां मनमाने दामों में बेचते।
चावल- मिलावट भी खूब करते। पिसी धनिया में लकड़ी का बुरादा, दालों में छोटे पत्थर पिसी, मिर्च में ईटों का बुरादा, काली मिर्च में पपीते के बीज।
सब जानते हुए भी लोग कुछ न कह पाते। मजबूरी थी। आस पास कोई ऐसी दुकान भी नहीं थी। जहां जरूरत का हर सामान मौके पर मिल जाए।
उसी गांव में सोहन नाम का एक सयाना आदमी रहा करता था।
दमड़ी साह की आदतों से तंग आकर उसने उन्हें सबक सिखाने की सोची।
एक दिन वह सुबह सुबह दुकान के आगे जाकर खड़ा हो गया और बोला, "राम राम साहजी ।"

"हां-हां, ठीक है। क्या चाहिए?" दमड़ी साह ने भौंहें टेढ़ी करके पूछा।

"चाहिए तो कुछ नहीं, बस दावत का न्यौता देने आया था?"
"दावत.किस खुशी में?" दमड़ी साह को आश्चर्य तो हुआ, पर दावत के नाम पर मन ही मन लड्डू फूटने लगे।

‘अरे गांव के रिश्ते से आप ठहरे चाचा और हम भतीजा। अब आप ही बताइए, अपने चाचा को दावत में बुलाने के लिए कोई कारण ढूंढ़ना पड़ेगा भला?”
‘

दमड़ी साह का मन प्रसन्न हो उठा। मुंह में पानी भर आया। आंखों के सामने पकवानों की थालियां नाचने लगी।

उन्हें ख़्यालों में डूबा देखकर सोहन ने और उकसाया, “देखो चाचा, कोई जोर जबरदस्ती नहीं है। हमने तो अपना समझकर कहा था। अगर मर्जी न हो, तो रहने दो। हम गरीबों के घर वैसे भी कौन आता है?” सोहन जानता था कि दमड़ी साह मुफ्त की दावत छोड़ने वालों में से नहीं हैं।
शिव! शिव! ऐसी अशुभ बातें मुंह से क्यों निकालते हो? तुम बुलाओ और भला मैं न आऊं। आऊंगा भतीजेअवश्य आऊंगा।” दमड़ी साह मक्खन की तरह मुलायम होकर बोले।
न्यौता देकर सोहन चला गया। दमड़ी साह का वह दिन मुश्किल से कटा ।

दावत की बात सोच-सोचकर लार टपकती रही। शाम ढलते ही दुकान बंद की। नहा धो कर धोतीकुर्ता पहना, टोपी लगाई और छड़ी उठाकर चल पड़े।
सोहन ओसारे में बैठा प्रतीक्षा कर रहा था। उसने मुस्कुराते हुए दमड़ी साह का स्वागत किया और बैठक में ले गया। थोड़ी देर की औपचारिक बातचीत के बाद खाने की थालियां सजने लगीं। पकवानों की महक से दमड़ी साह का मन बेचैन हो उठा।

उन्होंने आव देखा न ताव। उतावले होकर एक कचौड़ी मुंह में डाल ली।

लेकिन यह क्या? मुंह चलाते ही दांतों में जैसे रेत खिसखिसा उठी। दमड़ी साह हक्का-बक्का रह गया। न उगलते बने न निगलते।
चेहरे की रंगत बदलती देख सोहन बोला, “क्या हुआ चाचा? कचौड़ियां अच्छी नहीं लगीं?”
“नहीं नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है.बहुत बढ़िया हैं, स्वादिष्ट हैं”, दमड़ी साह हड़बड़ाकर बोले।
“हां-हां होंगी क्यों नहीं ! आपकी दुकान से ही तो आटा मंगवाया था।”

दमड़ी साह पर घड़ों पानी पड़ गया। जान बचाकर वह पुलाव की ओर लपके। पुलाव महक भी खूब रहा था। सोचा कचौड़ी न सही इसी से पेट भर लेंगे। पर जब पुलाव का एक निवाला मुंह में डाला तो चीख निकल गई। चावल में बुरी तरह कंकड़ भरे हुए थे। अब तो दमड़ी साह की हालत देखने लायक हो गई।
उनकी हालत पर मजा लेते हुए सोहन बोला "लगता है आपको पुलाव भी अच्छा नहीं लगा। मैंने तो बड़ी उम्मीद से आपकी दुकान से बासमती चावल मंगवाए थे। खेर कोई बात नहीं, अब यह खीर खा लीजिए।"
"क्या खीर के लिए शक्कर भी.? " दमड़ी साह एक दम घबरा गए।
"हां-हां, शक्कर भी आपकी दुकान से मंगवाई थी।" सोहन कुटिलता मुस्कुराया।
दमड़ी साह को उबकाई आ गई। याद आ गया कि उन्होंने झुनकू को चूहों की गदंगी से भरी शक्कर बेची थी।
"खीर हो जाए तो एक प्याला चाय." शुन कहने लगा।

"क्या चायपत्ती भी?"

"हां, चाचाजी, आपको छोड़कर हम भला और किसके पास जा सकते |
"मेरा पेटभर गया है, भतीजे। में तो चला.... "
और दमड़ी साह भाग|
"अरेपान तो खाते जाइए।" सोहन की पत्नी भीतर से चिल्लाई "ये आपकी दुकान के नहीं हैं।"

पर दमड़ी साह ऐसा भागे कि पीछे पलटकर नहीं देखा। आज उन्हें सोहन ने अच्छा मजा चखाया था।
सेर को सवा सेर मिल गया।

5. नहले पे दहला

किसी गांव में सूरज नाम का एक चालाक व्यक्ति रहता था। वह खयाली पुलाव बनाने में तेज और खूब पेटू था। वैसे तो वह किसान था, पर उसका दूसरा पेशा भोलेभाले लोगों को बेवकूफ बनाना भी था।

एक दिन सूरज गांव के मशहूर हलवाई अमर का दुकान पर गया। मिठाई पर नजर गड़ाते हुए उसने पूछा- इस बर्फ का क्या दाम है?"

"पचास रुपए किलो ।" अमर ने कहा।

"ठीक है, एक किलो बर्फ तोल दो।" सूरज ने कहा तो अमर एक लिफाफे में बर्फ तोलने लगा । तोलने के बाद वह जब लिफाफा सूरज को थमाने लगा, सूरज झट से बोला "बर्फ रहने दो। मुझे एक किलो जलेबी दे दो | सूरज के मसखरेपन से अमर वाकिफ़ था। इसलिए बुरा न मानते हुए उसने बर्फ का लिफाफा एक तरफ रखा तथा दूसरे लिफाफे में जलेबियां तोलने लगा। जलेबियां जैसे ही एक किलो होने को हुईसूरज फिर बोल पड़ा–"माफ करना अमर, जलेबी मेरी पत्नी को पसंद नहीं। तुम ऐसा करो कि मुझे एक किलो लड्डू दे दो।"

अमर ने झुंझलाते हुए जलेबियों का लिफाफा भी एक ओर रखा तथा एक लिफाफे में लड्डू डालने लगा। वह सोच रहा था कि अब की बार अगर सूरज ने लड्डू भी न लिएतो वह उसे चलता कर देगा। पर इस बार सूरज चुप रहा। ।

लड्डुओं का लिफाफा उसके हाथ में देते हुए अमर कहा-"लो ने संभालो लड्डू। इनके चालीस रुपए हुए।"

"कैसे रुपए? मैंने तो लड्डू जलेबियों के बदले में लिए हैं।"

"तो जलेबियों के पैसे निकालो।"

"जलेबियां तो मैंने बर्फ के बदले ली थी।"

ओफ्फो ! तब बर्फ के पैसे ही दे दो " अमर खींझकर बोला।

'पर बर्फ तो मैंने ली ही नहीं। फिर पैसे किस बात के? अमर को हक्का-बक्का छोड़कर सूरज चालाकी से मुस्कराते हुए दुकान से बाहर निकल आया। अमर को सूरज पर बहुत गुस्सा आया। उसने भी चतुराई से सूरज को सबक सिखाने का फैसला कर लिया।

अगली सुबह सूरज जब अमर की दुकान के आगे से निकला तब अमर ने उसे अपने पास बुलाकर कहा-"सूरज यदि तुम मुझे एक बार में चार लड्डू खाकर दिखा दो, तो मैं तुम्हें सौ रुपए दूंगा । पर यदि तुम लड्डू न खा सकेतब तुम्हें मुझको सौ रुपए देने होंगे ।"

सूरज ने तिरछी नजरों से दुकान में झांका। उसे एक थाली में संतरे के आकार जैसे लडडू दिखाई दिए। उसने सोचा-"यह अमर मुझे बेवकूफ समझता है। शायद इसे पता नहीं कि मिठाई के मामले में मैं कितना पेटू हूं। मैं इन लड्डूओं को अभी चट कर जाता, पर नाश्ते के कारण मेरा पेट भरा हुआ है।"

फिर वह बोला- "अमर, मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है। पर इस वक्त मैं जल्दी में हूं। मैं शाम को तुम्हारे पास आऊंगा। "

"जैसी तुम्हारी इच्छा।" सूरज की चालाकी भांपकर अमर मुस्कराते हुए बोला। सूरज के वहां से चले जाने पर वह बुदबुदाया–फंस गया पंछी जाल में।"

लड्डुओं को चखने तथा शर्त जीतने की खातिर सूरज ने दोपहर का खाना नहीं खाया। शाम होते ही वह अमर की दुकान पर पहुंचकर बोला-"लाओ, भाई हमारे चार लड्डू। बहुत भूख लगी है।"

अमर ने उसके सामने कपड़े से ढका एक थाल रख दिया। सूरज ने कपड़ा हटाकर देखा तो चकरा गया। थाल में नारियल जितने बड़े आकार के चार लड्डू पड़े थे। उन्हें देखते ही सूरज की सारी भूख हवा हो गई। वह तो संतरे के आकार वाले लड्डू खाने की तैयारी में था।

वह समझ गया कि अमर भी उससे कम चालाक नहीं है। अनमने भाव से उसने दोनों हाथों से पकड़कर एक लड्डू उठाया तथा उसे खाने की कोशिश करने लगा।

अभी वह लड्डू का कुछ भाग ही खा पाया था कि उसका पेट भर गया। उसने शेंपते हुए बाकी बचे लड्डू को थाल में रखा तथा सौ का नोट अमर को थमाकर चुपचाप बाहर आ गया।

अब वह अपनी चालाकी तथा पेटूपन पर पछता रहा था।

6. जैसे को तैसा

अतुल और अमित दो सगे भाई थे। अतुल दस वर्ष का था और अमित सात वर्ष का। अतुल पांचवीं कक्षा में पढ़ता था और अमित तीसरी कक्षा में। दोनों एक ही विद्यालय में साथ-साथ जाया करते थे। पापा दफ्तर जाने के पहले रोजाना दोनों को एक-एक रुपया जेब खर्च दिया करते थे।

मम्मी ने दोनों भाइयों की बचत की आदत डालने की गरज से गुल्लक लाकर दे रखी थीं। दोनों भाई अपने जेबखर्च में एक-एक से आठआठ आने बचाकर गुल्लक में डाल दिया करते थे।
पिछले छह महीने से दोनों की गुल्लक में काफी रुपये जमा हो चले थे। लेकिन इधर कुछ दिनों से अतुल में एक भारी बदलाव-सा आने लगा था। वह अपनी गुल्लक में कुछ भी पैसे नहीं डालता और अमित की गुल्लक में से भी प्रतिदिन एक रुपया निकाल लिया करता था।
वह अपने धोखेबाज मित्रों की संगति में पड़कर अपने सारे पैसे बरबाद करने लग गया था। समय बीतता रहा। अगले छह माह बाद अमित का जन्मदिन आने वाला था। मम्मी ने अमित के गुल्लक को देखना चाहा कि उसमें कितनी पूंजी हो चुकी है।
पर यह क्या? गुल्लक तो खाली थी। उसके सारे पैसे कहां गए?" मम्मी बुदबुदाई। शाम को यह बात अमित के पापा के सम्मुख रखी गई। तीनों को अतुल पर शक हुआ।
फिर भी किसी ने अतुल पर यह बात जाहिर नहीं होने दी। रात्रि को सोते समय पापा ने मम्मी से मिलकर एक योजना बनाई। सुबह होते ही अतुल की कक्षा के छात्र नितिन को जो उसका पड़ोसी भी था, बुलाकर सारी बातें समझा दीं।
यह सारा काम शनिवार की सुबह निपटा लिया सोमवार को जब अतुल विद्यालय से घर आया तो कुछ उदास-सा था ।
मम्मी ने पूछा "बेटा, अतुल: क्या बात है? तू उदास क्यों है?"
कुछ नहीं, मम्मी।" अतुल ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया।
इसी तरह रोज अतुल के बस्ते से एक किताब घटती जा रही थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि अब वह क्या करें? मां से कहे या न कहे।
आखिर एक दिन ऐसा आया जब वह खाली बस्ता लेकर घर आया। आते ही पलंग पर लेटकर जोर-जोर से रोनेबिलखने लगा। उसके पापा भी घर पर ही थे।
उन्होंने अतुल को अपने पास बुलाया और प्यार से पूछा "क्या बात है,बेटा? तुम रो क्यों रहे हो?" क्या बताऊं पापा!" कहते-कहते वह फिर रोने लगा। पापा के बार-बार पूछने पर वह बोला।
"पापा, पता नहीं कौन मेरे बस्ते में से एक-एक किताब या कापी रोज चुराया करता था। आज तो मैं खाली बस्ता ही लेकर घर आया हूं। मेरी सारी की सारी ही किताबें, कापियां चोरी हो गई ।"

"क्या तुमने भी कभी किसी का कोई सामान चुराया है? घर में या स्कूल में।" पापा ने पूछा।
अब अतुल को समझ में सब कुछ आ गया। शायद पापा ने सबक सिखाने के लिए ही ऐसा किया था। तब तक उसका सहपाठी नितिन भी उसकी चुराई हुई सभी किताब-कापियां लेकर वहां आ चुका था।
अतुल ने क्षमा भरे स्वर में पापा से कहा "पापा, मैं अब कभी भी पैसे नहीं चुराऊंगा। मैंने जान लिया कि जब किसी का कोई सामान चोरी हो जाता है, तब कितना दुःख होता है। मुझे क्षमा कर दें, न।" मम्मी और अमित भी कमरे में आ गए थे। "अतुल की चोरी मुर्दाबाद ।" अतुल.।
घर में खुशी की लहर फिर से छा गई। जैसे को तैसा' वाली कहावत चरितार्थ हो चली थी।

7. खरबूजा और चाकू

एक गांव में दो भाई रहते थे। बड़े भाई का नाम था खर और छोटे का बूजा | दोनों ताकतवर थे। वे किसी भी मुकाबले में कभी नहीं हारे। उनकी शक्ति का एक रहस्य भी था कि दोनों में एकता थी। सभी काम दोनों मिलकर करते थे।
किसी से कुश्ती करनी हो या लड़ना हो, वजन उठाने की प्रतियोगिता हो या दौड़ की, दोनों एक साथ और एक दूसरे की सलाह से करते थे। इससे उनकी ताकत दोगुनी हो जाती।
गांव के लोग उनसे डरने लगे। उन्हें भी अपनी ताकत का घमंड हो गया था। लोग उन्हें हारा हुआ देखना चाहते थे। पर कोई भी उनकी ताकत का सामना नहीं कर सका। कुछ ने मुकाबले की भी कोशिश भी की। जैसे उसी गांव में रहने वाले दो, तर और बूज से मिलकर मुकाबला किया।
पर खर और बूजा उनसे हारे नहीं। उन्होंने कहा भी, "माना कि तरबूज बड़ा है और मजबूत होता है पर खर और बूजा की एकता को तोड़ नहीं सकता। इसलिए हम किसी से हारेंगे नहीं।"
तर और बूज डरकर पीछे हट गए। खर और बूजा से लोग परेशान हो गए। क्योंकि उनकी ताकत का मुकाबला करने वाला कोई नहीं था।
वे लोगों को ज्यादा तंग करने लगे उसी समय गांव में एक यात्री आया। लोगों ने उसे अपनी समस्या बताई। यात्री ने कहा, "तुम जीत सकते हो। यह तभी संभव है जब उनकी एकता टूटे या वे डर जाएं। वैसे उनकी एक कमजोरी

तो सामने आ गई है। वे घमंडी हो गए हैं। कहावत है घमंडी का सिर नीचा। इसलिए उन्हें, हराने के लिए शरीर की ताकत के साथ साथ दिमाग की ताकत का भी इस्तेमाल करना होगा।"

यात्री ने उन्हें एक तरीका भी बताया। खर और बूजा को कुश्ती के लिए ललकारा गया। उन्हें कहा गया कि अमावस्या के दिन तुम्हारा मुकाबला कुश्ती में होगा।

खर और बूजा ने इस ललकार का मजाक उड़ाया। लोग भी हैरान हुए। मुकाबला तो होगा। पर यह कौन करेगा। किसी को भी मुकाबला करने वालों के नाम का पता नहीं चला।

निश्चित दिन मैदान में लोग इकट्ठे हो गए। खर और बूजा भी आ गए। मुकाबला करने वालों को पुकारने लगे। पहलवानों जैसे दो युवक मैदान में आए। बोले, 'हम करेंगे मुकाबला हमसे कुश्ती लड़ो।'

उनकी चुनौती भरी आवाज और निडरता देखकर खर और बूजा एक बार तो चौंक गए। फिर बोले, "कभी लगता है तुम्हें कहीं देखा है, कभी लगता है नहीं। तुम कौन हो? किस गांव के हो?"

हम इसी गांव के हैं। मैं बड़ा हूं मेरा नाम चा यह छोटा, इसका नाम कु ।"

"लेकिन तुम दोनों को कभी कुश्ती करते या लड़ते नहीं देखा है। हमसे क्या मुकाबला करोगे। तुमने यह कहावत तो सुनी होगी-एकता में बल होता है। हमारी एकता के सामने कोई नहीं टिकता है।"

"मानते हैं कि एकता में बल होता है। पर तुमने एक कहावत और सुनी होगी ।"

"हमने सब कहावतें सुन रखी हैं। तुम किसकी बात करते रहे हो ?"

"तुम दोनों मिलकर बने हो खरबूजा। हम दोनों मिलकर बने हैं-चाकू।

कहावत है कि खरबूजा चाकू पर गिरे या चाकू खरबूजा पर हर हालत में कटना खरबूजा को ही है। आओ, हम चाकू से भिड़ जाओ।

खर और बूजा दोनों ने एक दूसरे को देखा और सोच में पड़ गए। चा और कू एक साथ बोलने लगा, "बताओ, क्या करोगे? हम चाकू खरबूजा पर गिरे या तुम खरबूजा चाकू पर गिराते हो? जल्दी बोलो।"

खरबूजे थोड़ा डर गए। कहावत है डर गया सो मर गया। उनको डरते देख चा और कू उनसे भिड़ गए। उन्होंने खरबूजे को गिरा दिया।

उस दिन उन्होंने हार मान ली। खरबूजे का घमंड दूर हो गया। यात्री की तरकीब से गांव वालों ने राहत प्राप्त की।

8. टेढ़ी खीर

सवालीराम को समझना भी कठिन और समझाना भी। वैसे उसका नाम सवालीराम नहीं था। नाम तो बड़ा अच्छा रखा था मां-बाप ने गजनंदन और वह था भी। हां, मतलब उसका डीलडौल भारी पर क|म बिल्कुल गज जैसा ही था। कमी थी बस की। उमर तो अभी शायद 12 या 13 ही होती लेकिन कोई पीछे से देख कर कह नहीं सकता था कि कोई बच्चा जा रहा है। बस यूं ही इधरउधर घूमता रहता। कई लोग कहते कि वह मंदबुद्धि है।
लेकिन उसके सवाल ऐसे कि बड़े बड़ों के कान खड़े हो जाएं। कई तो उसे देखते ही नौ दो ग्यारह हो लेते कि भाग लो भैये नहीं तो दिमाग का दही कर देगा। वैसे उसके तर्क अनोखे होते। कई बार यह भी लगता कि कोई अच्छा स्कूल उसे मिल जाए तो शायद वह सुधर जाए लेकिन गांव में तो कोई मास्टर उसे पढ़ाने को तैयार ही नहीं था।

सब यही कहते हैं कि ये तो अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरता है।
हां, अक्ल से एक बात याद आई। सवालीराम..हां, हां मतलब गजनंदन को एक बार शहर के अधिकारी मिल गए। वे गांव के पशुगणना के लिए आए थे। अब उन्हें भला क्या पता कि इससे तो डेढ़ हाथ जोड़ने में ही भलाई है। बेचारे आ गए लपेटे में। सवालीराम ने उन्हें पालागन की।

फिर कहा, ताऊ, आपसे एक सवाल पूछं?
हां, हां। पूछो बेटे, पूछो।

आप भैसों को क्यों गिन रहे हैं?

बेटे । हमें सरकार को बताना है।

ताऊ, सरकार कैसी होती है?
बेटे। तुम बड़े हो जाओगे तब जानोगे।

हम बड़े कब होंगे?

बेचारे अधिकारी उन्हें लगा कि गलत फंसे। बगले झांकी फिर बोले बेटे.मैं जरा जल्दी में हूं।

अरे ! नहीं ताऊ, जरा रुको तो। अच्छा, यह बता दो कि अक्ल बड़ी की भैंस ?

ब...बड़ी तो अक्ल होती है।
मतलब?
नहीं..मेरा मतलब कि अक्ल तो दिमाग में होती है न और दिमाग तो सिर में होता है और सिर से भैंस तो बहुत बड़ी होती है। त..तो बड़ी तो भैंस ही हुई न?
एक पल को तो अधिकारी महोदय का दिमाग ही चकरा गया। आए थे किस काम से | आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास ।
..और पशुगणना की जगह इसके सवालों के नाम पर उलझे हैं। उनको चुप देख सवालीराम बोला "ताऊ, मैं एक और कारण बताऊं? जिससे आप मान जाओगे कि भैंस ही बड़ी होती है।
बच्चों और बड़ों की भीड़ लग गई थी। सब मजे ले रहे थे-"बताओ।"
सवालीराम बोला-"देखो. भैंस दूध देती है। हम दूध पीते हैं तो दिमाग तेज होता है और उसमें अक्ल बढ़ती है। तो अगर भैस न हो तो अक्ल भला कहां से आएगी तो फिर बड़ी तो. भैंस ही हुई।
सवालीराम को देख अधिकारी महोदय भी सोच रहे थे कि इतनी सी जान और गजभर की जबान। अधिकारी महोदय समझ गए कि इससे तो पल्ला झाड़ने में ही भलाई है। चलते हुए बोले "तुम्हें समझाना तो टेढ़ी खीर है |"
उनकी बात पर सब चौंक पड़े।
सवालीराम के गांव में कोई भी नहीं जानता था कि खीर क्या होती है? वहां खीर शब्द का चलन ही नहीं था। वहां तो खीर को लोग पायस कहते थे।
अब क्या था, वहां जो भी खड़ा था, पूछ बैठा-ये खीर कैसी होती है?
वहां एक बूढ़े बाबा भी खड़े थे। बेचारे जन्मांध थे। लाठी टेके चुपचाप सबकी बातें सुन रहे थे।
अधिकारी महोदय ने कहा, इन बाबा से पूछो।
बाबा बोले-साहब बता भी दो । वाकई हम लोग नहीं जानते कि खीर क्या होती है? हम सब तो पहली बार इसका नाम सुन रहे हैं।
अधिकारी महोदय को आश्चर्य हुआ। वे चल पड़े थे लेकिन रुक गए। बोले-खीर खाई जाती है।
अच्छा, तो क्या ये पेड़ पर लगती है? सवालीराम ने सवाल दागा। तो क्या बोई जाती है?

नहीं जी।
तो..तो क्या मशीन से बनती है? बाबा ने सवाल किया।
अरे ! नहीं बाबा। दूध से बनती है। ये सफेद होती है। अब जन्मांध बाबा भला रंग क्या जानते? उन्होंने पूछा-सफेद।

ये सफेद क्या होता है?

अरे ! बगुला नहीं देखा? बगुला सफेद होता है।

बगुला!
बगुला कैसा होता है?

अधिकारी महोदय समझ गए कि बाबा को तो समझाना और भी मुश्किल है। आंखें बड़ी की। बाबा के पास गए और अपनी कुहनी को मोड़कर बगुला जैसा बनाया और कहा इसे छूकर देखो।
ऐसा होता है बगुला। बाबा ने टेढ़ी कुहनी को टटोला और फिर उनका चेहरा खिल उठा।
खुश होकर बोले-अब समझा।
क्या?
यही कि खीर टेढ़ी होती है।
सारे बच्चे ताली पीटने लगे- टेढ़ी खीर । टेढ़ी खीर। टेढ़ी खीर।
बेचारे अधिकारी महोदय। उन्होंने माथा पीट लिया। समझ गए कि सवालीराम को ही नहीं बाकी सबको भी समझाना कठिन है।
माथे का पसीना पोंछा।
जैसे हार मानते हुए बोले-खीर तो टेढ़ी नहीं होती लेकिन तुम सबको समझाना जरूर टेढ़ी खीर है।
गजनंदन हां, हां मतलब सवालीराम बोल उठा-अच्छा ताऊ, य बता... सवाल पूरा होने से पहले ही अधिकारी महोदय सिर पर पैर रखकर भाग लिए।

9. घर छोड़कर बुरे फंसे

बचपन में मेरे एक दोस्त ने एक बन्दर का बच्चा पाला था। उसको गलीगली नचाने के लिए नहीं, बल्कि शौकिया तौर पर प्यार से उसने उसका नाम रखा था 'छोटू'। रोज सुबह उसको अपने साथ टहलाने ले जाता, अपने साथ ही उसे नाश्ता करवाता। और जब स्कूल जाने का वक्त होता, तो उसे दरवाजे की कुंडी से बांध देता। क्योंकि उसे अपने साथ स्कूल तो ले नहीं जा सकता था।

वैसे कई बार उसका मन हुआ कि उसे अपने साथ स्कूल ले जाए, लेकिन हमेशा मार के डर से मन पर काबू पा लेता था। क्योंकि उसकी मम्मी उसे कई बार बता चुकी थीं कि मार के डर से तो भूत भी कांपते हैं, तो फिर वो तो एक बच्चा था।

वैसे उससे कोई विशेष शिकायत नहीं थी, लेकिन कभी कभी उसे उसकी बदौलत डांट खानी पड़ जाती थी। बात दरअसल यह होती थी कि कभीकभी वह रस्सी तुड़ाकर सीधा रसोई में घुस जाता और जो भी चीज नजरों के सामने पड़ती, सीधी उसके मुंह में प्रवेश कर जाती थी।

डंडा देखकर वह तो भाग जाता था, लेकिन डांट मेरे दोस्त को खानी पड़ती थी, क्योंकि उसी ने ही जिद करके उसे पाला था। उसकी मम्मी ने तो पहले 'ना' ही कर दी थी, लेकिन फिर पापा से कहलवाने पर मान गईं थीं।

डांट खाकर वह अक्सर सोचता. "अब इसमें बेचारे छोटू का क्या दोष" बन्दर का घर तो होता ही गली में है", लेकिन इतनी छोटी-सी बात इन बड़े लोगों को कौन समझाए?" धीरे धीरे मेरे दोस्त ने लकड़ी के बल पर उसे थोड़ा बहुत सिखा लिया था। अब वह इतनी शैतानी नहीं करता था। लेकिन एक दिन तो बेचारे पर आसमान ही टूट पड़ा।

हुआ यूं कि उसकी पड़ोसन की चहेती बिल्ली घर में घुस आई और पहुंच गई सीधी रसोई में। ऊपर की अलमारी में दूध का भगौना रखा था। उसने उतावलेपन में एक ही छलांग में उस भगौने के पास पहुंचना चाहा।

वह तो भगौने के पास पहुंच नहीं पाई, लेकिन उसका यह उतावलापन बेचारे छोटू के लिए जो रसोई के दरवाजे के पास बैठा था, अभिशाप बन। गया।

बिल्ली की हड़बड़ाहट में जब अलमारी से डिब्बे गिरे तो घर वालों ने सोचा कि छोटू आज फिर कोई हरकत करने रसोई में पहुंच गया है। इससे पहले कि मेरा दोस्त घटनास्थल पर पहुंचता, उसकी मम्मी अपना प्यारा डंडा लेकर रसोई की ओर लपकीं। जब उन्होंने छोटू को रसोई के पास ही देखा,

तो उनका शक यकीन में बदल गया और उन्होंने एक डंडा उसे भेंट कर दिया।

दूसरा डंडा स्वीकारने से पहले ही उसने बाहर की ओर छलांग लगा दी। तब तक मेरा दोस्त भी वहां पहुंच चुका था। जब वो और उसकी मम्मी रसोई में घुसे तो वह शैतान बिल्ली तेजी से बाहर भागी । बिल्ली को देखकर मम्मी का सारा गुस्सा रफूचक्कर हो गया। उन्हें अपनी करनी पर पछतावा हो रहा था और यह कहावत याद आ रही थी, "तबले की बला, बन्दर के सिर ।"

मम्मी तुरंत छोटू से मिलने भागीं। लेकिन छोटू ने सोच लिया था कि अब वह इस घर में एक पल भी नहीं रहेगा चाहे उसे भूखा ही क्यों न मर जाना पड़े। यह सोचकर उसने घर से त्यागपत्र दे दिया।

दोपहर तक वह चलता रहा.चलता रहा। अब उसे भूख भी लगने लगी थी। तभी उसने देखा कि सड़क पर एक लड़का ठेले पर कोई भूरीभूरीसी चीज बेच रहा है। उसने वह चीज पहले कभी नहीं देखी थी। उसने सोचा, "हो न हो, यह होगी कोई मजेदार चीज ।" यह सोचकर उसके मुंह में पानी भर आया वह फौरन ठेले के पास आया और दोनों हाथों उस चीज को भरकर एक मकान की छत पर चढ़ गया।

वह बेचारा लड़का रोता कलपता ठेला लेकर भाग खड़ा हुआ। मकान की छत पर पहुंचकर छोटू ने जैसे ही वह चीज मुंह में रखी, दूसरे ही पल वह सारी छत पर गिरता फिर रहा था। दरअसल वह भूरी चीज और कुछ नहीं, अदरक थी। अब "बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।" छोटूराम भूख से व्याकुल हो रहे थे। उनसे अब आगे चला नहीं जा रहा था। अचानक उन्होंने देखा कि एक बुढ़िया मैदान में रोटियां पका रही है। बस फिर क्या था।

छोटूजी ने आव देखा न ताव, चल दिए रोटियां उड़ाने। उन्होंने जैसे ही त|वे की रोटी पर झपट्टा मारा जल्दबाजी में उनका हाथ त|वे की रोटी से छू गया। हाथ जलने से बेचारे को दिन में ही तारे नजर आने लगे। तब तक बुढ़िया ने चूल्हे से एक जलती हुई लकड़ी भी उन्हें पुरस्कार स्वरूप देने के लिए निकाल ली। इतना भयंकर पुरस्कार देखकर उनकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गई। रोटी छोड़, जलन से कराहते हुए बेचारे सिर पर पांव रखकर भागे। घर से बाहर के नजारे देखतेदेखते और भूख की कुलबुलाहट से उनकी बुरी हालत बन गई थी।

अब उन्हें अपनी गलती का अहसास हो रहा था। वह सोच रहे थे कि बेकार ही घर छोड़ा। उन्होंने मन ही मन प्रण किया कि चाहे कितना भी कुछ क्यों

न हो जाएआगे से कभी घर नहीं छोड़ेगा। यह सोचकर छोटूराम घर की ओर दौड़ पड़े।

10.सौ सोनार की, एक लोहार की

जम्बू भालू के पिता सर्कस में काम करते थे। जब वह सर्कस से सेवानिवृत्त हुए तो उन्हें एक मोटर साइकिल इनाम में मिली। मोटर साइकिल देख जम्बू बहुत खुश हुआ। दो-चार दिन में ही उसने मोटर साइकिल चलानी सीख ली। फिर क्या था, वह सारे जंगल में मोटर साइकिल चलाने लगा। वह उसे बहुत तेज चलाता था। उसके रात-दिन मोटर साइकिल चलाने से जानवरों की नींद हराम हो गई।

एक दिन उसके गुरुजी चंचल बंदर ने उसे समझाते हुए कहा, "तुम मुझ से पढ़ते रहे हो। मेरी बात मानो तो मोटर साइकिल इतनी तेज मत चलाया करो। कभी गिर जाओगे तो चोट लग जाएगी। तुम जरूरत न होने पर भी उसका हॉर्न बजाते रहते हो, इससे सभी जानवरों को परेशानी होती है।" पर जंबू पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

उसी जंगल में पूसी बिल्ली का अस्पताल था। वह जम्बू के साथ ही पढ़ी थी। दोनों में शुरू से ही पटती नहीं थी। जम्बू गुस्सैल और लड़ाका था और पूसी सीधी और सादी थी।

एक बार जम्बू ने बिना वजह ही पूसी को पीट दिया था। तब उसने उसकी शिकायत गुरुजी चंचल बंदर से की थी। गुरुजी ने जम्बू को मुर्गा बनने की सजा दी थी। जम्बू जब मुर्गा बना था तो सभी बच्चों को बड़ा मजा आया था। लेकिन जम्बू को बहुत बुरा लगा था।

जम्बू अपनी बुरी हरकतों की वजह से पढ़ नहीं पाता था और अक्सर फेल हो जाता था, जबकि पूसी लगातार पास होती थी। अब वह डॉक्टर बन गई थी। चूंकि जम्बू पूसी से चिढ़ता था इसलिए वह पूसी के अस्पताल के सामने जाकर खूब हॉर्न बजाया करता था। इससे अस्पताल में भर्ती मरीजों को बहुत परेशानी होती थी।

एक दिन पूसी ने जम्बू से कहा, "जम्बू भैया, यहां शोर मत किया करो। मरीजों की नींद टूट जाती है, मुझे भी काम करने में दिक्कत होती है तब जम्बू रौब से बोला था, "मुझे किसी से कोई मतलब नहीं है। मेरे मन में जो आएगा, मैं वही करूंगा।" कहकर वह और भी तेज हॉर्न बजाता हुआ आगे चल दिया।

जम्बू की हरकतें बढ़ती जा रही थीं। उसकी मोटर साइकिल से कई जानवरों के हाथ-पैर टूट चुके थे। अब जम्बू की मोटर साइकिल से जंगल के जानवर बेहद डरने लगे। वे उसकी आवाज सुनते ही एक तरफ रास्ता छोड़कर भाग जाते थे। जानवरों को भागता हुआ देखकर जम्बू बेहद खुश होता था।

एक दिन वह तेजी से मोटर साइकिल चलाता हुआ जा रहा था। आगे एक मोड़ था, फिर भी उसने मोटर साइकिल की चाल धीमी नहीं की। मोटर साइकिल तेज तो थी ही इसलिए मोड़ आने पर वह मोटर साइकिल को संभाल नहीं पाया और एक तरफ एक मोटे पेड़ से जा टकराया। मोटर साइकिल के पेड़ से टकराते ही वह गेंद की तरह उछलकर दूर झाड़ियों में जा गिरा। गिरने पर वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "बचाओ ....बचाओ....हाय मैं मर गया....!"

तब आसपास के सारे जानवर दौड़े आए। उन्होंने जम्बू को झाड़ियों में से बाहर निकाला। अब तक वह बेहोश हो चुका था। उसका सारा शरीर खून से लथपथ हो गया था। उसकी एक टांग भी टूट गई थी। फिर उसको पूसी के अस्पताल में लाया गया। पूसी ने जब जम्बू को घायल देखा तो उसे बहुत दुख हुआ। उसने तुरंत जम्बू के कटे-फटे घावों पर टांके लगाए और उसकी एक टांग पर प्लास्टर चढ़ा दिया। थोडी देर बाद जम्बू को होश आया तो उसने खुद को पूसी के अस्पताल में पाया। उसने देखा कि उसके घायल हो जाने से जंगल के जानवर बेहद दुखी हैं। यह सब देखकर जम्बू को बड़ा पश्चाताप हआ।

धीरे-धीरे जम्बू ठीक हो गया। ठीक हो जाने पर उसने पूसी से माफी मांगते हुए कहा, "मुझे माफ कर दो बहन, मैंने तुम्हें बहुत परेशान किया। फिर भी तुमने मेरी जान बचाई है।"

फिर वह चंचल गुरुजी के घर गया और उनसे आदरपूर्वक बोला, "गुरुजी, मुझे माफ कर दीजिए। मैंने आपकी बात नहीं मानी तभी मेरा यह हाल हुआ है।"

इसी तरह जंगल के सब जानवरों से जम्बू ने माफी मांगी और भविष्य में ऐसा न करने की प्रतीज्ञा की। यह हुई न- सौ सोनार की, एक लोहार की !

अब बस

ACKNOWLEDGEMENTS

स्वीकृतियां

सर्वप्रथम मैं अपने सभी अति निपूर्ण और ज्ञान से परिपूर्ण गुरुजनों को अपना शाष्टांग सादर सप्रेम प्रणाम करता हूँ जिनके आशीष, परिश्रम, ज्ञानदान, लगन, अगाध प्रेम और आशीर्वाद से मेरे सम्पूर्ण जीवन में खुशियों, सफलताएंऔर सुख की वर्षात होती रही है।
इस के बाद मैं अपने इष्ट मित्रों और सखे सहेलियों को धन्यवाद देता हूँ जिनके मेल मिलाप और भक्तिमान रिश्तों से मेरे जीवन में अमन चैन आती रही और मुझे एक सच्चे दोस्ती का एहसास दिलाती रही।
फिर मैं अपने उन सब पूज्य पूर्वजों का शुक्रिया अदा करता हूँ जिनके सौजन्य से मेरा सारा जीवन एक स्वर्ग बन गया हैऔर मैं धन्य हो गया हूँ।
मेरे अपने बच्चे तथा परिवार की असीम कृपा सदा हम पर रही है और इस लिए मैं अपने जीवन में सभी उचित कार्यों को करता रहा और अपने कलम के ताकत से अपने पाठकों तकअपने निजी विचारों को पहुंचते रहा। मैं उन सब का आभारी हूँ।
अंत में परम पिता परमेश्वर को मेरा कोटि कोटि प्रणाम है और इस जीवन दान के लिए धन्यवाद है। उन के ही कृपा से मैं अपने सत्यम, शिवम्, सुंदरम का लक्ष्य पूरा कर सका हूँ।

जीवन में "तकलीफ़"
उसी को आती है.
जो हमेशा "ज़िम्मेदारी"
उठाने को तैयार रहते है.
और ज़िम्मेदारी लेने वाले
कभी हारते नहीं.
या तो "जीतते" है. या फिर
"सीखते" है।

तकदीर ने चाहा जैसे ढल गये हम,
बहुत संभल के चले फिर भी
फिसल गये हम..
किसी ने विश्वास तोडा और
किसी ने दिल,
और लोगो को लगता है के
बदल गये हम.

कल न हम होंगे न कोई
गिला होगा,
सिर्फ सिमटी हुई यादों
का सिलसिला होगा,
जो लम्हे है,चलो हंस कर
बिता लें,
जाने कल ज़िन्दगी का
क्या फैसला होगा.

अजीब ढंग हैं जीने का
लोग साबुन से चेहरे
धोकर साफ़ रखते हैं,
और सारा मैल दिल
में जमा करते रहते हैं...

मुहावरे

Idioms & Phrases

प्रसिद्ध हिंदी कहावतें, लोकोक्तियां एवं मुहावरे ~